Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

d by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang

हींद समाचार जगत

१९६७

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hari

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

075083

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078083

STOCK VERIFICATION
Central
Library
2024-25 G.K.D.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

1-2-68

वर्ष 2 अंक

RT-0391

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 दिसम्बर 1967 अंक 4

0 भाषा-संगम (आदिम बोलियों के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा)

0 हिंदी

* भारत सरकार में * राजधानी में

* प्रादेशिक अंचल में * विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

भाषायी कट्टरता और दुराग्रह देश की एकता के हित में नहीं है। लोगों को यह बात समझनी चाहिए कि भाषाओं का काम लोगों को जोड़ना है, तोड़ना नहीं।

— राष्ट्रपति डा0 जाकिर हुसैन (पृ09)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिम बोलियों के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग

गत अक्तूबर में शिक्षा मंत्रालय की ओर से नई दिल्ली में देवनागरी लिपि पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया था जिस में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लिए अतिरिक्त लिपि के रूप में देवनागरी के उपयोग की सिफारिश की गई थी। इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए निदेशालय ने शिक्षा मंत्रालय के अनुमोदन से परिवर्धित देवनागरी को कुछ आदिम बोलियों के लिए अपनाने का काम अपने हाथ में लिया है। इस प्रयोजन के लिए फिलहाल, गोंडी, भीली, संताली, हो और कुड़ुख (उरांव) इन पांच बोलियों को चुना गया है।

संताली, हो और कुड़ुख (उरांव) बोलियों को बोलने वाले लोग प्रमुखत: संताल परगना और छोटा नागपुर क्षेत्र में रहते हैं। गोंडी और भीली बोलियां क्रमश: मध्य प्रदेश और राजस्थान के पहाड़ी भागों में बोली जाती है। इन बोलियों में जो साहित्य उपलब्ध है उस में धार्मिक साहित्य और लोक साहित्य प्रमुख है। पिछले कुछ वर्षों में राष्ट्रीय नेताओं की जीवनियां, गीत, कहानियां और नाटक आदि कुछ सर्जनात्मक साहित्य भी प्रकाशित हुआ है।

इस समय इन बोलियों के लिए क्षेत्रीय लिपियों - बंगला, उड़िया आदि - और रोमन तथा देवनागरी का प्रयोग हो रहा है। कुछ प्रकाशनों में इन बोलियों की विशिष्ट ध्वनियों को व्यक्त करने के लिए विशेष संकेत-चिह्नों का प्रयोग भी किया जाता है।

निदेशालय ने इन बोलियों की विशिष्ट ध्वनियों के अध्ययन की एक व्यापक योजना बनाई है। संबंधित राज्य सरकारों के परामर्श से एक विशेषज्ञ समिति शीघ्र ही नियुक्त की जायगी जो इन बोलियों की विशिष्ट ध्वनियों के लिए देवनागरी में अतिरिक्त संकेत-चिह्न सुझावेगी और परिवर्धित देवनागरी में इन बोलियों के साहित्य को प्रकाशित करने के सम्बन्ध में सुझाव देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

प्रचारक और अध्यापन-प्रशिक्षण

(गतांक से आगे)

अनुभवी प्रचारक तैयार करने के लिए समिति ने सन् 1938 में राष्ट्रभाषा अध्यापन मंदिर की स्थापना की । सन् 1943 में अध्यापन मंदिर के बंद हो जाने के बाद सन् 1953 में केन्द्रीय राष्ट्रभाषा महाविद्यालय की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई । इस समय समिति को 9000 से अधिक हिंदी प्रचारकों का सहयोग मिल रहा है ।

समिति के प्रकाशन :

विभिन्न परीक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध करने के उद्देश्य से समिति ने पुस्तक प्रकाशन का कार्य आरंभ किया । अब तक समिति की 65 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और उनकी लगभग 75 लाख प्रतियां छप चुकी हैं ।

पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त उच्च कोटि की साहित्यिक कृतियां तैयार करने और उन्हें प्रकाशित करने का काम भी समिति ने हाथ में लिया है । इस योजना के अंतर्गत राष्ट्रभाषा कोश, फ्रेंच स्वयं-शिक्षक, भारतीय वाङ्मय (तीन भाग), मराठी का वर्णनात्मक व्याकरण, सोरठ तेरा बहता पानी (गुजराती उपन्यास), धरती की ओर (कन्नड़ उपन्यास) लोकमान्य तिलक और मिर्जा गालिब (जीवनियां) तथा धूपरेखा (तेलुगु की उत्कृष्ट कहानियां) आदि ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं ।

देवनागरी लिपि के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाएं सीखने और सिखाने के उद्देश्य से समिति ने "भारत भारती" नामक पुस्तकमाला प्रकाशित की है । तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, असमिया, बंगला, उड़िया, पंजाबी, मणिपुरी आदि भाषाओं की पुस्तकें तैयार हो चुकी हैं ।

समिति की रजत जयंती के अवसर पर 825 पृष्ठों का रजत जयंती ग्रंथ प्रकाशित किया गया है । राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार और विकास से संबंधित यह उपयोगी ग्रंथ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति की एक अन्य लोकप्रिय पुस्तकमाला कवि श्रीमाला है जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के दो-दो कवियों पर एक-एक स्वतंत्र ग्रंथ प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक माला में अब तक 25 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

पत्रिकाएं : "राष्ट्रभाषा" और "राष्ट्रभारती" नामक दो पत्रिकाएं समिति से प्रति मास प्रकाशित होती हैं। "राष्ट्रभाषा" में समिति की दैनंदिन गतिविधियों तथा प्रचार केन्द्रों एवं परीक्षाओं से संबंधित सामग्री प्रकाशित होती है। "राष्ट्र-भारती" साहित्यिक पत्रिका है।

पुस्तकालय : समिति का अपना एक विशाल पुस्तकालय है जिस में विविध विषयों के लगभग 12 हजार हिंदी ग्रंथ हैं। इसमें एक सौ से अधिक दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाएं आती हैं।

सम्मेलन, शिविर तथा हिंदी प्रचार-प्रसार के अन्य कार्यक्रम :

समिति अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन का आयोजन प्रति वर्ष करती है। इसमें समस्त भारत के कार्यकर्ता, प्रचारक और केन्द्र व्यवस्थापक भाग लेते हैं। इस अवसर पर किसी अहिंदी भाषी विद्वान को हिंदी साहित्य में उसके महत्वपूर्ण योगदान के लिए 1501-00 रुपए का 'महात्मा गांधी पुरस्कार' दिया जाता है। अब तक यह पुरस्कार आचार्य क्षितिमोहन सेन, महर्षि श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्व0 बाबूराव विष्णु पराड़कर, आचार्य विनोबा भावे, प्रज्ञाचक्षु पं0 सुखलाल संघवी, पं0 संतराम बी0 ए0, श्री काका कालेलकर, श्री अनंत गोपाल शेवड़े और स्व0 रांगेयराघव को दिया जा चुका है। इसके अतिरिक्त समिति की ओर से समय-समय पर प्रचारकों के शिविर, भाषण और निबंध-लेखन प्रति-योगिताएं, साहित्यकारों की जयंतियां आदि भी आयोजित की जाती हैं।

समिति का मुख्य कार्यालय हिंदी नगर, वर्धा में है। "एक हृदय हो भारत जननी" के मूलमंत्र को लेकर समिति के कार्यकर्ताओं तथा सहयोगी प्रचारकों ने हिंदी की स्मरणीय सेवा की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० हिंदी

* भारत सरकार में

विच मंत्रालय में हिंदी का कार्य :

वित्त मंत्रालय में हिंदी का काम सुव्यवस्थित ढंग से 1954 में शुरू हुआ। तत्कालीन वित्त मंत्री डा० सी० डी० देशमुख द्वारा संसद में दिए गए आश्वासन के अनुसार 1955 में पहली बार बजट-पत्रों का हिंदी संस्करण संसद में प्रस्तुत किया गया। तब से वित्त मंत्रालय में हिंदी का काम बराबर बढ़ता जा रहा है।

संसद के बजट-अधिवेशन में केंद्रीय सरकार के वार्षिक बजट के साथ निम्नलिखित साहित्य प्रचारित किया जाता है :-

1- वित्त मंत्री का भाषण (दो भागों में)

2- केन्द्रीय सरकार का बजट

3- बजट पर व्याख्यात्मक टिप्पणी

4- अनुदानों की मांगें (24 खंड)

5- आर्थिक समीक्षा

6- वार्षिक रिपोर्ट

7- आर्थिक वर्गीकरण

8- लेखा अनुदान

लगभग 2500 पृष्ठों की उपर्युक्त सामग्री के अतिरिक्त संसद के अन्य सत्रों में मंत्रालय की ओर से जो भी पुस्तिकाएं, ज्ञापन, रिपोर्टें आदि संसद में पेश की जाती हैं उनके हिंदी संस्करण भी साथ ही दिए जाते हैं। इस साहित्य में अनुदानों की अनुपूरक मांगे (तीन खंड), अतिरिक्त अनुदानों की मांगें, विदेशी सहायता, भारत-अमरीका तकनीकी सहयोग कार्यक्रम आदि उल्लेखनीय हैं। राष्ट्रपति-शासित प्रदेशों के बजट-पत्रों के हिंदी संस्करण तैयार करने का दायित्व भी वित्त मंत्रालय पर है। पिछले वर्ष इस अतिरिक्त साहित्य के लगभग 850 पृष्ठों का हिंदी अनुवाद किया गया।

उपर्युक्त कार्य के अतिरिक्त मंत्रालय का हिंदी अनुभाग संसदीय प्रश्नों के उत्तरों का हिंदी अनुवाद तथा हिंदी में प्राप्त पत्रों आदि के हिंदी उत्तर भी तैयार करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेल मंत्रालय : हिंदी निबंध और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

अहिंदी भाषी रेल कर्मचारियों की निबंध और भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन पहली बार अखिल भारतीय स्तर पर किया गया । निबंध प्रतियोगिता में 29 और भाषण प्रतियोगिता में 24 कर्मचारियों ने भाग लिया । गत 6 नवंबर को रेल भवन में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में भारत सरकार के हिंदी सलाहकार श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ने प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले कर्मचारियों को क्रमश: 200, 150 और 100 रु० के पुरस्कार दिए ।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय :

हिंदी प्रकाशनों की बिक्री

समाजवादी लोकसभा-सदस्य श्री एस० एम० जोशी के प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया गया है कि प्रकाशन प्रभाग और आकाशवाणी से अंग्रेजी और हिन्दी में जो पत्रिकाएं निकलती हैं उनमें हिंदी पत्रिकाओं की बिक्री अधिक होती है किन्तु प्रकाशन-व्यय अंग्रेजी पत्रिकाओं पर अधिक होता है ।

हिंदी निबंध तथा हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिताएं

केन्द्रीय हिंदी संस्थान आगरा की ओर से गत तीन वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है । निबंध प्राप्ति की अंतिम तारीख 15-1-68 है । विशेष विवरण निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से प्राप्त किया जा सकता है ।

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की ओर से नवंबर मास से हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का प्रारंभ हुआ है । यह दो मास तक चलेगी । विशेष जानकारी परिषद् के महामंत्री से प्राप्त की जा सकती है । पता: एक्स-वाइ-68, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-3 ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

भाषायी कट्टरता और दुराग्रह देश की एकता के लिए घातक

राजधानी में 3 नवंबर को मनाए गए कन्नड़ राज्य दिवस समारोह का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने कहा कि भाषायी कट्टरता और दुराग्रह देश की एकता के हित में नहीं हैं । लोगों को यह बात समझनी चाहिए कि भाषाओं का काम लोगों को जोड़ना है, तोड़ना नहीं । इसी अवसर पर मैसूर के मुख्य मंत्री श्री निजलिंगप्पा ने कहा कि भाषायी राज्य यदि देश की एकता के लिए घातक सिद्ध हों तो उन्हें समाप्त कर देना चाहिए ।

हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी

हिंदी बुक सेंटर की ओर से दरियागंज में 1966-67 की प्रतिनिधि हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी का उद्घाटन दिनांक 28 नवंबर को हुआ । इसमें विभिन्न साहित्यिक विधाओं और वैज्ञानिक तथा तकनीकी विषयों की 16 सौ पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं ।

राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने इस आयोजन की सराहना करते हुए अपने सन्देश में लिखा है कि ऐसे आयोजनों से राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को बल मिलेगा । प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, सूचना तथा प्रसारण मंत्री श्री के० के० शाह और केन्द्रीय राज्यमंत्री प्रो० शेर सिंह, उपराज्यपाल श्री आदित्य नाथ झा और मुख्य कार्यकारी पार्षद प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा ने भी इस प्रदर्शनी के आयोजन का स्वागत किया है और इसे हिंदी के विकास और अभिवृद्धि में सहायक बताया है ।

"आज के हिंदी प्रकाशन" विषय पर दिनकर जी की अध्यक्षता में एक गोष्ठी का आयोजन भी इस अवसर पर किया गया । इसमें पुस्तक प्रकाशन के संबंध में विचार-विमर्श हुआ । प्रमुख वक्ता थे : डा० विजयेन्द्र स्नातक, डा० हरिवंशराय बच्चन और श्री कुलभूषण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं से ही संपर्क संभव

लायन्स क्लब की एक सभा में भाषण करते हुए राज्य शिक्षा मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं के जरिये ही छोटे बच्चे भारत के गौरवमय अतीत को जान सकते हैं तथा अपनी समृद्ध परम्पराओं पर गर्व कर सकते हैं। इन भाषाओं से देश के पढ़े-लिखे लोगों तथा आम लोगों में संपर्क संभव होगा। अंग्रेजी भाषा से केवल देश के पढ़े-लिखे लोग ही आपस में संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

डा० विश्वनाथ प्रसाद के निधन पर शोकसभा

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के भूतपूर्व निदेशक और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के कार्यकारी अध्यक्ष डा० विश्वनाथ प्रसाद के निधन पर प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से 11 नवंबर को एक शोक सभा निदेशालय के वर्तमान निदेशक प्रो० ए० चंद्रहासन की अध्यक्षता में हुई। डा० रामधन शर्मा, प्रो० चंद्रहासन और डा० विजयेन्द्र स्नातक ने डा० प्रसाद की हिंदी सेवाओं का स्मरण करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

वृहत् बाल पुस्तकालय की स्थापना

नेहरू हाउस में चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट के तत्वावधान में डा० बी०सी० राय पुस्तकालय तथा वाचनालय की स्थापना की गई है। राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए लेखकों से अपील की कि वे बाल-साहित्य की रचना में लग जायें। पुस्तकालय में देश-विदेश की विभिन्न भाषाओं के साहित्य की लगभग 14 हज़ार पुस्तकें हैं।

महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस समारोह का आयोजन

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, शक्तिनगर मंडल की ओर से महर्षि दयानंद के निर्वाण दिवस पर एक सभा का आयोजन किया गया। अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए श्री प्रकाशवीर शास्त्री ने कहा कि हिंदी को अखिल भारत की भाषा बनाने में स्वामी दयानंद का योगदान सबसे अधिक रहा है। इस अवसर पर डा० विजयेन्द्र स्नातक, डा० विमल कुमार जैन तथा राजधानी के अन्य विद्वानों ने महर्षि दयानंद की हिंदी सेवा की सराहना की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

जम्मू और काश्मीर में हिंदी की प्रगति

अत्यंत प्राचीन काल से काश्मीर भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का प्रमुख केंद्र रहा है । साहित्य कला और दर्शन के क्षेत्र में काश्मीर की भूमि ने समस्त भारत को प्रभावित किया है । संभवतः इसी प्राचीन संबंध के कारण काश्मीर वासियों में राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति विशेष प्रेम और उत्साह है ।

राज्य की वर्तमान शिक्षा नीति के अनुसार इस समय पहली से आठवीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम एक ही भाषा अर्थात् सरल उर्दू है । पुस्तकें फारसी तथा देवनागरी दोनों लिपियों में छपती हैं । इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र आदि विषयों को विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार हिंदी अथवा उर्दू की पुस्तकों से पढ़ सकते हैं । हाई स्कूल में विज्ञान के छात्रों के लिए कोई भाषा अनिवार्य नहीं है किंतु कला-विषयों के छात्रों के लिए उर्दू, हिंदी अथवा पंजाबी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़नी पड़ती है ।

हाल ही में शिक्षा नीति में कुछ परिवर्तन हुआ है । इसके अनुसार अगले वर्ष से काश्मीरी, डोगरी अथवा बौधी भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा दी जाने लगेगी ।

इस समय राज्य में लगभग 450 हाई स्कूल हैं । हिंदी अध्यापकों की कमी होने पर भी इस समय कुल 38 प्रतिशत छात्र हिंदी पढ़ रहे हैं । हाई स्कूल की कक्षाओं में हिंदी के लिए प्रति सप्ताह तीस-तीस मिनट के 12 पीरियड रखे गए हैं । हिंदी पढ़ने के लिए विद्यार्थियों में बड़ा उत्साह है । 1965-67 में मैट्रिक और उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों में से 16681 विद्यार्थियों ने हिंदी विषय लिया था ।

कालेज स्तर पर हिंदी वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है । बी०ए० पाठ्यक्रम में हिंदी लेने वाले विद्यार्थियों के लिए पहले भाग में एक और दूसरे भाग में दो प्रश्न पत्र होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जम्मू और काश्मीर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में हिंदी के उच्च अध्ययन की व्यवस्था है। एम० ए० (हिंदी) के छात्रों की संख्या इस वर्ष 105 है। इस विभाग के संबंध में संक्षिप्त जानकारी 'समाचार जगत' के अक्तूबर 1966 के अंक में दी जा चुकी है।

जम्मू और काश्मीर में हिंदी का प्रचार करने में प्राच्य भाषा संस्थानों का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इन संस्थानों में श्रीनगर स्थित महिला विद्यालय, हिंदू कन्या महाविद्यालय, विश्व भारती कन्या महाविद्यालय, रूपादेवी शारदा विद्यापीठ तथा जम्मू स्थित श्री रघुनाथ महाविद्यालय, सनातन धर्म कन्या महाविद्यालय और आर्य कन्या विद्यालय के नाम उल्लेखनीय हैं। इन संस्थानों में रत्न, भूषण और प्रभाकर की परीक्षाओं के लिए अध्यापन की व्यवस्था है। कुछ संस्थान राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की परीक्षाओं के लिए परीक्षार्थी तैयार करते हैं। इन संस्थानों के कारण महिलाओं में हिंदी विशेष रूप से लोकप्रिय हुई है।

राज्य में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाली स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं में जम्मू व काश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति प्रमुख है। यह समिति राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा से संबद्ध है। इसकी स्थापना 1956 में हुई थी। इसकी देख-रेख में राज्य के 54 केंद्रों में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की विभिन्न परीक्षाओं के लिए पठन-पाठन की व्यवस्था है। 1956 से 1966 तक लगभग 11695 छात्र विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित हो चुके हैं। इनमें 3021 मुस्लिम और 23 तिब्बती छात्र हैं। समिति ने पाठ्य-पुस्तकों तथा मुस्लिम छात्रों की विशेष छात्रवृत्तियों पर लगभग 25,000 रुपए खर्च किए हैं। श्रीनगर में एक पुस्तकालय की स्थापना भी की है जिसमें 8,000 पुस्तकें हैं। दो छोटे पुस्तकालय भी स्थापित किए हैं।

इन सरकारी और गैर-सरकारी प्रयत्नों के फलस्वरूप जम्मू और काश्मीर राज्य में हिंदी के प्रचार और प्रसार की दिशा में प्रगति हो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध समाचार

गुजरात : राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से आयोजित एक सभा में मैसूर विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डा० नागप्पा ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को विश्वविद्यालयीन शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने के साथ-साथ हमें हिंदी को अखिल भारतीय सम्पर्क भाषा के रूप में भी अपनाना होगा। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक राज्य में हिंदी माध्यम का एक महाविद्यालय होना चाहिए और कहा कि दक्षिण में दस प्रतिशत लोग हिंदी जानते हैं, प्रतिवर्ष हजारों हिंदी की परीक्षाओं में बैठते हैं और वहां की सामान्य जनता हिंदी के विरुद्ध नहीं है।

केरल : केंद्रीय हिंदी निदेशालय के क्षेत्रीय अधिकारी डा० के० भास्करन नायर केरल हिंदी प्रचार सभा के नए अध्यक्ष चुने गए हैं।

उत्तर प्रदेश

काशी विद्यापीठ के प्राधिकारियों ने विद्यार्थियों की मांग पर भलीभांति विचार करने के बाद यह मान लिया है कि अंग्रेजी को वैकल्पिक विषय बना दिया जाए।

- हिंदी साहित्य सम्मेलन का विशेष अधिवेशन आगामी 16 और 17 दिसंबर को लखनऊ में हो रहा है। आशा है कि इस अधिवेशन में हिंदी के अनेक मूर्धन्य साहित्यकार भाग लेंगे।

- आगरा से निकलने वाली "साहित्य परिचय" नामक मासिक पत्रिका आगामी जनवरी मास में भाषा समस्या विशेषांक प्रकाशित कर रही है।

- गाजियाबाद में आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मेलन में भाषण करते हुए जगद्गुरु शंकराचार्य ने कहा कि देश की राष्ट्रभाषा केवल हिंदी ही हो सकती है और उसका विरोध देश-द्रोह के बराबर है।

- संयुक्त समाजवादी दल के वार्षिक अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास करके जोरदार मांग की गई है कि हिंदी को सरकारी काम-काज, न्यायालयों और विश्वविद्यालयों की भाषा अविलंब बना दिया जाए। सरकारी सेवाओं के लिए सभी परीक्षाओं का माध्यम भी हिंदी रखा जाए।

गुरुकुल पुस्तकालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

- उदयपुर के महाराणा भूपाल कालेज के संस्कृत विभाग के तत्वावधान में, नवंबर के दूसरे सप्ताह में, एक अखिल भारतीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । आयोजन का उद्घाटन शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री गिरिजाप्रसाद पांडेय ने किया और इसकी अध्यक्षता राजस्थान के शिक्षा मंत्री श्री शिवचरण माथुर ने की । दो दिन के इस कार्यक्रम में अन्त्याक्षरी, भाषण-प्रतियोगिता, कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

- 'बिड़ला इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नोलाजी एण्ड साइन्स' द्वारा आयोजित एक परिचर्चा गोष्ठी में इस बात पर जोर दिया गया कि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी का स्थान हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को दे दिया जाना चाहिए । इन्स्टीट्यूट के निदेशक श्री लक्ष्मी नारायण ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी संपर्क भाषा बन कर ही रहेगी ।

- भरतपुर स्थित महारानी श्री जया कालेज के छात्रसंघ का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय राज्य शिक्षा मंत्री प्रो० शेर सिंह ने कहा कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होनी चाहिए । प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी भी सीखनी चाहिए । यदि उसकी मातृभाषा हिंदी हो तो उसे देश की कोई अन्य भाषा सीखनी चाहिए । इसके अतिरिक्त हमें एक विदेशी भाषा का ज्ञान भी होना चाहिए ताकि विदेशी साहित्य के अध्ययन, से हमारे ज्ञान में वृद्धि होती रहे ।

हिमाचलप्रदेश : 'इंडियन इन्स्टीट्यूट आफ एडवांस्ड स्टडीज़' द्वारा 'भाषा और समाज' विषय पर एक दस दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी में यह सिफारिश की गई कि प्रादेशिक भाषाओं को ही सामान्य रूप से शिक्षा और प्रशासन का माध्यम बनाना चाहिए । विभिन्न भाषाओं के असमान विकास को देखते हुए विश्वविद्यालयों को चाहिए कि प्रादेशिक भाषाओं को माध्यम बनाने के लिए सुनियोजित कार्यक्रम बना कर जुट जाएं । संगोष्ठी में यह भी अनुभव किया गया कि राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से आदिवासी बोलियों के अध्ययन को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

बड़ौदा विश्वविद्यालय का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग - एक परिचय

सन् 1950 में बड़ौदा कालेज ने महाराज सयाजी राव विश्वविद्यालय का रूप लिया और उसी वर्ष वहां हिंदी का अध्यापन बी0 ए0 में वैकल्पिक विषय तथा एम0 ए0 में मुख्य विषय के रूप में प्रारंभ हुआ। सन् 1960 से हिंदी में एम0 ए0 करने वाले छात्रों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। अब तक 37 छात्र हिंदी में एम0 ए0 कर चुके हैं। इनमें 24 छात्र अहिंदी भाषी हैं और शेष हिंदी भाषी। इस वर्ष 28 छात्र हिंदी एम0 ए0 के लिए अध्ययन कर रहे हैं।

इस समय स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में विभागाध्यक्ष डा0 विपिन बिहारी त्रिवेदी के अतिरिक्त 5 प्राध्यापक और तीन सहायक प्राध्यापक काम कर रहे हैं।

हिंदी विभाग के अंतर्गत सन् 1961 से ही स्नातकोत्तर शोध-कार्य होता रहा है। अब तक निम्नलिखित विषयों पर पी-एच0 डी0 की उपाधि दी जा चुकी है :-

1- भगवन्तराय खीची और उनके मंडल के कवि-डा0 महेन्द्र प्रताप सिंह
2- गुजरात की हिंदी काव्य परंपरा तथा आचार्य कवि गोविंद गिल्लाभाई - डा0 मणिक लाल चतुर्वेदी
3- हिंदी का स्तोत्र साहित्य - डा0 हनुमान दास चकोर
4- हिंदी साहित्य को गुजरात के संत कवियों की देन - डा0 रामकुमार गुप्त
5- सूरदास और नरसी मेहता का तुलनात्मक अध्ययन - डा0 भंवर लाल जोशी
6- मैथिली नाटक (उद्भव और विकास) - डा0 प्रताप नारायण झा
7- महाकवि निराला : दर्शन और कला - डा0 बसंत भास्कर जोशी

निम्नलिखित विषयों पर इस समय शोधकार्य हो रहा है :-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1- महाराम्ण सिंह के "प्रवीण सागर" का आलोचनात्मक अध्ययन ।
2- चैतन्य संप्रदाय की हिंदी कविता ।
3- संत कवि अखा : जीवनी और हिंदी कृतियों का आलोचनात्मक अध्ययन
4- महाकवि निराला : जीवनी और काव्य ।
5- महाकवि निराला के गद्य साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन ।
6- हिंदी साहित्य को कच्छ राज्य की देन ।
7- महाराज लखपत सिंह - व्यक्तित्व और साहित्यिक कृतित्व ।
8- स्वामी दयानंद सरस्वती की हिंदी सेवा ।
9- भक्तमाल और हिंदी काव्य में उसकी परंपरा ।
10- मैथिली शरण गुप्त के नारी पात्र ।
11- वल्लभ संप्रदाय की सेवा भावना और सूर का काव्य ।
12- हिंदी के मानसेतर प्रबंध काव्यों (वि0 1500 से वि0 1800 तक) की भूमिका में "रघुवंश दीपक" का आलोचनात्मक अध्ययन) ।
13- केशव के काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन ।
14- गुजरात के हिंदी रीति शास्त्रों का आलोचनात्मक अध्ययन ।
15- भगवतीचरण वर्मा और उनका कथा साहित्य ।
16- वृंदावनलाल वर्मा और श्री के0 एम0 मुंशी के उपन्यास साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन ।
17- गुजरात की हिंदी वैष्णव काव्य परंपरा तथा महाकवि दयाराम ।
18- हिंदी एवं गुजराती के भ्रमर गीत काव्य का तुलनात्मक अध्ययन ।
19- प्रसाद और न्हाना लाल की काव्य कला का तुलनात्मक अध्ययन ।
20-

विभाग की "हिंदी भाषा एवं साहित्य परिषद" के तत्वावधान में प्रति वर्ष तुलसी, भारतेन्दु, प्रेमचंद, प्रसाद, निराला आदि प्रसिद्ध साहित्यकारों की जयंतियाँ मनाई जाती हैं । समय-समय पर विचार-गोष्ठियाँ, भाषण-मालाएं, वाद-विवाद तथा निबंध-लेखन प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

o नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृ० सं०	मूल्य
चिन्मय प्रकाशन, जयपुर :				
इंदिरा गांधी-व्यक्तित्व और विचार	सं० प्रो० कृष्ण बिहारी सहल	जीवनी	195	15-00
लालबहादुर शास्त्री - व्यक्तित्व और विचार	,,	,,	592	30-00
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-7				
काव्य बिम्ब	डा० नगेन्द्र	आलोचना	75	4-00
चेतना के बिंब	,, ,,	स्मृति चित्र	110	5-00
उपन्यासकार भगवती प्रसाद वाजपेयी - शिल्प और चिन्तन	डा० ललित शुक्ल	,, ,,	165	6-00
बूंद नेह की दीप हृदय का	महेन्द्र भटनागर	कविता संग्रह	103	5-00
नरेन्द्र शर्मा और उनका काव्य	लक्ष्मीनारायण शर्मा	आलोचना	143	6-00
वेद कथा	रघुनाथ सिंह	वैदिक कथाएं	264	18-00
योग निद्रा	डा० कृष्ण नंदन पीयूष	कविता	59	3-00
सिन्धु सीमान्त	कन्हैयालाल ओझा	उपन्यास	445	10-00
भारतीय सौंदर्य शास्त्र की भूमिका	फतह सिंह	सौंदर्य शास्त्र	127	7-50
नदी यशस्वी है	नरेश मेहता	उपन्यास	251	9-00
राजपाल एंड सन्ज़, दिल्ली:				
वयं रक्षामः	आ० चतुरसेन	उपन्यास	541	10-00
करुणा की कहानियां	डा० राजबहादुर सिंह	कथा संग्रह	108	1-00
शिशु पालन	डा० सुखवीर सिंह	शिशु पालन	151	3-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ सवाल एक जवाब	प्रभाकर माचवे	गाँधी-विचार	125	1-00
भारत एक है	सीताचरण दीक्षित	,,	133	1-00
प्रसिद्ध आविष्कारों की कहानी	सुखदेव प्रसाद बरनवाल	ज्ञान विज्ञान	142	2-50
पराया	डा० रांगेय राघव	उपन्यास	160	3-50
वापसी	मुल्कराज आनंद	,,	423	8-00
सरगम	कृश्न चन्दर	संस्मरण	95	2-50
एक लड़की एक शाप	अमृता प्रीतम	कहानियाँ	126	4-00
मधुर स्वप्न	राहुल सांस्कृत्यायन	उपन्यास	255	6-00
ललक	कुलभूषण	कहानी संग्रह	150	4-00
एक औरत का चेहरा	हेनरी जेम्स	उपन्यास	698	6-00
पड़ोसी	गुरुदत्त	उपन्यास	212	4-50

हिंदी पाकेट बुक्स, शाहदरा, दिल्ली:

दिल्ली की गलियाँ	अमृता प्रीतम	उपन्यास	111	1-00
खोया हुआ आदमी	कमलेश्वर	,,	108	1-00
भारत ज्ञान कोश	अवनीन्द्र कुमार	संदर्भ ग्रंथ	276	2-00
भाग्य की रेखाएँ	प्रकाश दीक्षित	हस्तरेखा	178	1-00
मयखाना	ओंप्रकाश पंडित	उर्दू शायरी	133	2-00
अंधेरे में उजाला	हेलेन एलमिरावेट	उपन्यास	109	1-00
रेत का महल	कृश्न चन्दर	,,	197	2-00
पथेर पांचाली	विभूति भूषण वंद्योपाध्याय	,,	203	2-00
हत्या का रहस्य	कर्नल रंजीत	,,	108	1-00
गुजराती की श्रेष्ठ कहानियाँ	गो० दा० नागर	कहानियाँ	98	1-00
बालकृष्ण शर्मा नवीन	भवानी प्रसाद मिश्र	काव्य संकलन	126	3-00

एम० एल० बुक डिपो, उसरा (पं० बंगाल) :

अलंकार पद्य में	तेजनारायण कुशवाहा		58	1-50
ओमा	,, ,,	,, काव्य	28	0-80

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
078083
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास लें० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – लें० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अंक 5

गुरुकुल कांगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 जनवरी 1968 अंक 5

0 भाषा संगम (ज्ञानपीठ पुरस्कार)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (केरल हिंदी प्रचार सभा तिरुवनंतपुरम्)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालय में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

अहिन्दी भाषी नव-हिन्दी लेखक शिविर

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय जनवरी, 1968 में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के नवीन हिन्दी लेखकों के लिए एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहा है। शिविर में हिंदी भाषा की विभिन्न विधाओं के लेखन में प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था होगी। तिथियों आदि की सूचना चुने गए प्रशिक्षणार्थियों को बाद में दी जाएगी। आवेदन-पत्र के लिए सहायक निदेशक (विस्तार), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 को लिखें।

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15।16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0भाषा संगम

तारा बाबू को भारतीय ज्ञानपीठ का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार

बंगाल के प्रख्यात लेखक श्री ताराशंकर बंद्योपाध्याय को 15 दिसंबर को एक लाख रुपए का भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया।

नई दिल्ली स्थित मावलंकर हाल में आयोजित एक समारोह में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल डा0 बी0 गोपाल रेड्डी ने उन्हें वाग्देवी की मूर्ति, ताम्रपत्र और एक लाख रुपए का चैक समर्पित किया। इसी अनुक्रम में 16 और 17 दिसंबर को अध्ययन गोष्ठियों का आयोजन भी किया गया। इन में देश के प्रतिष्ठित साहित्यकारों और विद्वानों ने भाग लिया।

1966 का यह पुरस्कार ताराबाबू के "गणदेवता" नामक उपन्यास पर दिया गया है जो बंगला में "चंडी मण्डप" और "पंचग्राम" शीर्षकों के अंतर्गत अलग-अलग खंडों में प्रकाशित हुआ था। अब इसे हिंदी में भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा गणदेवता शीर्षक से एक ही खंड में प्रकाशित किया गया है। ज्ञानपीठ का प्रथम पुरस्कार 1965 में मलयालम के महाकवि श्री जी0 शंकर कुरुप को उनकी काव्य कृति "ओटक्कुषल" (बांसुरी) के लिए दिया गया था।

ताराबाबू का जन्म वीरभूम जिले के लाभपुर गांव में एक छोटे ज़मींदार परिवार में 23 जुलाई 1898 को हुआ था। उनकी साहित्यिक यात्रा 1926 में "त्रिपात्र" (कविता संग्रह) के प्रकाशन से शुरु हुई। गत चालीस वर्षों में उन्होंने सभी विधाओं के लगभग 108 ग्रंथ लिखे हैं। ताराबाबू बंगाल के मूर्धन्य कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं से न केवल बंगला साहित्य को नई दिशा दी है बल्कि भारतीय साहित्य को विश्व-साहित्य में आदर का स्थान भी दिलाया है।

भारतीय ज्ञानपीठ का यह पुरस्कार समस्त भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाओं पर दिया जाता है। प्रत्येक भाषा के लिए एक परामर्श समिति बनाई गई है जिसमें तीन सदस्य होते हैं। प्रत्येक समिति निर्धारित नियमों के अनुसार प्रस्तावित ग्रंथों पर भलीभांति विचार करने के बाद उनमें से सर्वश्रेष्ठ कृति चुनती है। इस प्रकार चुनी गई कृतियों के हिंदी अनुवाद कराए जाते हैं और तदुपरांत प्रवर परिषद् उनमें से सर्वश्रेष्ठ कृति को पुरस्कार के लिए चुन लेती है।

--00--

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवनंतपुरम्

केरल हिंदी प्रचार सभा की स्थापना सन् 1934 में स्व० के० वासुदेवन् पिल्लै के प्रयत्नों से हुई। प्रारंभ में इसका नाम तिरुवितांकूर हिंदी प्रचार सभा था। केरल राज्य के संगठन के बाद इसका नाम केरल हिंदी प्रचार सभा कर दिया गया।

"जय हिंद: जय हिंदी" सभा का आदर्श वाक्य है। राष्ट्र की एकता को लक्ष्य में रखकर देवनागरी लिपि में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना, हिंदी की परीक्षाएं चलाना, हिंदी की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित करना और हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए समारोह, गोष्ठियां आदि आयोजित करना सभा के प्रमुख काम हैं।

परीक्षाएं

सभा निम्नलिखित परीक्षाओं का संचालन करती है :-

प्रारंभिक परीक्षाएं (1) हिंदी प्रथमा (2) हिंदी सूरी (3) राष्ट्रभाषा (हिंदी)

उच्च परीक्षाएं (1) हिंदी प्रवेश (2) हिंदी भूषण (3) साहित्याचार्य (दो खंडों में)

भारत सरकार ने हिंदी प्रवेश को मैट्रिक और हिंदी भूषण को इण्टर की हिंदी योग्यता के समकक्ष माना है। इसके अतिरिक्त सभा "आचार्य" परीक्षा भी चलाती है जिसका उद्देश्य हाई स्कूल के लिए योग्य हिंदी अध्यापक तैयार करना है।

शिक्षण व्यवस्था : सभा भवन में एक केन्द्रीय हिंदी विद्यालय स्थापित किया गया है जहां सभा की विभिन्न परीक्षाओं के अतिरिक्त हिंदी साहित्य सम्मेलन की "साहित्यरत्न" परीक्षा और केरल विश्वविद्यालय की "विद्वान" परीक्षा के लिए कक्षाएं चलाई जाती हैं। इसके अलावा राज्य के विभिन्न भागों में लगभग 125 भूषण विद्यालयों में हिंदी की कक्षाएं चलती हैं। लगभग 600 प्रमाणित प्रचारक हिंदी के प्रचार में लगे हुए हैं। सभा की विभिन्न परीक्षाओं में प्रतिवर्ष 10 हजार से 15 हज़ार तक छात्र सम्मिलित होते हैं। अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण महाविद्यालय में पढ़ाई की व्यवस्था है। यहां से एक साल तक प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को "आचार्य" की उपाधि दी जाती है। इस परीक्षा की पाठ्यचर्या केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा की प्रवीण पाठ्यचर्या के अनुरूप है। इसमें प्रवेश पाने के लिए विद्यार्थी को एस०एस०एल०सी० के अतिरिक्त सभा की भूषण परीक्षा अथवा उसकी समकक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए ।

पुस्तकालय : वाचनालय - सन् 1962 से सभा भवन में एक बृहत् ग्रंथालय चल रहा है जिसे केंद्रीय सरकार से अनुदान मिलता है । सभा के संस्थापक की स्मृति में इसका नाम " के0 वासुदेवन् पिल्लै स्मारक हिंदी ग्रंथालय " रखा गया है । इसमें लगभग 5 हज़ार विशिष्ट ग्रंथ हैं । ग्रंथालय से संबद्ध वाचनालय में मलयालम हिंदी और अंग्रेजी की अनेक पत्रिकाएं आती हैं ।

प्रकाशन - सभा ने लगभग 20 पुस्तकें प्रकाशित की हैं जिनमें से अधिकतर विभिन्न परीक्षाओं के लिए पाठ्य पुस्तकें हैं । सभा से प्रकाशित स्व0 के0 वासुदेवन् पिल्लै स्मृति ग्रंथ एक संदर्भ पुस्तक है । पहले सभा की ओर से "राष्ट्रवाणी " नाम की मासिक पत्रिका प्रकाशित होती थी । यह पत्रिका आर्थिक कठिनाइयों के कारण कुछ समय बाद बंद करनी पड़ी । मार्च 1966 से "केरल ज्योति " नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है जिसे विद्वानों और साहित्यकारों में आदर का स्थान प्राप्त है ।

अन्य कार्यक्रम - हिंदी को सामान्य जनता में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से सभा समय-समय पर सेमिनार, प्रदर्शनी आदि विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करती है । केंद्रीय सरकार की सहायता से सभा ने 1960 और 1964-65 में समस्त भारत के हिंदी अध्यापकों और प्रचारकों के सेमिनार आयोजित किए थे जिनमें हिंदी के प्रसिद्ध विद्वानों और साहित्यकारों ने भाग लिया था । विद्यार्थियों में हिंदी अध्ययन की रुचि बढ़ाने के उद्देश्य से हिंदी भूषण परीक्षा में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को "स्व0 के0 वासुदेवन् पिल्लै स्मारक स्वर्णपदक " प्रदान किया जाता है ।

सभा का मुख्य कार्यालय तिरुवनंतपुरम-14 में स्थित है । इस समय श्री एस0 वी0 कुंचिकल्लाणा सभा के अध्यक्ष, श्री पी0 जे0 जोसफ़ उपाध्यक्ष और श्रीमती जे0 सरोजिनी अम्मा मंत्री हैं ।

अहिंदी भाषी प्रदेश केरल में हिंदी की जो अप्रत्याशित प्रगति हुई है और हिंदी के प्रति जो प्रेम और आदर बढ़ा है उसका अधिकांश श्रेय हिंदी प्रचार सभा और उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं को ही है ।

-- 00 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में (पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिंदी शिक्षण की योजना)

"हिंदी समाचार जगत" के पिछले अंकों में पाठकों को इस योजना की कुछ जानकारी दी जा चुकी है। यहां हम इसके पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि और परीक्षा-व्यवस्था आदि की विस्तृत जानकारी प्रकाशित कर रहे हैं।

इस योजना में दो पाठ्यक्रम रहेंगे। एक सामान्य पाठ्यक्रम और दूसरा विशेष पाठ्यक्रम।

सामान्य पाठ्यक्रम : सामान्य पाठ्यक्रम में "हिंदी प्रवेश" (द्विवर्षीय पाठ्यक्रम) और "हिंदी परिचय" (द्विवर्षीय उच्च पाठ्यक्रम) होंगे। हिंदी प्रवेश की शुरुआत हिंदी भाषा के प्रारंभिक ज्ञान से होगी और इसे पूरा करने के बाद छात्र को हिंदी भाषा का सामान्य ज्ञान हो जाएगा। यह पाठ्यक्रम हिंदी भाषी क्षेत्रों के प्राथमिक स्कूलों में निर्धारित हिंदी पाठ्यक्रम के समकक्ष होगा। हिंदी परिचय पाठ्यक्रम हिंदी भाषी क्षेत्रों के हाईस्कूल स्तर के हिंदी पाठ्यक्रम के समकक्ष होगा तथापि इसमें हिंदी साहित्य के बदले हिंदी भाषा के अध्ययन पर विशेष बल दिया जाएगा। सामान्य पाठ्यक्रम में 15 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले अहिंदी भाषी भारतीय प्रवेश पा सकेंगे। केन्द्रीय सरकार के वे कर्मचारी जिनके लिए गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी पढ़ने की व्यवस्था है, और स्कूल में अनिवार्य विषय के रूप में हिंदी पढ़ने वाले छात्र इसमें भर्ती नहीं किए जाएंगे। विश्व के किसी भी देश में रहने वाले भारतीय अथवा अभारतीय इसमें प्रवेश पा सकेंगे।

विशेष पाठ्यक्रम : यह पाठ्यक्रम केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए शुरू किया जाएगा जिसके अंतर्गत गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध, प्रवीण आदि परीक्षाओं की पढ़ाई की व्यवस्था होगी। इसमें निम्नलिखित वर्गों के कर्मचारी भर्ती किए जा सकेंगे :-

(1) प्रथम श्रेणी के अधिकारी (केन्द्रीय सरकार)

(2) संक्रियात्मक नियुक्त कर्मचारी (आपरेशनल स्टाफ) (केन्द्रीय सरकार)

(3) वे कर्मचारी जिन्हें गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी सीखने की सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुल्क : पाठ्यक्रमों के लिए नाममात्र फीस ली जाएगी जिसकी दरें इस प्रकार हैं :-

	प्रवेश शुल्क	शिक्षण शुल्क (वार्षिक)	परीक्षा शुल्क
भारत में रहने वाले छात्रों के लिए	5-00 रु0	15-00 रु0	5-00 रु0
विदेशों में रहने वाले छात्रों के लिए	5-00 डालर	10-00 डालर	5-00 डालर

शिक्षण व्यवस्था : शिक्षार्थियों को हर पखवाड़े में क्रमबद्ध पाठ, अभ्यास और प्रश्नावलियां भेजी जाएंगी । शिक्षार्थी दिए गए काम को पूरा करके निदेशालय में भेजेंगे । यहां उनके काम को जांचा जाएगा और सुझाव-संशोधन आदि के साथ कापियां वापस कर दी जाएंगी ।

परीक्षा व्यवस्था

दो वर्ष के पाठ्यक्रम के अंत में देश तथा विदेशों में विभिन्न स्थानों पर परीक्षाएं होंगी । परीक्षा केन्द्रों का निर्धारण परीक्षार्थियों की संख्या को देखते हुए किया जाएगा । केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की परीक्षा की व्यवस्था गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के अधीन होगी । परीक्षा पास करने के लिए विद्यार्थी को कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने होंगे । 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले को विशेष योग्यता से उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा ।

शिक्षा का माध्यम :

आरंभ में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा । बाद में आवश्यकतानुसार आधुनिक भारतीय भाषाओं तथा कुछ विदेशी भाषाओं को भी माध्यम बनाया जाएगा ।

विशेष : इस वर्ष सामान्य पाठ्यक्रम में हिंदी प्रवेश और विशेष पाठ्यक्रम में प्रबोध परीक्षाओं के लिए शिक्षण-व्यवस्था है । अन्य परीक्षाओं के लिए कालांतर में व्यवस्था की जाएगी । अधिक जानकारी के लिए इस पते पर लिखें :- निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग), 15/16 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 ।

-- 00 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजभाषा संशोधन विधेयक संसद द्वारा पारित

कई दिनों के गंभीर विचार-विमर्श के बाद संसद ने राजभाषा संशोधन-विधेयक को उससे संबद्ध प्रस्ताव तथा कुछ संशोधनों के साथ पास कर दिया है। इस विधेयक का उद्देश्य उन आश्वासनों को कानून का रूप देना है जो भूतपूर्व प्रधान मंत्री स्व0 श्री जवाहरलाल नेहरू तथा स्व0 श्री लालबहादुर शास्त्री ने अहिंदी भाषी लोगों को दिए थे। विधेयक में मुख्य रूप से इस बात की व्यवस्था है कि अंग्रेजी केंद्रीय सरकार के काम-काज के लिए सहभाषा के रूप में तब तक बनी रहेगी जब तक सभी अहिंदी भाषी राज्य हिंदी को एकमात्र राजभाषा बनाने के लिए सहमत न हो जाएं। जिस राज्य ने हिंदी को सरकारी काम-काज के लिए नहीं अपनाया है उसके साथ केन्द्रीय सरकार अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करेगी। जब कोई ऐसा राज्य जिसने हिंदी को सरकारी काम-काज के लिए अपना लिया है, उस राज्य से पत्र-व्यवहार करेगा जिसने हिंदी को सरकारी काम-काज के लिए नहीं अपनाया है, तो हिंदी पत्र के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद भी भेजेगा। किंतु वह राज्य जिसने हिंदी को सरकारी काम-काज के लिए नहीं अपनाया है, अंग्रेजी पत्र के साथ उसका हिंदी अनुवाद भेजने के लिए बाध्य नहीं होगा। इन राज्यों को इस बात की छूट दी गई है कि वे हिंदी-राज्यों के साथ अथवा केन्द्र के साथ हिंदी में पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। विधेयक में इस बात की व्यवस्था भी की गई है कि केन्द्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों या कम्पनियों, निगमों आदि के कार्यालयों के पारस्परिक पत्र-व्यवहार में हिंदी-पत्र के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद और अंग्रेजी पत्र के साथ उसका हिंदी अनुवाद भेजा जाएगा। सरकारी संकल्पों, सरकारी आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक रिपोर्टों, प्रेस विज्ञप्तियों आदि में हिंदी और अंग्रेजी का साथ-साथ प्रयोग किया जाएगा। संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले कागज-पत्र भी दोनों भाषाओं में रहेंगे और सरकार की ओर से किए गए संविदाओं, करारों आदि में तथा लाइसेंसों, परमिटों, टेंडर-फार्मों आदि में भी दोनों भाषाओं का प्रयोग किया जाएगा।

संशोधन विधेयक के साथ केन्द्र की भाषा नीति के विषय में एक संकल्प भी पास किया गया है। संकल्प में कहा गया है कि संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विकास और प्रसार करने के लिए केन्द्रीय सरकार एक व्यापक कार्यक्रम तैयार करेगी; उसकी मूल्यांकन-रिपोर्ट प्रतिवर्ष संसद में प्रस्तुत की जाएगी तथा सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी । संकल्प में हिंदी के साथ-साथ संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित सभी भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रयत्न करने तथा त्रिभाषा सूत्र लागू करने पर बल दिया गया है । संघ लोक-सेवा आयोग की परीक्षाओं के माध्यम के संबंध में यह व्यवस्था की गई है कि जिन पदों के लिए हिंदी अथवा अंग्रेजी अथवा दोनों भाषाओं का उच्चस्तरीय ज्ञान आवश्यक है, उन्हें छोड़ कर, शेष सभी पदों की भर्ती के लिए हिंदी अथवा अंग्रेजी अनिवार्य रहेगी । कालांतर में समस्त भारतीय भाषाओं को संघ लोक-सेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम बनाने पर विशेष बल दिया गया है ।

विधेयक पर हुई बहस के दौरान गृह मंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण ने कुछ महत्वपूर्ण घोषणाएं की हैं । उन्होंने कहा है कि केंद्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी अपनी फाइलों का सारा काम हिंदी में कर सकता है, और आगामी अक्तूबर से सभी भारतीय भाषाओं को संघ लोक-सेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम बनाने की शुरुआत हो जाएगी । उन्होंने यह भी कहा कि हर मंत्रालय में एक अनुवाद ब्यूरो खोला जाएगा ताकि सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग में अधिक सुविधा हो ।

रिज़र्व बैंक के नोटों में हिंदी को प्रमुख स्थान

केन्द्रीय हिंदी सलाहकार समिति की गत मास हुई बैठक में उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने सरकार के इस निर्णय की घोषणा की कि भविष्य में रिज़र्व बैंक के नोटों पर हिंदी को प्रमुखता दी जाएगी । रकम की अदायगी के संबंध में रिज़र्व बैंक का वचन जो अब तक अंग्रेज़ी में ही छपता था, अब हिंदी में भी छपेगा और रिज़र्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर भी हिंदी में रहेंगे ।

'अमृत और विष' अकादमी द्वारा पुरस्कृत

श्री अमृत लाल नागर के उपन्यास "अमृत और विष" को 1967 के साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है ।

-- 00 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में
दूसरा राष्ट्रीय पुस्तक मेला

राजधानी में गत 17 दिसंबर से 31 दिसंबर तक नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा एक वृहद् पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। पन्द्रह दिवसीय इस मेले में हिंदी की लगभग 2500 और अंग्रेजी की 2000 पुस्तकों के साथ समस्त भारतीय भाषाओं की चुनी हुई पुस्तकें प्रदर्शित की गई थीं। पुस्तकें विषयानुसार अलग-अलग रखी गई थीं। बाल-साहित्य और पाकेट बुक्स को अलग से प्रदर्शित किया गया था। कनाट प्लेस स्थित एल० आई० सी० ग्राउंड में बने विशाल प्रदर्शनी मंडप के चारों ओर विभिन्न प्रकाशकों के लगभग 200 बुक स्टाल थे। प्रदर्शनी देखने वाले अपनी मनपसंद पुस्तकें कमीशन के साथ खरीद सकते थे।

मेले का उद्घाटन 17 दिसंबर को राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने विश्वास प्रकट किया कि सभी भारतीय भाषाओं का भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि हमारी अनेक भाषाओं का इतिहास गौरवपूर्ण और समृद्ध रहा है। यदि हम दृढ़तापूर्वक अपनी भाषाओं को समृद्ध बनाने का संकल्प करें तो वे तकनीकी और वैज्ञानिक विचारों की अभिव्यक्ति में पूरी तरह समर्थ हो जाएंगी।

नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष डा० बी० वी० केसकर ने राष्ट्रपति का स्वागत करते हुए भारत में पुस्तक प्रकाशन की समस्याओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अच्छे प्रेसों और अच्छे कागज़ की कमी के कारण भारत में पुस्तक-प्रकाशन पिछड़ा हुआ है।

पन्द्रह दिन के इस मेले में विभिन्न प्रकार के साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। 18 और 19 दिसंबर को "पुस्तक समीक्षा" विषय पर गोष्ठी हुई जिसमें विभिन्न भाषाओं के विद्वानों ने भाग लिया। 24 दिसंबर को अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ की ओर से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिस में मासिक पुस्तक प्रदर्शनी तथा बिक्री-केन्द्रों की स्थापना की योजना पर विचार हुआ। गोष्ठी का उद्घाटन केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० शेर सिंह ने किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि सरकार ने 5 से 10 साल की अवधि में भारतीय भाषाओं को प्रत्येक स्तर पर शिक्षा का माध्यम बनाने का निश्चय किया है । इसे कार्यान्वित करने के लिए प्रकाशकों, लेखकों और पुस्तक विक्रेताओं का सहयोग आवश्यक है । पूरे आयोजन में सबसे महत्वपूर्ण बात थी बाल-साहित्य को समुचित महत्व । बाल-साहित्य की पुस्तकें अलग कक्ष में सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रदर्शित की गई थीं । 26 से 30 दिसंबर तक बाल-साहित्य पर संगोष्ठी हुई । इसका आयोजन दक्षिण भारतीय भाषाओं के पुस्तकन्यास (एस०एल०बी०टी०) ने किया ।

विविध समाचार

- दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन के चांदनी चौक मंडल ने हिंदी के नाम पट्टों पर तीन पुरस्कार देने का निश्चय किया है । प्रतियोगिता में प्रवेश की अंतिम तारीख 10 जनवरी है और पुरस्कार वितरण 23 जनवरी को लाल किले के कवि सम्मेलन में होगा ।

- संसद-सदस्य श्री कमलनयन बजाज के निवास स्थान पर देश के प्रमुख उद्योग-पतियों की एक बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय किया गया है कि उद्योग के क्षेत्र में अंग्रेजी की प्रधानता को समाप्त किया जाए और भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा दिया जाए ।

- हिंदी के प्रख्यात कहानीकार पं० सुदर्शन के निधन पर राजधानी में कई स्थानों पर शोक सभाएं हुईं । भारतीय साहित्य परिषद द्वारा हिंदी भवन में आयोजित एक शोक सभा में राजधानी के अनेक लेखकों तथा पत्रकारों ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की ।

-- 00 --

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

महाराष्ट्र:

महाराष्ट्र सरकार की हिंदी सलाहकार समिति ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा नागाओं के बीच हिंदी प्रचार कार्य की सराहना की है। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा ने अब तक नागाओं की सात टुकड़ियों को हिंदी का प्रशिक्षण दिया है। इस समय नागालैंड में 65 शिक्षक हिंदी के प्रचार में लगे हैं।

गुजरात :

गुजरात के कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश श्री वी० वी० राजू ने अहमदाबाद में एक गोष्ठी में कहा है कि देश की राजभाषा केवल हिंदी ही हो सकती है किन्तु प्रादेशिक भाषाओं के महत्व में कमी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि अपने देश के केवल दस प्रतिशत लोगों का विदेश से संपर्क होता है और केवल एक प्रतिशत लोग विदेश जाते हैं। एक या दस प्रतिशत लोगों की सुविधा के बदले हमें 90 प्रतिशत लोगों की सुविधा के विषय में सोचना चाहिए।

आंध्रप्रदेश:

भूतपूर्व सर्वोच्च न्यायाधीश श्री गजेन्द्रगडकर ने हैदराबाद रोटरी क्लब में भाषण देते हुए कहा कि भारत की राष्ट्रभाषा केवल हिंदी ही हो सकती है। हमारी क्षेत्रीय भाषाएं चाहे वे कितनी भी समृद्ध हों अपने क्षेत्र तक ही सीमित हैं।

पंजाब:

पंजाब विधान सभा तथा विधान परिषद ने राजभाषा विधेयक पास कर दिया है। इसके अनुसार पंजाब में सरकारी काम-काज की भाषा गुरुमुखी लिपि में पंजाबी होगी। केन्द्र और राज्यों से हिंदी में पत्र-व्यवहार किया जाएगा। पंजाब के मुख्यमंत्री श्री लछमन सिंह गिल ने कहा है कि यह व्यवस्था आगामी अप्रैल से लागू हो जाएगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मद्रास:

समाचारपत्रों में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार मद्रास स्थित हिंदुस्तान टेलीप्रिंटर कम्पनी आगामी सात महीनों में हिंदी के टेलीप्रिंटर तैयार कर लेगी। हिंदी टेलीप्रिंटर के की-बोर्ड को अन्तिम रूप दिया जा चुका है। आशा है कि अगले वर्ष जुलाई तक हिंदी टेलीप्रिंटर की 30 मशीनें तैयार हो जाएंगी।

दिल्ली:

---- दिल्ली प्रशासन के प्रमुख अधिकारियों की एक बैठक में यह निर्णय किया गया है कि आगामी 15 अगस्त से दिल्ली प्रशासन का कार्य हिंदी में होगा। केन्द्रीय सरकार और हिंदी भाषी राज्यों से हिंदी में पत्र-व्यवहार किया जाएगा। अहिंदी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले पत्र भी हिंदी में होंगे। उनके साथ राज्य-विशेष की भाषा में पत्र का अनुवाद भेजा जाएगा।

--दिल्ली के 107 विद्यालयों में इस समय 12 क्षेत्रीय भाषाओं की पढ़ाई की व्यवस्था है। पंजाबी के लिए 75, बंगला के लिए 9, तमिल के लिए 4 और कन्नड़, तेलुगु, मलयालम, गुजराती, मराठी तथा अरबी के लिए एक-एक स्कूल है। विभिन्न स्तरों पर तमिल के 3353, कन्नड़ के 225, तेलुगु के 1042 तथा मलयालम के 489 छात्र अपनी-अपनी भाषाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश :

--उत्तर प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री रामप्रकाश ने कहा है कि सरकार राज्य लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं के लिए हिंदी को माध्यम बनाने के प्रस्ताव पर विचार कर रही है। विचार है कि कुछ परीक्षाओं के लिए अंग्रेजी को ऐच्छिक विषय बना दिया जाएगा।

-- काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अगले वर्ष समूचे देश में हिंदी रंगमंच शताब्दी मनाई जाएगी। आधुनिक रंगमंच पर प्रथम हिंदी नाटक कलकत्ता में सन् 1863 में प्रस्तुत किया गया था। तुलसीदास कृत "रामचरितमानस" की कथा पर आधारित "जानकी मंगल" नामक इस नाटक में स्वयं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने प्रमुख भूमिका अदा की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालयों में

उस्मानिया विश्वविद्यालय(हैदराबाद) का हिंदी विभाग-एक परिचय

उस्मानिया विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना 1949-50 में हुई। दक्षिण भारत के सुविख्यात हिंदी सेवी पं0 वंशीधर विद्यालंकार के अनथक प्रयत्नों के फलस्वरूप यह विभाग स्थापित हुआ था अतः इसके प्रथम अध्यक्ष भी श्री विद्यालंकार जी ही हुए। सन् 1955 में उनके सेवा निवृत्त हो जाने के बाद डा0 राम निरंजन पांडेय प्रोफेसर एवं अध्यक्ष नियुक्त हुए। इस समय विभाग में डा0 पांडेय के अतिरिक्त दो रीडर और 17 प्राध्यापक हिंदी अध्यापन का काम कर रहे हैं। विभाग में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन तीन रूपों में हो रहा है :-

(1) ऐच्छिक विषय के रूप में :- इसके अन्तर्गत विद्यार्थी `हिंदी साहित्य` का अध्ययन एम0ए0 तक कर सकता है और आगे पी-एच0डी0 भी प्राप्त कर सकता है। 1949 में हिंदी एम0 ए0 की कक्षाएं 3 विद्यार्थियों से प्रारंभ हुईं और अब यह संख्या 60-70 प्रतिवर्ष तक पहुंच चुकी है। बी0 ए0 परीक्षा में द्वितीय भाषा हिंदी में 50 प्रतिशत और ऐच्छिक हिंदी में 40 प्रतिशत अंक पाने वाले विद्यार्थी ही एम0ए0 में प्रवेश के अधिकारी माने जाते हैं। अब तक लगभग 500 छात्र हिंदी एम0 ए0 कर चुके हैं। इनमें 200 हिंदी भाषी तथा 300 अहिंदी भाषी हैं। इस वर्ष हिंदी एम0ए0 में 65 छात्र हैं जिनमें 25 हिंदी भाषी और 40 अहिंदी भाषी हैं।

(2) द्वितीय भाषा के रूप में :- राष्ट्रभाषा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन की सुविधा देने के लिए विश्वविद्यालय में द्वितीय भाषा के रूप में भारतीय भाषाएं पढ़ाई जाती हैं। इस व्यवस्था के अन्तर्गत हिंदी को भी वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। प्रतिवर्ष सैकड़ों अहिंदी भाषी विद्यार्थी `हिंदी भाषा` का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पी0यू0सी0 और बी0ए0 में हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़कर विद्यार्थी उच्च स्तर का ज्ञान पा लेता है।

(3) सहयोगी भाषा के रूप में :- भारतीय भाषाओं में एम0 ए0 करने वाले विद्यार्थी हिंदी भाषा का सौ अंकों का एक पूरा प्रश्न पत्र भी दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते हैं। इस प्रकार उर्दू, मराठी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़ साहित्य का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी हिंदी साहित्य की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करते हैं और हिंदी के विद्यार्थी अन्य किसी भाषा का अध्ययन वैकल्पिक रूप से करते हैं।

शोध कार्य :

विभाग की देख-रेख में स्नातकोत्तर शोध कार्य सन् 1954 से होने लगा था। अब तक निम्नलिखित व्यक्तियों ने हिंदी में पी-एच0 डी0 उपाधि प्राप्त की है।

नाम	वर्ष	विषय
1- श्री राजकिशोर पाण्डेय	1956	दक्खिनी गद्य का विकास
2- श्री वेंकट रमण	1961	सूर तुलसी कबीर का सामाजिक पथ
3- श्री वसन्तराव चक्रवर्ती	1962	प्रसाद की दार्शनिक चेतना
4- श्री ब्रजबिहारी तिवारी	1962	दक्खिनी गद्य - 17 वीं शती के बाद
5- श्री विद्यासागर	1963	हिंदी साहित्य के भाषा चित्रकाव्य
6- श्रीमती ज्ञान अस्थाना	1963	हिंदी उपन्यासों में ग्राम समस्याएं
7- श्रीमती नागलक्ष्मी	1964	गुप्त और सुब्रह्मण्यम् भारती - एक तुलनात्मक अध्ययन
8- श्री भीमसेन "निर्मल"	1964	तेलुगु के कवि पुरुषोत्तम और उनके हिंदी नाटक
9- कु0 सरला सहगल	1965	सूर का वात्सल्य और श्रृंगार
10- श्री रामकुमार खंडेलवाल	1965	भक्तिकालीन हिंदी काव्य में प्रेम भावना
11- श्रीमती मनोरमा जैन	1965	हिंदी प्रबंध काव्यों में नारी
12- श्री वेदप्रकाश शास्त्री	1965	श्रीमद्भागवत का सूरदास पर प्रभाव
13-श्री ललित पारिख	1966	सूरदास और नरसी मेहता का तुलनात्मक अध्ययन।

इस समय 18 विद्यार्थी शोध कार्य में संलग्न हैं।

(शेष अगले अंक में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

श्रीलंका से अंग्रेजी की विदाई :

श्री लंका के मंत्रिमंडल ने उस विधेयक का अनुमोदन कर दिया है जिसके अनुसार श्रीलंका में शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी का स्थान सिंहली और तमिल भाषाएं ले लेंगी। श्रीलंका में सरकारी काम-काज की भाषा सिंहली है। तमिल भाषी उत्तरी तथा पूर्वी क्षेत्रों में तमिल के समुचित प्रयोग की व्यवस्था की गई है।

मारीशस में हिंदी की लोकप्रियता

मारीशस के प्रवासी भारतीय बैरिस्टर श्री सोमदत्त बखौरी ने प्रयाग में हिंदी साहित्य सम्मेलन में आयोजित एक स्वागत समारोह में बताया कि मारीशस में हिंदी बहुत लोकप्रिय है। लगभग 180 विद्यालयों में हिंदी में परीक्षाएं होती हैं। वहां तुलसी के 'रामचरित मानस' का बड़ा प्रचार है। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत और छः अन्य भारतीय भाषाएं भी बहुत लोकप्रिय हैं। मारीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा हिंदी का प्रचार कर रही है।

जापान के हिंदी विद्वान भारत में

जापान के हिंदी विद्वान श्री अकीरा हनाहारा आजकल भारत आए हैं। उन्होंने तोक्यो के विदेशी भाषा विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जायसी के पद्मावत पर शोध प्रबंध प्रस्तुत किया है।

श्री हनाहारा के कथनानुसार जापान में हिंदी लोकप्रिय होती जा रही है। जो छात्र हिंदी पढ़ कर विश्वविद्यालय से निकलता है उसे तुरंत नौकरी मिल जाती है। जापान प्रसारण निगम के विदेशी प्रसारण विभाग से विश्व की बत्तीस भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इसमें हिंदी के कार्यक्रम को 30 मिनट दिए जाते हैं।

सोवियत लैंड 'नेहरू पुरस्कार' समर्पित

15 दिसम्बर को नई दिल्ली स्थित विट्ठलभाई पटेल भवन में आयोजित एक समारोह में हिंदी के लेखक श्री यज्ञदत्त शर्मा को सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार समर्पित किया गया। यह पुरस्कार श्री यज्ञदत्त शर्मा के हिंदी उपन्यास 'शिलान्यास' पर दिया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृ० सं०	मूल्य
	भारतीय ज्ञानपीठ प्रा० लि० कलकत्ता			
परिवेश	मोहन राकेश	निबंध संग्रह	274	4-00
कितनी नावों में कितनी बार	अज्ञेय	कविता संग्रह	93	4-00
अवधी व्रत कथाएं	इंद्रप्रकाश पांडेय	धार्मिक कथाएं	311	6-00
पुरातत्व का रोमांस	भगवतशरण उपाध्याय	पुरातत्व कथाएं	278	6-00
	पापुलर प्रकाशन 35 सी ताड़देव रोड, बम्बई-34			
कालिदास	डा० वासुदेव विष्णु मिराशी	आलोचना	274	12-00
	साथी प्रकाशन, सागर			
छायावाद का पुनर्मूल्यांकन	डा० रामदशरथ मिश्र	आलोचना	128	3-00
	रीगल बुक डिपो दिल्ली-7			
बिहारी की काव्यकला	प्रो० उदयभानु सिंह	,,	207	6-50
	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी			
जवाहर से लाल तक	नजीर बनारसी	कविता	117	5-00
भाषा और साहित्य	डा० ब० जा० वारान्निकोव	साहित्यिक निबंध	160	4-00
रैक्वी	भिक्खु	उपन्यास	246	6-00
योगवाशिष्ठ कथा	रघुनाथ सिंह	धार्मिक कथा	632	15-00
	सर्जना प्रकाशन इलाहाबाद			
रम्या	अमृतराय	ललित निबंध	108	4-00
सहचिंतन	,,	साहित्यिक निबंध	229	8-00
	हिंदी साहित्य मंदिर ब्रह्मपुरी अजमेर			
गांधी चित्रावली	जीवनमल लूणिया	जीवनी	112	1-50
बुद्ध चित्रावली	,, ,,	,,	96	1-50
नेहरू चित्रावली	,, ,,	,,	80	1-50
विनोबा चित्रावली	,, ,,	,,	112	1-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए ले० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अंक 6

19-5-68
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रीकरण संख्या : आर. एन. 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 जनवरी 1968 अंक 6

0 भाषा-संगम (शिक्षा मंत्रिक सम्मेलन आदि)

0 हिंदी संस्थाएँ (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद)

0 हिंदी

- * भारत सरकार में
- * राजधानी में
- * प्रादेशिक क्षेत्र में
- * विश्वविद्यालयों में
- * विदेशों में

0 नए प्रकाशन

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में अहिंदी भाषी प्रदेशों के शिक्षकों के लिए (1) हिंदी शिक्षण निष्णात, (2) हिंदी शिक्षण पारंगत, तथा एक द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की पढ़ाई की व्यवस्था है। आगामी सत्र दिनांक 8-7-1968 से प्रारंभ होगा प्रवेश-पत्र देने की अंतिम तिथि 15-5-1968 है। विशेष जानकारी के लिए 25 पैसे का मनीआर्डर निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, 25 नया आगरा, आगरा-5 को भेजें।

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

o भाषा संगम

द्वितीय विश्व तमिल सम्मेलन

मद्रास में गत मास द्वितीय विश्व तमिल सम्मेलन का आयोजन बड़ी धूम-धाम से किया गया । सम्मेलन में 40 देशों के लगभग 400 प्रतिनिधियों ने भाग लिया । लगभग 200 प्रतिनिधि विदेशों से आए थे । सम्मेलन का उद्घाटन 3 जनवरी को राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने किया । अपने भाषण में उन्होंने कहा कि तमिल अंतर्राष्ट्रीय भाषा है । वह भारत से बाहर कई देशों में बोली जाती है । वह दक्षिण-पूर्व एशिया की संस्कृति का आधार है । मद्रास विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० लक्ष्मण स्वामी मुदलियार ने समारोह की अध्यक्षता की ।

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी, भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० स० राधाकृष्णन तथा उप प्रधान मंत्री श्री मोरार जी देसाई ने अपने शुभकामना संदेशों में तमिल भाषा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सम्मेलन की सफलता की कामना की ।

सम्मेलन में तमिल भाषा और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर 157 निबंध पढ़े गए । फ्रांसीसी विद्वान जे० फिलिओजा के निबंध प्राचीन अभिलेखों का हवाला देकर यह सिद्ध किया गया था कि प्राचीन काल में तमिल भाषियों की मुख्य सम्पर्क भाषा संस्कृत थी ।

इस अवसर पर तमिल संस्कृति की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया । प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए वयोवृद्ध नेता श्री राजगोपालाचार्य ने कहा कि तमिल संस्कृति सहन-शक्ति को बढ़ाने में सहायक है; तमिल-भाषियों द्वारा तोड़-फोड़ की कार्रवाइयां शोभनीय नहीं हैं ।

राजभाषा पद पर पंजाबी

गुरुमुखी लिपि में पंजाबी को पंजाब की राजभाषा बनाने के उपलक्ष्य में 14 जनवरी को पंजाबी दिवस मनाया गया ।

1 जनवरी से सरकारी दफ्तरों में ज़िला स्तर पर पंजाबी का प्रयोग हो रहा है । सचिवालय और निदेशालय स्तरों पर पंजाबी का प्रयोग 13 अप्रैल तक होने लगेगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अवसर पर राष्ट्रपति ने अपने संदेश में कहा कि यह अवसर पंजाब के लिए ही नहीं समस्त भारत के लिए ऐतिहासिक अवसर है जबकि क्षेत्रीय भाषाओं के जरिये प्रशासन चलाने के लक्ष्य की ओर कदम उठाया गया है । उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, उप प्रधान मंत्री तथा गृहमंत्री ने पंजाब सरकार को इस महत्वपूर्ण कदम के लिए बधाई दी और आशा व्यक्त की कि पंजाब में हिंदी को सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित करने का यत्न किया जायगा ।

वृहन्महाराष्ट्र परिषद सम्मेलन

वृहन्महाराष्ट्र परिषद का 28 वां अखिल भारतीय सम्मेलन रतलाम में संपन्न हुआ । यह संस्था सन् 1926 में स्थापित हुई थी । संस्था का उद्देश्य साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए काम करना है । मराठीतर लोगों के लिए मराठी कक्षाएं तथा मराठी लोगों के लिए हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की कक्षाएं चलाना भी इस संस्था का एक कार्य है । मराठी भाषी प्रदेशों के बाहर यह संस्था मराठी माध्यम के अनेक स्कूल चला रही है । अपने नानाविध साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा यह संस्था देश की भावात्मक एकता में योग दे रही है ।

दक्षिण की भाषाओं का अध्ययन

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सचिव श्री श्रीजनेश शर्मा ने एक वक्तव्य में कहा कि उत्तरप्रदेश में इस सभा सात केन्द्रों में तेलुगु, सात केन्द्रों में तमिल और चार केन्द्रों में कन्नड़ पढ़ाई जाती है । हर साल लगभग 200 विद्यार्थी तमिल, 200 किसी में तेलुगु और 100 विद्यार्थी कन्नड़ का अध्ययन करते हैं । विद्यार्थियों के लिए "डिप्लोमा" परीक्षा की व्यवस्था है। उत्तरप्रदेश सरकार उस परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को 200 से 250 रुपए तक नकद पुरस्कार देती है । डिप्लोमा परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले पांच विद्यार्थियों को सरकार अपने खर्च पर उस प्रदेश में भी भेजती है जिस प्रदेश की भाषा में वह परीक्षा देता है । दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की दिल्ली शाखा डिप्लोमा परीक्षा पास करने वाले विद्यार्थियों के लिए तमिल और तेलुगु में द्विवर्षीय पाठ्यक्रम की 'कोविद' परीक्षा भी चलाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी संस्थाएं

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

स्थापना : बिहार विधान-सभा में स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार बिहार राष्ट्रभाषा परिषद की स्थापना डा0 लक्ष्मी नारायण सुधांशु के प्रयत्नों के फलस्वरूप 11 अप्रैल 1947 को हुई थी किंतु परिस्थितियों के कारण परिषद् का विधिवत् कार्यारंभ जुलाई 1950 में हुआ ।

उद्देश्य और कार्य : आधुनिक भारतीय भाषाओं के संवर्द्धन, हिंदी में कला, विज्ञान एवं अन्य विषयों के मौलिक तथा उपयोगी ग्रंथों के प्रकाशन और बिहार की प्रमुख बोलियों के अनुशीलन की समुचित व्यवस्था करना परिषद के मुख्य उद्देश्य हैं । इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिषद निम्नलिखित कार्य करती हैं :-

(क) हिंदी में लिखित विभिन्न विषयों के प्रामाणिक ग्रंथों के प्रणयन के लिए पुरस्कार वितरण;

(ख) अन्य भाषाओं के महत्वपूर्ण साहित्यिक और वैज्ञानिक ग्रंथों के हिंदी रूपांतर तथा उनका प्रकाशन;

(ग) बिहार तथा अन्य राज्यों की साहित्यिक संस्थाओं और संपादन-समितियों को आर्थिक सहायता देकर हिंदी तथा बिहार की अन्य जनभाषाओं में मौलिक एवं अनूदित ग्रंथों के प्रकाशन को प्रोत्साहन;

(घ) बिहार की विभिन्न बोलियों के साहित्यिक एवं वैज्ञानिक स्वरूप तथा हिंदी के साथ उनके संबंध विषयक अध्ययन को प्रोत्साहन;

(ङ) साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व के लोकसाहित्य के संकलन एवं प्रकाशन की व्यवस्था;

(च) विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित विद्वानों के व्याख्यानों का आयोजन तथा व्याख्यानों का ग्रंथाकार प्रकाशन;

(छ) महत्वपूर्ण प्राचीन हस्तलिखित पोथियों और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व की दुर्लभ पुस्तकों के अन्वेषण तथा प्रकाशन की व्यवस्था, और

(ज) परिषद् के उद्देश्यों की सिद्धि के लिए साहित्यिक महत्व के अन्य कार्य।

(क्रमश:)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में

शिक्षा मंत्रालय :

हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास के संबंध में शिक्षा मंत्रालय को सलाह देने के लिए नियुक्त हिंदी शिक्षा समिति की 20वीं बैठक 25 जनवरी 1968 को राष्ट्रीय संग्रहालय के सभा कक्ष में हुई। राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने अधिवेशन का उद्घाटन किया। उद्घाटन भाषण में उन्होंने शिक्षा आयोग की सिफारिशों और राजभाषा अधिनियम संशोधन विधेयक तथा तत्संबंधी संकल्प के परिप्रेक्ष्य में राजभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विकास और प्रसार की आवश्यकता और त्रिभाषा सूत्र के पालन पर बल दिया। आर्थिक कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस कठिन परिस्थिति में यह आवश्यक है कि हम हिंदी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विकास से संबंधित विभिन्न योजनाओं के कार्यों को सुव्यवस्थित करें, अपव्यय को रोकें और उपलब्ध साधनों का उपयोग उच्च प्राथमिकता वाली योजनाओं के लिए ही करें।

समिति ने हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास की अनेक नई-पुरानी योजनाओं और कार्यक्रमों पर विचार किया, जैसे - जनजीवन के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में हिंदी का सम्पर्क भाषा के रूप में उपयोग, शिक्षा और प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर हिन्दी का उपयोग, तकनीकी शिक्षा के लिए हिन्दी माध्यम का विकास, हिंदी के विभिन्न कार्यक्रमों में समन्वय और सामंजस्य, स्वीकृत योजनाओं का गतिशील कार्यान्वयन, विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी माध्यम के स्कूलों और कालेजों की स्थापना, स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं द्वारा संचालित परीक्षाओं की मान्यता और एकरूपता, हिंदी के प्रसार के लिए अध्यापकों तथा छात्रों को प्रोत्साहन, हिंदी अध्यापकों का आदान-प्रदान और पुनश्चर्या पाठ्य-क्रम, अहिंदी भाषी हिंदी लेखकों को और अनुवादकों को प्रोत्साहन, विदेशों में हिंदी प्रचार, देवनागरी लिपि में विभिन्न भारतीय भाषाओं के साहित्य का प्रकाशन, शब्द-कोश निर्माण आदि।

इस अवसर पर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के प्रकाशनों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लिए मानक आशुलिपि

शिक्षा मंत्रालय द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ समिति के परामर्श से आशुलेखन की मानक पद्धति निर्धारित की जा चुकी है और सचिवालय प्रशिक्षणशाला के सहयोग से उसे पुस्तिका के रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। मानक आशुलिपि को सरकारी अनुमोदन प्राप्त है। हिंदीतर भारतीय भाषाओं के लिए यथोचित परिवर्तन के साथ इस मानक आशुलिपि को अपनाया जा सकता है।

हिंदी टाइपराइटिंग प्रतियोगिता

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद द्वारा गत अक्तूबर में आयोजित आठवीं अखिल भारतीय हिंदी आशुलेखन और टाइपिंग प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। प्रतियोगिता देश भर के 40 केन्द्रों में आयोजित की गई और इसमें कुल 509 प्रतियोगियों ने भाग लिया। प्रथम अखिल भारतीय पुरस्कार (101 रुपये, पदक और चलशील्ड) दिल्ली के श्री चंद्रदेव पांडेय को मिला। उन्होंने 90.6 शब्द प्रति मिनट की गति से टंकन किया। अहिंदी भाषियों के लिए अखिल भारतीय पुरस्कार के प्रथम विजेता मराठी-भाषी श्री परशुराम खीरसागर रहे। उन्होंने 63.8 शब्द प्रति मिनट की गति से टंकन किया। शिक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित नवीनतम कुंजीपटल पर टाइप करने के लिए विशेष प्रथम पुरस्कार (रजत पदक) गोरखपुर के श्री रामानंद प्रसाद गुप्त को मिला। उन्होंने 61.4 शब्द प्रति मिनट की गति से टंकन किया। आशुलिपि प्रतियोगिता में प्रथम और द्वितीय पद प्राप्त करने वाले श्री शरच्चंद्र चतुर्वेदी और श्री मनमोहनलाल गुप्त की गति 200 शब्द प्रति मिनट रही। उन्हें क्रमशः 201/- और 101/- रु० का पुरस्कार दिया गया है।

विविध समाचार

– केंद्रीय सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय में हिंदी सलाहकार समिति का गठन किया गया है। इस समिति में 18 सदस्य होंगे। इनमें सर्वश्री गंगाशरण सिंह, प्रकाशवीर शास्त्री, हेम बरुआ, रामधारी सिंह दिनकर, रतन लाल जोशी, कामाक्षी राव, जी०पी० नैने, अनंत गोपाल शेवड़े और धर्मवीर भारती के नाम उल्लेखनीय हैं।

– केन्द्रीय डाक-तार विभाग हिंदी में टेलीफोन निर्देशिका प्रकाशित कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी गणतंत्र-दिवस के अवसर पर 23 जनवरी को दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन की ओर से लाल किले में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि और उपन्यासकार श्री भगवतीचरण वर्मा ने की। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए वयोवृद्ध साहित्यकार श्री वृंदावन लाल वर्मा ने कहा : हिंदी साहित्य-धारा प्राचीन से सजग है अत: हिंदी की प्रगति अवरुद्ध नहीं हो सकती। दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने अपने स्वागत भाषण में कहा : दिल्ली प्रशासन में हिंदी को सरकारी भाषा के रूप में 15 अगस्त से पहले-पहले पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित कर दिया जाएगा। यह काम 26 जनवरी से ही शुरू किया जा रहा है। कवि सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों के कवियों ने भाग लिया।

दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा आयोजित हिंदी नाम-पट्ट प्रतियोगिता के पुरस्कार भी वितरित किए गए। प्लास्टिक भंडार को प्रथम, अनुराधा साड़ी स्टोर को द्वितीय, प्रेरणा को तृतीय तथा आर-सी प्रेस और श्री प्यारे लाल अमरनाथ को विशेष पुरस्कार दिए गए।

- दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के निदेशक श्री वे० दी० मेहता ने एक वक्तव्य में बताया कि राजधानी में हिंदी के पाठकों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। गत वर्ष के आंकड़े देते हुए उन्होंने कहा कि इस वर्ष पाठकों ने कुल 21 लाख पुस्तकें पढ़ने के लिए लीं। इनमें हिंदी की पुस्तकों की संख्या 15 लाख 75 हजार थी।

- दिल्ली समाचार समिति के तत्वावधान में 21 जनवरी को हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह में खड़ी बोली के आदि कवि अमीर खुसरो की 662 वीं जयंती मनाई गई। समारोह का उद्घाटन केन्द्रीय राज्य शिक्षा मंत्री प्रो० शेरसिंह ने किया और अध्यक्षता डा० प्रभाकर माचवे ने की। इस अवसर एक कवि सम्मेलन का आयोजन भी किया गया।

- केन्द्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से मद्रास के तमिल भाषी हिंदी छात्रों के एक दल के स्वागत में [illegible] जनवरी को एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। केन्द्रीय राज्य शिक्षा मंत्री प्रो० शेरसिंह तथा संयुक्त शिक्षा सलाहकार श्री गिरिजा प्रसाद पाण्डेय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अतिरिक्त गोष्ठी में हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा० रामधारी सिंह दिनकर, श्री जैनेन्द्र कुमार, डा० नगेन्द्र, डा० प्रभाकर माचवे और यशपाल जैन आदि ने भाग लिया।

- यूरोपीय हिंदी प्रचार परिषद और केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक साहित्य गोष्ठी में वित्त मंत्रालय के उपमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने दृढ़ विश्वास प्रकट किया कि हिंदी के बिना राष्ट्र में सच्ची एकता स्थापित नहीं हो सकती और निरंतर प्रयास से वह एक दिन अंतर्राष्ट्रीय भाषा बन सकती है। उन्होंने हिंदी के प्रेमियों को सलाह दी कि वे भाषा-विधेयक की चिंता किए बिना अपना समस्त कार्य हिंदी में करना शुरू कर दें। यूरोपीय हिंदी प्रचार परिषद के अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र गौतम ने यूरोप में हिंदी प्रचार की प्रगति की चर्चा करते हुए कहा कि वहां हिंदी उत्तरोत्तर लोकप्रिय हो रही है तथा इस समय पांच यूरोपीय देशों में परिषद की शाखाएं हैं।

- दिल्ली प्रशासन ने भविष्य में केवल हिंदी टाइपराइटर खरीदने का निश्चय किया है। इस समय प्रशासन के पास सचिवालय स्तर पर 60 हिंदी टाइपराइटर हैं। इनकी संख्या बढ़ा कर लगभग 200 करने का लक्ष्य रखा गया है। अनुमान है कि दिल्ली प्रशासन के समस्त कार्यालयों में हिंदी में सुचारु रूप से काम चलाने के लिए लगभग 1200 हिंदी टाइपराइटरों की आवश्यकता होगी।

- दिल्ली नगर निगम और अनेक स्थानीय साहित्यिक संस्थाओं की ओर से सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री यशदत्त शर्मा के अभिनंदन में गत मास कई कार्यक्रम आयोजित किए गए। समारोहों में श्री यशदत्त के पुरस्कृत उपन्यास "निर्माण पथ", पर भाषण हुए।

दिल्ली विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में हिंदी

इस वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह का प्रमुख आकर्षण उसका हिंदी वातावरण था। विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० गांगुली, गणित तथा विधि संकाय के अध्यक्षों तथा अनेक कालेजों के प्राचार्यों ने हिंदी में ही भाषण दिए यद्यपि इनमें से अधिकांश अहिंदी भाषी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

आन्ध्रप्रदेश

उपप्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने हैदराबाद के हिंदी महाविद्यालय के छात्रों तथा प्रबंधकों के बीच भाषण देते हुए कहा कि हिंदी को संविधान में राष्ट्र-भाषा का स्थान दिया जा चुका है और लोग उसे सम्पर्क भाषा के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर सुदृढ़ करने के लिए कृतसंकल्प हैं। आशा है कि दस वर्ष के भीतर इसे अपना सम्मानित स्थान प्राप्त हो जाएगा।

उत्तरप्रदेश

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा आयोजित एक समारोह में वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डा० आत्माराम ने कहा कि हमें अपनी भाषाओं के माध्यम से विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करनी चाहिए। केवल अनुवाद से काम नहीं चलेगा, हमें विज्ञान की मौलिक पुस्तकें भी हिंदी में लिखनी होंगी। उन्होंने हिंदी शब्द-सागर के परिवर्धित तीसरे खंड का विमोचन किया।

– इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति रामनिवास मिश्र का हिंदी में अभिनंदन करते हुए न्यायमूर्ति एस०एस० द्विवेदी ने कहा कि संविधान में ऐसी कोई बात नहीं है जिससे उनके हिंदी में बोलने पर रोक लगती हो। न्यायमूर्ति मिश्र ने परिनिष्ठित हिंदी में उत्तर दिया।

– इलाहाबाद के स्थानीय हिंदी लेखकों और विद्वानों की एक बैठक में एक चार सदस्यीय समिति बनाई गई है जो भाषा के प्रश्न पर सद्भावना पैदा करने के उद्देश्य से गैर-हिंदी लेखकों एवं विद्वानों से बातचीत करेगी। समिति में श्री सुमित्रानंदन पंत और श्रीमती महादेवी वर्मा भी हैं।

– लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्र महासंघ द्वारा आयोजित राष्ट्रभाषा सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए हिंदी के वयोवृद्ध साहित्यकार श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी ने कहा : हिंदी राष्ट्रीय एकता की कड़ी है। हमें ऐसा कोई व्यवहार नहीं करना चाहिए जिससे हिंदी भाषियों तथा अहिंदी भाषियों के बीच कटुता पैदा हो। उपकुलपति श्री ए० वी० राव ने कहा कि किसी विदेशी भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा बनाना राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के विरुद्ध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल

केरल सरकार ने अपने सचिवालय के कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षण देने की योजना को लागू करने का प्रस्ताव किया है। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार हिंदी शिक्षण का यह काम उसी पद्धति पर होगा जिस पर केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों का प्रशिक्षण होता है।

भूल सुधार

"हिंदी समाचार जगत" के दिसंबर 1967 अंक, पृष्ठ 13 पर केरल समाचार के अंतर्गत "केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के क्षेत्रीय अधिकारी" के स्थान पर "केरल के विख्यात हिंदी सेवी" पढ़िए।

गुजरात

सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभविद्यानगर के वार्षिकोत्सव पर भाषण करते हुए केन्द्रीय राज्य शिक्षा मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद ने कहा कि देश की भावनात्मक एकता वस्तुत: भारतीय भाषाओं के द्वारा ही सुदृढ़ होगी। केवल दो प्रतिशत अंग्रेजी ज्ञाताओं के बल पर भारत की एकता की कल्पना करना बिडंबना है। उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल ने कहा कि हिंदी एक महान भाषा है। नई पीढ़ी के लिए यह सौभाग्य की बात है कि उसे इस भाषा को पढ़ने का अवसर मिला है।

बिहार

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ने इस वर्ष 1000 रु० का अहिंदी-भाषी ग्रंथ पुरस्कार तमिल-भाषी हिंदी लेखक डा० मलिक मोहम्मद को देने का निश्चय किया है।

मध्यप्रदेश

- जबलपुर विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए केन्द्रीय संचार तथा संसदीय कार्य मंत्री डा० रामसुभग सिंह ने कहा : हमारा अपनी मातृभूमि के प्रति इतना प्रगाढ़ प्रेम होना चाहिए कि हम हिंदी तथा अन्य सह-भाषाओं को सीखने के लिए हमेशा तैयार रहें ताकि हम देश की विभिन्न समृद्ध परम्पराओं को समझने और सराहने में समर्थ हो सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

– मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का चतुर्थ अधिवेशन छतरपुर में सम्पन्न हुआ। इसमें हिंदी के तीन प्रतिष्ठित साहित्यकारों (सर्वश्री वियोगी हरि, लक्ष्मी प्रसाद मिस्त्री "रमा" और डा० विनय मोहन शर्मा) को सम्मानित किया गया।

– हिंदी के वयोवृद्ध साहित्यकार पं० माखनलाल चतुर्वेदी का 30 जनवरी को खंडवा में देहावसान हो गया। साहित्य में "एक भारतीय आत्मा" के नाम से प्रसिद्ध श्री चतुर्वेदी के निधन पर देश में अनेक स्थानों पर शोक सभाएं की गईं। अपने शोक संदेश में राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने कहा : पं० माखन लाल चतुर्वेदी के निधन से हिंदी साहित्य के आकाश का एक चमकता-दमकता तारा सदा के लिए आंखों से ओझल हो गया है। चतुर्वेदी जी की सेवाएं न केवल साहित्य में बल्कि शिक्षा तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में भी स्मरणीय हैं। राष्ट्र के लिए उनकी सेवाएं सदा प्रेरणादायक रहेंगी।

– मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद ने 1965 के पुरस्कारों के लिए आमंत्रित पुस्तकों पर एक-एक हजार के 6 अखिल भारतीय तथा पांच-पांच सौ के 10 प्रादेशिक पुरस्कारों की घोषणा की है।

अखिल भारतीय पुरस्कार इन कृतियों पर दिए गए – आदमी के टुकड़े, रंगमंच और नाटक की भूमिका, मौलाना दाऊद कृत चंदायन, रस रतन, बालकृष्ण शर्मा नवीन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सपने महक उठे, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, गाथाएं वीर जवानों की तथा तुम कहां से आए।

महामहोपाध्याय श्री सिद्धेश्वर शास्त्री को उनके ग्रंथ "भारतवर्षीय प्राचीन चरित्र कोष" पर 1500 रुपये का विशेष पुरस्कार मिला है।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र सरकार ने विभिन्न स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं को हिंदी के विकास के लिए सरकारी सहायता विषयक सुझाव देने तथा उनकी परीक्षाओं का स्तर निर्धारित करने के उद्देश्य से पांच सदस्यों की हिंदी सलाहकार समिति गठित की है।

हिमाचलप्रदेश

मुख्यमंत्री डा० परमार ने घोषणा की है कि हिंदी हिमाचल प्रदेश की राजभाषा है। सरकारी काम-काज में अंग्रेजी का स्थान हिंदी को देने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। पहाड़ी को प्रदेश की राजभाषा मानने का प्रश्न सरकार के विचाराधीन है। फिलहाल पहाड़ी भाषा के विकास के लिए एक अलग विभाग की स्थापना की जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

उस्मानिया विश्वविद्यालय (हैदराबाद) हिंदी विभाग :

(गतांक से आगे)

इस विश्वविद्यालय से संबद्ध सभी कालेजों में हिन्दी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है । "हिन्दीसाहित्य" का अध्ययन बी०ए० तक युनिवर्सिटी कालेज, निज़ाम कालेज, युनिवर्सिटी महिला महाविद्यालय, सिकंदराबाद आर्ट्स एण्ड साइन्स कालेज, आर्ट्स एण्ड साइन्स कालेज वारंगल, वेंकटरामा रेड्डी महिला महाविद्यालय एवं वनिता महाविद्यालय, हैदराबाद में होता है । इसके अतिरिक्त हिन्दी आर्ट्स कालेज में भी बी०ए० तक हिन्दी साहित्य का अध्यापन होता है । यह दक्षिण में हिन्दी माध्यम का एकमात्र कालेज है ।

एम०ए० के स्तर पर हिन्दी साहित्य का अध्यापन केवल युनिवर्सिटी आर्ट्स कालेज में ही होता है, और शोधकार्य की व्यवस्था भी युनिवर्सिटी कालेज में ही है ।

इस विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक डा० विद्यासागर को भारत सरकार ने अखिल भारतीय स्तर पर चुनकर पूर्वी बर्लिन के हुम्बोल्ट विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापन के लिए "विज़िटिंग रीडर" के रूप में (1963-65) भेजा था । डा० विद्यासागर 1965 में अपने कार्यकाल की समाप्ति पर स्वदेश लौट आये हैं । उन्होंने वहां पर एक जेक छात्रा को "1947 के बाद के हिन्दी उपन्यासों में नारी समस्याएं" विषय पर पी-एच०डी० की उपाधि के लिए मार्गदर्शन दिया था ।

विश्वविद्यालय में एम०ए० में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र को प्रतिवर्ष "किशनराव विद्यालंकार" सुवर्ण पदक प्रदान किया जाता है । पदक "हिन्दी-महाविद्यालय" हैदराबाद की ओर से 1965 से दिया जा रहा है ।

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से "प्राच्य भाषा संकाय" (ओरिएण्टल फैकल्टी) की स्थापना सन् 1955 में हुई । इस संकाय की ओर से भारतीय भाषाओं के साहित्य की परीक्षाएं संचालित की जाती हैं । इसकी परीक्षाएं-एण्ट्रेन्स, डि०ओ० एल० और बी०ओ०एल० क्रमशः मैट्रिक, इण्टर एवं बी०ए० के समकक्ष मानी गई हैं । इन परीक्षाओं को पास कर विद्यार्थी उस भाषा का अध्यापक बन सकता है । अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1967-68 से एम०फिल० की परीक्षा भी प्रारंभ हो रही है। इसका स्तर एम०ए० के समकक्ष होगा। विश्वविद्यालय इन परीक्षाओं का प्रबंध करता है और स्थानीय संस्थाएं पठन-पाठन की व्यवस्था करती हैं। हिन्दी का पठन-पाठन 'हिन्दी ओरिएन्टल कालेज' में होता है। इस कालेज की स्थापना में स्व० श्री वंशीधर विद्यालंकार, पं० नरेन्द्र, अध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण, डा० विद्यासागर, डा० रामनिरंजन पाण्डेय आदि का विशेष हाथ रहा है। यह कालेज आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद द्वारा चलाया जाता है।

छात्रवृत्तियाँ

अनुसंधान में संलग्न सर्वोत्तम विद्यार्थी को 150 रु० मासिक की एक छात्रवृत्ति प्रतिवर्ष दी जाती है।

अहिन्दी-भाषियों में सर्वोत्तम विद्यार्थी को भी अनुसंधान कार्य के लिए 100 रु० मासिक की छात्रवृत्ति भारत सरकार द्वारा दी जाती है।

एम०ए० में अहिन्दी-भाषी विद्यार्थी को 100 रु० मासिक की छात्रवृत्ति भारत सरकार देती है।

प्रकाशन :

उस्मानिया विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में हिंदी विभाग प्रतिवर्ष एक शोध पत्रिका प्रकाशित करता है। इस पत्रिका में प्राध्यापकों और विद्यार्थियों के शोध-लेख छपते हैं।

हिन्दी विवेक :

विश्वविद्यालयों के हिन्दी प्राध्यापकों की एक संस्था 'विवेक' विभाग के द्वारा संचालित होती है। 'विवेक' की बैठक प्रतिमास होती है। यहाँ प्राध्यापक अपने शोध-लेख पढ़ते हैं और प्राध्यापकगण उनपर चर्चा करते हैं।

विभाग के प्राध्यापक डा० श्री वसन्तराव चक्रवर्ती की 'प्रसाद की दार्शनिक चेतना' नामक पुस्तक पर उत्तर प्रदेश सरकार ने 500 रु० का पुरस्कार 1966 में प्रदान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

जापान में हिंदी नाटक

ओसाका (जापान) के वैदेशिक अध्ययन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के छात्रों ने एक हिंदी नाटक को सफलता के साथ प्रस्तुत किया । "नदी प्यासी थी" नामक इस नाटक के अभिनय में मुख्य प्रेरणा-स्रोत थे हिंदी विभाग के तरुण अध्यापक डा० लक्ष्मीधर मालवीय । नाटक में भाग लेने वाले जापानी छात्रों के नाम हैं श्री मोकोतो ओतागाकी, श्री नोबुहिको हिराता, कु० क्योको हिराता और कु० जुन्को अन्डाई ।

रूस और भारतीय भाषाओं का साहित्यिक आदान-प्रदान

"सोवियत लैंड" पुरस्कार विजेता हिंदी उपन्यासकार श्री यशपाल शर्मा के सम्मान में आयोजित एक समारोह में प्रख्यात सोवियत भारतविद् डा० ई०पी० चेलिशेव ने कहा कि सोवियत संघ में भारतीय साहित्य तथा भारतीय भाषाओं का अध्ययन बड़े चाव से किया जाता है । हिंदी के अनेक साहित्यकारों की रचनाएं रूसी भाषा में अनूदित हो चुकी हैं । इनमें प्रेमचंद, जयशंकर "प्रसाद", निराला, मैथिलीशरण गुप्त, यशपाल, रांगेय राघव तथा वृंदावन लाल वर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं । हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं का साहित्य भी प्रचुर मात्रा में रूसी में अनूदित हुआ है । कबीर, तुलसी, मिर्जा ग़ालिब, मीर तकी मीर, जोश, फ़िराक़, फ़ैज़ अहमद फ़ैज़, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरच्चन्द्र, नज़रुल इस्लाम तथा सुब्रह्मण्य भारती की रचनाएं भी रूस में लोकप्रिय हुई हैं ।

डा० चेलिशेव ने मैक्सिम गोर्की की तुलना हिंदी के उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद से की और कहा कि "गोदान" उपन्यास के पात्र गोर्की के पात्रों से मिलते-जुलते हैं ।

लन्दन स्थित हिंदी-प्रचार-परिषद की अपील

हिंदी-प्रचार-परिषद लन्दन में भारत की राष्ट्रभाषा के प्रचार में रत है । नियमित रूप से हिंदी की कक्षाएं चलाना और साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना, संस्था की मुख्य गतिविधि है । संस्था की ओर से "प्रवासिनी" नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित हो रही है । संस्था ने अपील की है कि प्रत्येक हिंदी प्रेमी किसी भी स्तर की कम से कम एक हिंदी पुस्तक समुद्री डाक से परिषद को निम्न पते पर भेजने की कृपा करें -

हिंदी प्रचा[र] परिषद, 141 [illegible], लन्दन, डब्ल्यू-1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए प्रकाशन

पाठकों के अनुरोध पर हम हिंदी-प्रकाशन-संस्थाओं के नए और महत्वपूर्ण प्रकाशनों के साथ-साथ उन संस्थाओं के विषय में संक्षिप्त परिचयात्मक टिप्पणी सुविधानुसार प्रकाशित करेंगे । इच्छुक संस्थाएं परिचयात्मक टिप्पणी प्रकाशनार्थ भेज सकती हैं । टिप्पणी तथ्यात्मक और संक्षिप्त होनी चाहिए । सूचीपत्रादि तथा प्रकाशन साहित्य भी भेजें ।

- संपादक

दर्शन:धर्म:कला

डा० राधाकृष्णन्	25-00
भारतीय दर्शन, पूर्वार्ध	
भारतीय दर्शन उत्तरार्ध	
प्राच्य धर्म और पाश्चात्य विचार	15-00
भगवद्गीता	14-00
धर्म और समाज	10-00
सत्य की ओर	6-00
पूर्व और पश्चिम : कुछ विचार	5-00
राधाकमल मुखर्जी -	
भारत की संस्कृति और कला	12-00

आज के लोकप्रिय हिंदी कवि माला

हिंदी कविता के मर्मज्ञ साहित्यकारों द्वारा संपादित । प्रत्येक का मूल्य- 3-00
महादेवी वर्मा, अज्ञेय, सुमित्रानंदन पंत, बच्चन, रामधारी सिंह 'दिनकर', नीरज, रामावतार त्यागी, भगवती चरण वर्मा, गिरिजाकुमार माथुर, माखनलाल चतुर्वेदी, अंचल, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ।

सचित्र विश्वकोश

विषयानुसार दस खंडों में, प्रत्येक खंड का मूल्य 7 रु०

शेक्सपीयर के नाटक : अनु० डा० रांगेय राघव - प्रत्येक का मूल्य 2-50

ओथेलो, मैकबेथ, निष्फल प्रेम, भूल-भुलैयां, बारहवीं रात, जैसा तुम चाहो, जूलियस सीज़र, हैमलेट, रोमियो जूलियट, वेनिस का सौदागर ।

संस्कृत के अमर ग्रंथ : अधिकारी विद्वानों द्वारा अनूदित

कौटिल्य अर्थशास्त्र, बाल्मीकि रामायण, हितोपदेश, पंचतंत्र, अभिज्ञान शाकुंतल, कुमार संभव, कादम्बरी, मृच्छकटिक, दशकुमार चरित, मुद्राराक्षस, रघुवंश, स्वप्नवासवदत्ता ।

ये प्रकाशन दिल्ली की प्रकाशन-संस्था - 'राजपाल एण्ड सन्स' के हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संस्था द्वारा अब तक एक हज़ार से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें बड़ी संख्या हिंदी प्रकाशनों की ही है। ये प्रकाशन सभी तरह के पाठकों की मांग और रुचि को पूरा करते हैं - जैसे : अनुसंधान, आलोचना, निबन्ध, शिक्षा-विज्ञान, धर्म, दर्शन, संस्कृति, चरित्र-निर्माण, जीवन-कला, मनोविज्ञान, यौन-मनोविज्ञान, उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, कविता, जीवन-चरित्र, संस्मरण, आत्मकथा, यात्रा, साहसिक वृतान्त, महिलोपयोगी, समाज-शिक्षा, बाल-साहित्य, लोक-कथाएं, ज्ञान-विज्ञान, स्वास्थ्य-सौंदर्य, गांधी-साहित्य।

संस्था ने ऐसी पुस्तक-मालाओं का प्रकाशन किया है, जो अपनी उपयोगिता और लोकप्रियता के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें से अनेक प्रकाशन केन्द्रीय शिक्षा-मंत्रालय, पंजाब भाषा-विभाग, उत्तरप्रदेश हिंदी समिति, बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद आदि द्वारा पुरस्कृत हैं।

हाल ही में संस्था ने बड़े आकार की दस जिल्दों में, विशेषज्ञों द्वारा तैयार किए गए 'सचित्र विश्वकोश' का प्रकाशन किया है, जिसमें ज्ञान-विज्ञान की प्रामाणिक और नवीनतम जानकारी दी गई है। कोश में दो हजार से अधिक रंगीन और दुर्लभ चित्र हैं।

सचित्र विश्वकोश

ज्ञान-विज्ञान की प्रामाणिक, तथ्यपूर्ण और नवीनतम जानकारी तथा दो हजार से अधिक चार रंगे और दुर्लभ चित्रों से भरपूर विश्वकोश।

विषयानुसार इन 10 खण्डों में -

1- पृथ्वी, आकाश खनिज	2- जीव-जन्तु, पेड़-पौधे
3- मनुष्य : विकास, स्वास्थ्य, खेल-कूद	4- राजनीति, प्रशासन, धर्म
5- कृषि, उद्योग, व्यापार, शिल्प	6- आविष्कार, खोज, हाबी, पर्यटन
7- विज्ञान, वैज्ञानिक, आविष्कारक	8- साहित्य, कला, दर्शन, पुराणकथा
9- इतिहास, प्रमुख व्यक्ति, घटनाएं	10- देश और निवासी, प्रमुख नगर

== 000 ==

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए ले॰ वी॰ ज़ेलेनिन पृ॰ 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले॰ हरीराम गुप्त पृ॰ 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोश पृ॰ 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले॰ रामचंद्र वर्मा पृ॰ 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु॰ वार्षिक 7.50 रु॰

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो॰ ए॰ चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

वर्ष 2 अंक 7

31-5-68

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817/66

गुरुकुल कांगड़ी

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 मार्च 1968 अंक 7

0 भाषा अंचल (साहित्य अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी के पुरस्कार आदि)

0 हिंदी संस्थाएं (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद — गतांक से आगे)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा अहिंदी भाषियों को हिंदी सिखाने का काम विधिवत् आरंभ हो गया है। शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रो0 शेर सिंह ने एक संक्षिप्त आयोजन में 1 मार्च, 1968 को इस पाठ्यक्रम के पहले पाठ का औपचारिक प्रेषण किया। इस द्विवर्षीय पाठ्यक्रम को पूरा करने पर शिक्षार्थी को 'प्रवेश' प्रमाणपत्र दिया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में लगभग 650 अहिंदी भाषी भारतीय तथा कुछ विदेशी भर्ती किए गए हैं। विदेशियों, सरकारी कर्मचारियों, केंद्रीय स्कूल संस्थान के शिक्षकों आदि के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जा रही है।

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, 15/16 नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली-6 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संघ

साहित्य अकादेमी के पुरस्कार

साहित्य अकादेमी प्रतिवर्ष विभिन्न भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट कृतियों को पुरस्कृत कर के साहित्यकारों का सम्मान करती है और नए साहित्यकारों को प्रोत्साहन देती है । यह पुरस्कार योजना सन् 1954 से प्रारंभ हुई थी । पुरस्कार स्वरूप एक ताम्र-प्रशस्ति पत्र तथा 5000 रुपये का चैक दिया जाता है । सन् 1967 के पुरस्कार विभिन्न भाषाओं के 14 साहित्यकारों को दिए गए । 27 फरवरी, 1968 को राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में, राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने पुरस्कार वितरित किए । पुरस्कार प्राप्त करने वाले साहित्यकारों तथा संबंधित भाषा के नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री त्रैलोक्य नाथ गोस्वामी -(असमिया); बुद्धदेव बोस (बंगला); भवानी भट्टाचार्य (अंग्रेजी); प्रबोध बी० पंडित (गुजराती); अमृत लाल नागर (हिंदी); डी० वी० गुंडप्पा (कन्नड़); अमीन कामिल (कश्मीरी); पी० के० नायर (मलयालम); एन० जी० कालेलकर (मराठी); पूर्ण नारायण दास (उड़िया); शिव कुमार (पंजाबी); राम रूप पाठक (संस्कृत); के० वी० जगन्नाथ (तमिल); और कुर्रतुल-ऐन-हैदर (उर्दू) ।

पुरस्कार वितरण समारोह में भाषण करते हुए राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने लेखकों से अनुरोध किया कि वे अपनी-अपनी भाषा में साहित्य का सृजन आम जनता को ध्यान में रखकर करें ।

संगीत नाटक अकादेमी के पुरस्कार

संगीत नाटक अकादेमी ने भी 1967 के लिए दस कलाकारों को पुरस्कृत किया । पुरस्कृत कलाकारों के नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री बालसुब्रह्मण्यम शास्त्रीगल (भागवतमेला नाटकम्), कला मंडलम कृष्णन् नायर (कथकली), पी० एल० देशपांडे (नाटककार), शचीन्द्रनाथ दत्त (अभिनय), एस० वी० सहस्रनामम् (अभिनय), श्री कृष्ण पहलवान (नौटंकी), अमीरखां (हिंदुस्तानी गायन), अयोध्या प्रसाद (हिंदुस्तानी वाद्य संगीत), शंकर राव (कर्नाटक गायन), के० एस० वेंकटरामैया (कर्नाटक वाद्य संगीत) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

इसके अतिरिक्त अकादेमी ने आठ कलाकारों को अकादेमी की 'फैलोशिप' भी प्रदान की ।

राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने 22 फरवरी, 1967 को पुरस्कार वितरित किए । समारोह में भाषण करते हुए डा० जाकिर हुसैन ने कहा कि ललितकलाओं के क्षेत्र में काम करने वाले सभी कलाकारों को राष्ट्रीय एकता की भावना को लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए ।

अखिल भारतीय बाल-साहित्य प्रतियोगिता के परिणाम

शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित अखिल भारतीय बाल-साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता, 1967 के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं । इसके अंतर्गत आधुनिक भारतीय भाषाओं की कुछ पुस्तकों तथा पांडुलिपियों को पुरस्कार के लिए चुना गया है । लेखकों तथा उनकी कृतियों के नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री गांतु तमुली - मणिमाणी आरु भास्कर फुकानी (असमिया); शैल घोष - मितुल नामे पुतुलटी (बंगला); सोनी हरी और रसिक शाह - सचराचर ने घर कोचटी (गुजराती); श्रीमती कुन्त जैन - टिक टिक टुन टुन (हिंदी); देव मित्र - दूरबीन की कहानी (हिंदी); के० एस० करूगुर - अब्बा-न-र-पुत्र प्रतिभा (कन्नड़); एस० एल० साधु - ज्ञान विलक्षांट (कश्मीरी); राजम्मा बालकृष्णन् - आनो लीनिकाकुने (मलयालम); नारायण गोपालभरत - मोगरा आता चतर (मराठी); अनंत पटनायक - छबिटिकी मारटिए (उड़िया); सरदार हरिन्दर सिंह - गुलर पा को राकेट (पंजाबी); कल्याण भम्बानी - हीरें बुखारिऊं (सिंधी); नटराज रामकृष्ण - नीति कथा (तेलुगु); टी० आर० नरसिंहैयर - नाडु कथा कल्लाणि (तमिल); और अख्तर मरोह - हमारा हिंदुस्तान (उर्दू) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी संस्थाएं

बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना - (गतांक से आगे)

वित्त-व्यवस्था : परिषद का सम्पूर्ण व्यय बिहार की राज्य सरकार वहन करती है। परिषद का वार्षिक बजट लगभग 2 लाख रुपए का है।

प्रशासन-व्यवस्था : परिषद के प्रशासन तथा कार्य-संचालन के लिए दो समितियां हैं - सामान्य समिति और संचालक मंडल। सामान्य समिति परिषद की सामान्य नीतियों और कार्यक्रमों को निर्धारित करती है तथा वार्षिक बजट को स्वीकार करती है। इस समय सामान्य समिति के 27 सदस्य हैं। इनमें राज्य के लोक नेता, उच्च अधिकारी और विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित विद्वान सम्मिलित हैं। राज्य के शिक्षा मंत्री परिषद के पदेन सभापति हैं। संचालक मंडल का काम सामान्य समिति द्वारा निर्धारित नीतियों तथा कार्यक्रमों को कार्यरूप देना है। बिहार के शिक्षा मंत्री मंडल के पदेन अध्यक्ष हैं।

कार्यकलाप : परिषद की देख-रेख में इस समय निम्नलिखित विभाग कार्य कर रहे हैं :-

प्रकाशन विभाग : साहित्य, संस्कृति, कला, विज्ञान आदि विभिन्न विषयों के मौलिक, शोधपूर्ण तथा उच्च कोटि के ग्रंथों का प्रकाशन और विक्रय इस विभाग का प्रमुख कार्य है। साहित्य और संस्कृति, पुरातत्व और इतिहास, साहित्य का इतिहास, विज्ञान, धर्म और दर्शन, भाषा विज्ञान, लोक साहित्य, कोश तथा इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, प्राचीन समर नीति, मनोविज्ञान, हस्त-शिल्प और सामान्य ज्ञान आदि विभिन्न विषयों से संबंधित लगभग 100 ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ शोध विभाग : प्राचीन पांडुलिपियों, दुर्लभ मुद्रित पुस्तकों, अलभ्य पत्र-पत्रिकाओं आदि की खोज की जाती है तथा उन्हें ग्रंथाकार प्रकाशित किया जाता है। प्राचीन हस्तलिखित पोथियों के छह खंड दरिया ग्रंथावली, हरिचरित आदि महत्वपूर्ण ग्रंथ विभाग द्वारा अब तक प्रकाशित किए जा चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गुरुकुल कांगड़ी

लोकभाषा-अनुसंधान विभाग : यह विभाग बिहार की विभिन्न बोलियों के साहित्य का संग्रह करता है । अब तक कृषिकोश के दो खंड, कहावत कोश, मगही संस्कार गीत, लोककथा कोश, लोकभाषा परिचय और लोकसाहित्य आदि ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं ।

अनुसंधान पुस्तकालय : यह पुस्तकालय अपने बहुमूल्य ग्रंथ-संग्रह तथा अन्य प्राचीन पत्रिकाओं द्वारा शोधकर्ताओं को लाभ पहुंचा रहा है । इस समय पुस्तकालय में लगभग 15000 पुस्तकें तथा 10 हजार पत्र-पत्रिकाओं की जिल्दें हैं । समस्त भारत के सौ से ऊपर दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र इस पुस्तकालय में आते हैं ।

परिषद की पुरस्कार योजना के अंतर्गत निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाते हैं :-

वयोवृद्ध साहित्यिक सम्मान पुरस्कार : इसके अंतर्गत प्रति वर्ष एक वयोवृद्ध साहित्यकार को डेढ़ हजार रुपये, ताम्र प्रशस्ति के साथ, सम्मान-पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए जाते हैं ।

उदीयमान साहित्यिक प्रोत्साहन पुरस्कार : इस योजना के अन्तर्गत 500 रु० का प्रोत्साहन पुरस्कार प्रतिवर्ष एक उदीयमान साहित्यकार को दिया जाता है ।

ग्रंथ पुरस्कार : यह पुरस्कार अखिल भारतीय स्तर के ग्रंथों पर दिया जाता है । अब तक इसके अंतर्गत लगभग 25 ग्रंथ पुरस्कृत हो चुके हैं ।

बिहारी लेखक ग्रंथ पुरस्कार : यह पुरस्कार बिहार के लेखकों को उच्च कोटि की रचना पर दिया जाता है । अब तक यह पुरस्कार 18 लेखकों को दिया जा चुका है ।

छात्र निबंध प्रतियोगिता पुरस्कार : इस योजना के अंतर्गत बिहार राज्य के विश्वविद्यालय के छात्रों से निर्धारित विषयों पर निबंध आमंत्रित किए जाते हैं और प्रथम दस निबंधों पर सौ-सौ रुपए के पुरस्कार दिए जाते हैं ।

भाषणमाला : इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रति वर्ष दो या तीन प्रतिष्ठित विद्वानों के ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित भाषण आयोजित किए जाते हैं । इन भाषणों को बाद में पुस्तक रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है । भाषणमाला के अंतर्गत अब तक तीस से ऊपर भाषण आयोजित किए जा चुके हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्था अनुदान : इस योजना के अंतर्गत साहित्यिक संस्थाओं को मौलिक साहित्य के प्रकाशनार्थ अनुदान देने की व्यवस्था है । अब तक बिहार की 30 से अधिक संस्थाओं को अनुदान दिया जा चुका है ।

राजेन्द्र निधि : इस निधि की स्थापना भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व0 डा0 राजेन्द्र प्रसाद की प्रेरणा और उनके अनुदान से सन् 1954 में की गई थी । इस निधि में राज्य सरकार प्रति वर्ष एक निश्चित राशि देती रही है । इस निधि में से अभावग्रस्त साहित्यकारों को अनुदान दिया जाता है ।

उपर्युक्त योजनाओं और कार्यक्रमों के अतिरिक्त परिषद की सीरीज़ में संस्कृत, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी तथा दक्षिण भारतीय भाषाओं के उच्चकोटि के ग्रंथों के अनुवाद प्रकाशित करने की व्यवस्था भी है ।

परिषद्-पत्रिका : परिषद की यह त्रैमासिक पत्रिका अप्रैल 1961 में प्रारंभ हुई थी । शोधपूर्ण तथा उत्कृष्ट सामग्री के कारण पत्रिका विद्वानों तथा शोध-छात्रों के बीच लोकप्रिय है ।

वार्षिकोत्सव : परिषद प्रति वर्ष अपना वार्षिकोत्सव मनाती है । इस अवसर पर उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा भारत की प्रमुख भाषाओं तथा उपभाषाओं के साहित्य पर निबंध पढ़े जाते हैं । अब तक मैथिली, मगही, भोजपुरी, अंगिका, नागपुरी, संताली, उरांव, हो, अवधी, बैसवाड़ी, ब्रजभाषा, राजस्थानी, निमाड़ी, छत्तीसगढ़ी और नेपाली लोक भाषाओं पर निबंध पढ़े जा चुके हैं । अब तक पढ़े गए निबंधों को चतुर्दश भाषा निबंधावली तथा पंचदश लोकभाषा निबंधावली शीर्षकों से दो ग्रंथों में प्रकाशित किया जा चुका है । अध्यक्षीय भाषणों को भी पुस्तकाकार प्रकाशित किया जा चुका है । परिषद का षोडश वार्षिकोत्सव 3 और 4 जनवरी 1968 को सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण के सभापतित्व में संपन्न हुआ था । राज्यपाल श्री नित्यानंद कानूनगो ने समारोह का उद्घाटन किया तथा सदस्यता-सम्मान-पत्र प्रदान किए । 4 जनवरी को डा0 रामसिंह 'तोमर' ने 'अपभ्रंश भाषा और साहित्य' पर अपना निबंध पढ़ा । परिषद अपने निदेशक के प्रशासनिक नियंत्रण और मार्गदर्शन में कार्य करती है । परिषद का अपना स्थायी कार्यालय और भवन सैदपुर विस्तार पथ, राजेन्द्रनगर, पटना-4 में है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

0 हिंदी

* भारत सरकार में

– शिक्षा मंत्रालय : हिंदी अध्यापक शिविर का आयोजन

केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के तत्वावधान में अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ के सहयोग से वर्धा में महाराष्ट्र-राज्य के लिए सात दिन का हिंदी अध्यापक शिविर आयोजित किया। शिविर का उद्घाटन 'तरुण भारत' नागपुर के संपादक तथा मराठी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री ग० त्र्य० माडखोलकर द्वारा 5 फरवरी 1968 को सम्पन्न हुआ। शिविर का समापन गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमन्नारायण द्वारा हुआ।

शिविर में महाराष्ट्र राज्य सरकार तथा महाराष्ट्र राज्य में स्थित हिंदी संस्थाओं से लगभग 42 प्रचारकों और अध्यापकों ने भाग लिया। शिविर में हिंदी के प्रचार-प्रसार और शिक्षण संबंधी विभिन्न विषयों और समस्याओं पर विद्वानों के भाषण हुए। प्रमुख वक्ता सर्वश्री हृषीकेश शर्मा, डा० कमलाकान्त पाठक, रामेश्वरदयाल दुबे, बाबा साहेब भागे, आनंदेश शर्मा, अनन्तगोपाल शेवड़े, श्रीमती रमाबाई जे० सिंह, डा० शिवकुमार मिश्र और श्री गो० प० नेने थे।

इसी अवसर पर निदेशालय की ओर से लगभग 33 विषयों पर हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी दिनांक 9 से 11 फरवरी तक आयोजित की गई। प्रदर्शनी का उद्घाटन श्री व्ही० एस० गोखले, जिला सत्र न्यायाधीश ने किया। इसी सिलसिले में नागपुर और औरंगाबाद में भी प्रदर्शनी आयोजित की गई।

विपणन और निरीक्षण निदेशालय, नागपुर : हिंदी कार्य में प्रगति

फाइलों पर हिंदी में टिप्पणी : [illegible] (वाराणसी), लखनऊ, राजकोट, नई दिल्ली, ब्यावर, धमतरी, कानपुर, गाजियाबाद, गुंटूर, बीकानेर और जयपुर स्थित ग्यारह अधीनस्थ कार्यालयों में फाइलों पर अधिकांश टिप्पणियां हिंदी में लिखी जाती हैं। मुख्यालय के हिंदी एकक में फाइलों पर टिप्पणियां पूर्ण रूप से और सांख्यिकीय, प्रशासन, विपणन और कृषि-विपणन अनुभागों में आंशिक रूप से हिंदी में ही लिखी जाती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में पत्र-व्यवहार : हिंदी-भाषी राज्यों में स्थित कार्यालयों से संस्थाओं । किसानों आदि को भेजे जाने वाले कुल पत्रों में लगभग 30 प्रतिशत पत्र हिंदी में भेजे जाते हैं । मुख्यालय तथा अधीनस्थ कार्यालयों में प्राप्त हिंदी पत्रों का उत्तर हिंदी में ही देने का प्रतिशत क्रमशः बढ़ता जा रहा है । मूलतः हिंदी में लिखे जाने वाले पत्रों आदि की भी संख्या बढ़ती जा रही है ।

पत्र-पत्रिकाएं : इस निदेशालय की वार्षिक पुस्तक 'ऐगमार्क ग्रेडिंग स्टैटिस्टिक्स' (एगमार्क श्रेणीकरण आंकड़े) हिंदी और अंग्रेजी में निकलती है । अंग्रेजी में निकलने वाले 'मार्केटिंग न्यूज़लैटर' नामक पत्र को हिंदी में भी निकालने का निश्चय किया गया है ।

रिपोर्टें : आम लोगों के लिए विविध कृषि-पदार्थों के बारे में अंग्रेजी में प्रकाशित शोधपूर्ण रिपोर्टों आदि का हिंदी अनुवाद किया जाता रहा है । सन् 1967 के प्रारंभ में ऐसी अनूदित रिपोर्टों आदि की संख्या तेरह थी ।

प्रश्नावलियां : प्रश्नावली-पत्रकों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग किया जाता रहा है ताकि वे आम लोगों के लिए सुग्राह्य हो सकें ।

कार्यालयों तथा अधिकारियों के नामपट्ट, लैटर हैड, रबड़ स्टांप आदि हिंदी में तैयार कर लिए हैं और श्रेणीकरण केन्द्रों में इस्तेमाल किए जाने वाले एगमार्क प्रपत्र आदि हिंदी में बनाने की योजना है ।

नवसाक्षरों और/या बच्चों तथा किशोरों के साहित्य की यूनेस्को प्रवर्तित राष्ट्रीय प्रतियोगिता

शिक्षा मंत्रालय द्वारा उपर्युक्त प्रतियोगिता के लिए भारतीय भाषाओं की मौलिक पांडुलिपियां आमंत्रित की गई हैं । इस प्रतियोगिता के अंतर्गत हिंदी को 3 पुरस्कार तथा असमिया, बंगला, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू के लिए एक-एक पुरस्कार दिया जायगा । पुरस्कार की राशि 1650 रुपये है । पांडुलिपि लगभग 40000 शब्दों की होनी चाहिए । पुरस्कृत पांडुलिपि की मुद्रित प्रतियां खरीदने की व्यवस्था भी है । पांडुलिपियां प्राप्त करने की अंतिम तारीख 15-4-1968 है । विस्तृत जानकारी के लिए सहायक शिक्षा सलाहकार, एस0 ई0 2, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली को लिखें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

- दिल्ली अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित एक बैठक में "राष्ट्रीय एकता के लिए लोक सम्पर्क की भूमिका" विषय पर भाषण करते हुए केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री के0के0 शाह ने कहा कि देश में राष्ट्रीय एकता तथा लोक सम्पर्क के लिए अंग्रेजी के समाचार पत्रों की अपेक्षा देशी भाषाओं के पत्र अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

- गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने लोक सभा में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत 1 लाख 94 हजार 866 कर्मचारी हिंदी की परीक्षाएं पास कर चुके हैं। इस के अतिरिक्त 7194 कर्मचारियों ने हिंदी टाइपिंग तथा 1163 कर्मचारियों ने हिंदी आशुलेखन की परीक्षाएं पास की हैं।

- कार्शियल एंड सैक्रेटेरियल इन्स्टीट्यूट, नई दिल्ली के पांचवें वार्षिक समारोह में भाषण करते हुए रोजगार, प्रशिक्षण और तकनीकी शिक्षा के निदेशक श्री सैयद आबेदिन ने कहा कि देश के विभिन्न कार्यालयों में हिंदी का प्रसार बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में यह जरूरी है कि तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था हिंदी के माध्यम से की जाए।

- केरल स्थित राघवरमपुरम के हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के 105 छात्रों और अध्यापकों का एक दल, प्रिंसिपल श्रीमती लक्ष्मी कुट्टी अम्मा के नेतृत्व में, हिंदी प्रदेशों की अध्ययन-यात्रा के सिलसिले में 20-21 फरवरी को राजधानी में आया। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने उनके निवास और पर्यटन की व्यवस्था के अलावा उनके स्वागत में परिचय-गोष्ठी का आयोजन किया। इसमें हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि डा0 हरिवंश राय बच्चन तथा डा0 रामधारी सिंह दिनकर के अतिरिक्त शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त शिक्षा सलाहकार डा0 परमेश्वरदीन शुक्ल भी उपस्थित थे। गोष्ठी की अध्यक्षता शिक्षा राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने की।

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उपकुलपतियों की एक अनौपचारिक सलाहकार समिति नियुक्त की है। यह समिति आयोग को उच्च शिक्षा के विकास और नीति से संबंधित विभिन्न विषयों, विभिन्न विश्वविद्यालयों के बीच समन्वय और शिक्षा संबंधी अन्य समस्याओं पर सलाह देगी। समिति में 15 सदस्य होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

उत्तर प्रदेश : काशी हिंदू विश्वविद्यालय के 52वें शिलान्यास दिवस पर भाषण करते हुए उपकुलपति डा० एस० जोशी ने घोषणा की कि अगले सत्र से कला और विज्ञान की शिक्षा हिंदी में दी जाएगी। पांच वर्ष के भीतर इंजीनियरी, चिकित्सा विज्ञान आदि सभी संकायों में हिंदी के माध्यम से शिक्षा दी जाने लगेगी।

काश्मीर : अगले सत्र से कुछ प्राथमिक स्कूलों में कश्मीरी, डोगरी और बोधी भाषाओं में पढ़ाई शुरु की जाएगी। सरल उर्दू की पढ़ाई फारसी और देवनागरी लिपियों में, दूसरी कक्षा में शुरु होगी।

गुजरात :

- नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से अहमदाबाद में एक चार दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है। इसमें अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती और मराठी की लगभग 5000 पुस्तकें प्रदर्शित की जाएंगी। इस अवसर पर 'पुस्तक प्रकाशन' और 'पुस्तक-पठन की आदतों पर प्रकाशकों तथा वितरकों का योगदान' विषयोंपर विचार गोष्ठियां भी होंगी।

- अहमदाबाद स्थित इंस्टीट्यूशन आफ इंजीनियर्स के 43वें वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए उपप्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने कहा कि सभी प्रकार की शिक्षा, जिसमें इंजीनियरी की शिक्षा भी शामिल है, प्रादेशिक भाषाओं में दी जानी चाहिए। उन्होंने मत प्रकट किया कि इंजीनियरी के अध्ययन के लिए अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाए रखना दकियानूसी सुझाव है।

पंजाब

- पंजाब सरकार ने राज्य में हिंदी भाषा के विकास के लिए 21 सदस्यों की हिंदी भाषा समिति बनाई है। यह समिति पंजाब में राष्ट्रभाषा हिंदी की उन्नति और विकास के लिए सुझाव देगी और 1967 के राज्यभाषा अधिनियम के अधीन काम करेगी।

- पंजाब राज्य के मंत्रिमंडल ने फिरोजपुर में हुई एक बैठक में यह निश्चय किया है कि मील के पत्थरों, सड़कों तथा सरकारी कार्यालयों के बोर्डों आदि पर पंजाबी के साथ-साथ हिंदी का भी प्रयोग होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार : डाकतार विभाग ने बिहार परिमंडलों की टेलीफोन निर्देशिका का हिंदी संस्करण प्रकाशित किया है।

मध्यप्रदेश : जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में दीक्षांत भाषण करते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि डा० रामधारी सिंह दिनकर ने कहा कि अंग्रेजी के कारण हमारे देश में सृजनात्मक शक्ति और प्रतिभा का विकास नहीं हो सका। इससे एक ओर तो शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या सीमित हो गई और दूसरी ओर शिक्षित तथा प्रतिभाशाली लोगों के विचार जनता तक नहीं पहुंच सके क्योंकि उनकी भाषा जनता की भाषा से भिन्न थी।

महाराष्ट्र :

– वर्धा स्थित श्रीमती जानकी देवी बजाज विज्ञान महाविद्यालय के संचालक मंडल ने निर्णय किया है कि आगामी सत्र से विज्ञान की शिक्षा हिंदी और मराठी के माध्यम से दी जाएगी। वर्धा के गोविन्दराम सेकसरिया वाणिज्य महाविद्यालय में सन् 1946 से वाणिज्य विषयों की पढ़ाई मातृभाषा के माध्यम से हो रही है और उसमें आशातीत सफलता मिली है।

बम्बई के भाषाविद् श्री पी० शेषाद्रि एक ऐसा शब्दकोश बना रहे हैं जिसमें सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों का समावेश होगा।

– महाराष्ट्र सरकार के मुख्यमंत्री श्री वी०पी० नाईक ने राज्य विधान सभा में बताया कि महाराष्ट्र सरकार ने मध्यप्रदेश, गुजरात और बिहार की सरकारों के साथ सरकारी पत्र-व्यवहार हिंदी में करने का फैसला किया है। उन्होंने यह भी बताया कि महाराष्ट्र सरकार, योग्य कर्मचारियों के अभाव में फिलहाल, केन्द्र के साथ हिंदी में पत्र व्यवहार नहीं कर सकती है किंतु यदि केंद्रीय सरकार उनके साथ हिंदी में पत्र-व्यवहार करे तो उन्हें आपत्ति नहीं होगी।

मैसूर : मैसूर राज्य में, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की विभिन्न परीक्षाओं में लगभग 35000 छात्र सम्मिलित हुए। हिंदी विरोध के बावजूद इस राज्य में हिंदी पढ़ने वालों के उत्साह में कोई कमी नहीं आई। सभा के एक प्रवक्ता के अनुसार सभी केन्द्रों में परीक्षार्थियों की उपस्थिति शत-प्रतिशत थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालयों में

मैसूर विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग - गतवर्ष के उल्लेखनीय कार्य :

मैसूर विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग का परिचय "समाचार जगत" के दिसंबर, 1966 अंक में दिया जा चुका है। विभाग के गत वर्ष के महत्वपूर्ण कार्यों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।

विभाग ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से नवंबर 1967 में एक व्याख्यानमाला आयोजित की। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री के० आर० रामचंद्रन ने किया। व्याख्यानमाला में डा० विजयपाल सिंह, प्रो० नागप्पा, डा० राधा प्रसाद सिंह, डा० हिरण्मय और श्री गु० सच्चिदानंद ने रीति कालीन साहित्य के विभिन्न पक्षों पर भाषण दिए। व्याख्यानमाला से एम०ए० (हिंदी) के छात्रों के अतिरिक्त लगभग दो सौ अध्यापकों, प्रशासन महाविद्यालयों के छात्रों और शोध-छात्रों ने लाभ उठाया।

गत वर्ष निम्नलिखित शोध प्रबंधों को पी-एच०डी० की उपाधि के योग्य ठहराया गया :-

शोध का विषय	शोधकर्ता का नाम
1- हिंदी एवं कन्नड की साहित्यिक प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन (ई० सन् 1800) तक)	श्री एस० एस० कृष्णमूर्ति
2- हिंदी एवं कन्नड के अलंकार शास्त्रीय ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन	श्री वी० कृष्णस्वामी आयंगार
3- हिंदी एवं कन्नड के रामायण काव्यों के चरित्रों का तुलनात्मक अध्ययन	श्री एन०एस० रामचन्द्र स्वामी

इसके अतिरिक्त 17 शोध छात्र विभिन्न विषयों पर शोध कार्य कर रहे हैं।

विभाग की ओर से हिंदी-कन्नड कोश की योजना पर काम शुरु हो गया है। हिंदी शब्द-सागर में अनुपलब्ध 500 शब्दों का संग्रह हिंदी उपन्यास साहित्य से किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय की ओर से गत वर्ष से एक द्विवर्षीय हिंदी पाठ्यक्रम भी शुरु किया गया है ।

भारतीय हिंदी परिषद का रजत-जयंती अधिवेशन

विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों और शोध-छात्रों की संस्था भारतीय हिंदी परिषद् का रजत जयंती समारोह हैदराबाद में दिसंबर मास में सम्पन्न हुआ । इस में सम्पूर्ण भारत के विश्वविद्यालयों तथा कुछ विदेशी विश्वविद्यालयों से लगभग 500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया । सभापति पद से भाषण करते हुए हिंदी के प्रसिद्ध समालोचक डा० भगीरथ मिश्र ने कहा कि आंध्र प्रदेश ने हिंदी को कृष्ण भट्ट, देवर्षि, सेनापति और पद्माकर जैसे उच्च कोटि के कवि दिए हैं अतः हिंदी साहित्य आंध्र प्रदेश का ऋणी है । उन्होंने साहित्य में धर्म, जाति, प्रदेश और सम्प्रदाय से ऊपर उठ कर एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया । परिषद ने एक प्रस्ताव द्वारा अपील की है कि क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग के लिए राज्यों में तथा सम्पर्क भाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग के लिए देश भर में उचित वातावरण तैयार किया जाए । एक अन्य प्रस्ताव में यह कहा गया है कि राष्ट्रीय एकता के लिए विदेशी भाषा का प्रयोग यथाशीघ्र बंद हो जाना चाहिए ।

विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० रेड्डी ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भारतीय भाषाओं में तथा संविधान में हिंदी को जो विशिष्ट पद प्राप्त है उसका कारण यह है कि हिंदी इस देश में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है । उसका यह अधिकार इतिहास सिद्ध है ।

समारोह में अनेक विचार गोष्ठियां तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए । डा० रामकुमार वर्मा की अध्यक्षता में एक कवि सम्मेलन भी हुआ जिसमें अनेक प्रसिद्ध और नवोदित कवियों ने भाग लिया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

मारीशस में हिंदी का व्यापक प्रचार

हिन्दी महासागर के नन्हें द्वीप मारीशस में न केवल हिन्दी बोली तथा समझी जाती है बल्कि वहां अनेक वर्षों से हिन्दी साहित्य का विधिवत् सर्जन भी हो रहा है। मारीशस के साथ भारतीयों का संबंध लगभग ढाई सौ साल पुराना है। वहां बसने वाले भारतीय बंगाल, बिहार, असम, उत्तर प्रदेश, गुजरात तथा दक्षिण के विभिन्न प्रदेशों से मजदूरों के रूप में ले जाए गए थे। संभवतः इनमें बिहार और पूर्वी उत्तर-प्रदेश के लोगों की संख्या अधिक थी अतः वहां भोजपुरी का व्यापक प्रचार है। इन लोगों ने अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए अपनी भाषा और अपनी संस्कृति की रक्षा की है।

मारीशस में हिंदी का प्रचार बीसवीं शताब्दी से प्रारंभ हुआ था। वहां सन् 1909 में आर्य समाज के कार्यकर्ता डा0 मणिलाल ने साप्ताहिक पत्र "हिन्दुस्तानी" का प्रकाशन आरंभ किया था। इसके बाद पंडित आत्माराम, पं0 विष्णुदयाल, स्वर्गीय पं0 रामावध तथा पं0 काशीनाथ ने अनेक पुस्तकें लिख कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। इस समय वहां अनेक प्रतिभाशाली लेखक हिंदी साहित्य के निर्माण में लगे हुए हैं। इन में सर्वश्री सोमदत्त बखोरी, जयनारायण राय, मुनीश्वरलाल चिंतामणि, ब्रजेन्द्र कुमार मधुकर, डा0 राम प्रकाश आदि नाम उल्लेखनीय हैं।

पिछले साठ वर्षों में हिंदी में अनेक पत्रिकाएं निकलीं और बंद हुई हैं। इस समय वहां "आर्योदय" और "कांग्रेस" नाम के दो साप्ताहिक पत्र, एक अर्ध-साप्ताहिक (जनता) और एक पाक्षिक पत्र (ज़माना) निकल रहे हैं।

प्रेमचंद के उपन्यास "रंगभूमि" का रूसी भाषा में प्रकाशन

सोवियत साहित्य प्रकाशन गृह लेनिनग्राद ने मुंशी प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास "रंगभूमि" को रूसी भाषा में प्रकाशित किया है। उपन्यास का अनुवाद सर्वश्री ई0 बारोविक, वी0 माखोतिन और बी0 ग्राजोनिन्निकोव ने किया है। पुस्तक की प्रस्तावना श्री वी0 बालिन ने लिखी है। आपने प्रेमचंद साहित्य पर अनेक ग्रंथ लिखे हैं। इस से पहले "गोदान", "कर्मभूमि", "गबन" और "निर्मला" रूसी भाषा में छप चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृ0सं0	मूल्य
हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद :				
समाज और राज्य-भारतीय विचार	डा0 सुरेन्द्रनाथ दीक्षित	राजनीति	-	15-00
भारतीय स्वातंत्र्य आंदोलन और हिंदी साहित्य	डा0 कीर्तिलता	साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन	-	15-00
सरोज सर्वेक्षण	डा0 किशोरीलाल	,,	1035	25-00
हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता	डा0 बेनीप्रसाद	प्राचीन सभ्यता	498	10-00
धारा प्रकाशन, 109 लूकरगंज, इलाहाबाद :				
अंतिम अध्याय	भैरव प्रसाद गुप्त	उपन्यास	404	10-00
रम्भा	,,	,,	224	5-00
श्रीएकनाथ संशोधन मंदिर, खडकेश्वर, औरंगाबाद :				
संत ज्ञानेश्वर	जगमोहनलाल चतुर्वेदी	जीवनी	184	3-00
भारती परिषद, प्रयाग :				
हिंदी प्रचार का इतिहास	जयशंकर त्रिपाठी	हिंदी प्रचार	111	3-00
हिंद पाकेट बुक्स, शाहदरा, दिल्ली :				
एक म्यान दो तलवारें	नानक सिंह	उपन्यास	218	2-00
घरौंदा	रांगेय राघव	,,	187	2-00
एरियल	अमृता प्रीतम	,,	105	1-00
तारा और बंती	यशपाल	,,	113	1-00
तीसरा खून	कर्नल रंजीत	,,	98	1-00
प्यासी धरती प्यासे लोग	कृश्न चन्दर	,,	190	2-00
व्यावहारिक हिंदी शब्दकोश	-	कोश	347	3-00
तूफान	आ0 चतुर सेन	उपन्यास	195	2-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी छाया	आस्करवाइल्ड	उपन्यास	195	2-00
चंद्र शेखर	बंकिम चन्द्र	,,	185	2-00
पत्थर युग के दो बुत	आ० चतुरसेन	,,	185	2-00

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6 :

अपराजिता	कुंवर चन्द्र प्रकाश सिंह	कविता संग्रह	116	6-00
सम सामयिक हिंदी साहित्य: उपलब्धियाँ	सम्पादक : मन्मथनाथ गुप्त	आलोचना	243	12-50
मनुष्य की उत्पत्ति और मानव जातियां	भूपेन्द्र सान्याल	नृतत्व शास्त्र	168	5-00
स्वस्थ तन स्वस्थ मन और स्वस्थ जीवन	डा० आर०एन० व्यास	समाज विज्ञान	115	3-50
उधार के पंख	आरिगपूडि	उपन्यास	152	5-00

राजपाल एंड सन्स, दिल्ली-6 :

संसार के सात महान आश्चर्यों की कहानी	जितेन्द्र कुमार मित्तल	बालसाहित्य	60	2-00
अच्छे बनो	प्राणनाथ वानप्रस्थी	,,	48	0-75
बच्चन का परवर्ती काव्य	डा० श्याम सुंदर घोष	समीक्षा	148	6-00
बासी फूल	बलवंत सिंह	उपन्यास	188	4-00
तीन एकांकी	प्रो० लक्ष्मी कुट्टी अम्मा	एकांकी	100	2-00
बैरिस्टर	बालशौरि रेड्डि	उपन्यास	182	3-50
अनाम यात्री	जान स्टेनबेक	,,	300	5-00

सामयिक प्रकाशन, 2 अन्सारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली-6 :

नन्ददास	रमेशकुमार उट्टर	समालोचना	401	15-00
छायावाद	सं० उदयभानु सिंह	,,	208	9-00
कोयले का टुकड़ा	मु० वरदराजन	उपन्यास	183	5-00

महाराष्ट्र भाषा सभा, पूना :

कवीन्द्र चंद्रिका	डा० कृष्ण दिवाकर	अभिनंदन ग्रंथ	160	5-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास लें० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – लें० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

5-7-

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2

अंक 3

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अप्रैल 1968 अंक 8

0 भाषा संगम (नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता आदि)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (राजस्थान सरकार द्वारा विभिन्न परीक्षाओं को मान्यता)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

स्थान परिवर्तन

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय), दरियागंज स्थित अपने पुराने कार्यालय भवन से उठ कर राम कृष्ण पुरम स्थित नए सरकारी भवन में आ गया है। अब से निदेशालय का पता होगा : वेस्ट ब्लाक नं0 7, राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली-22। टैलीफोन नं0 77005

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं07, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०भाषा संगम

भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए "अंतरभारती" की स्थापना

हैदराबाद शहर के विभिन्न भाषा-भाषियों के प्रतिनिधियों की एक सभा में यह निश्चय किया गया है कि भारत की विभिन्न भाषाओं के अध्ययन और साहित्य तथा संस्कृति के आदान-प्रदान के लिए "अंतरभारती" नामक एक संस्था बनाई जाए। इस संस्था का विधान बनाने और कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक तदर्थ समिति बनाई गई है जिसके अध्यक्ष श्री गोपालराव जी एकबोटे तथा संयोजक श्री भालचंद्र आपटे हैं। अंतरभारती के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम स्वीकृत किया गया है: (1) भारतीय भाषाओं के अध्ययन की सुविधा प्रदान करना, (2) विद्वानों के मिलने-जुलने तथा विचार-विनिमय की सुविधा के लिए कवि सम्मेलन, भाषण, गोष्ठियां और परिसंवाद आदि का आयोजन करना, (3) साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उत्सव मनाने की व्यवस्था करना।

समिति ने आगामी अप्रैल और मई महीनों में भारतीय भाषाओं के भक्ति-साहित्य पर "भाषणमाला" आयोजित करने का भी निश्चय किया है।

नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित 13 वीं नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। पुरस्कार के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं की 18 पुस्तकें और पांडुलिपियां चुनी गई हैं।

बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता पुरस्कार

भारत सरकार के सामुदायिक विकास और सहकारिता विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता के अंतर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं की कृतियों पर एक-एक हज़ार रुपये के 12 पुरस्कार दिए गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं में मानक ग्रंथों का प्रकाशन

भारत सरकार के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने डेक्कन कालेज पूना में भाषा विज्ञान शब्दावली के संबंध में एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया। इसमें भाषा-विज्ञान विषयक लगभग 1000 शब्दों को अंतिम रूप दिया गया और 20 ऐसी पुस्तकों की सूची तैयार की गई है जिन्हें हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में अनूदित करके अग्रता के आधार पर प्रकाशित किया जाएगा। शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने एक अधिवेशन में कहा : यदि देश भर के विद्वान अपने विषय की कम से कम एक पुस्तक (मौलिक अथवा अनूदित) अपनी-अपनी भाषा में तैयार करें तो शिक्षा के माध्यम के परिवर्तन की समस्या आसानी से हल हो सकती है। आयोग के कार्य की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आयोग ने लगभग 2 लाख पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कर लिया है। मानक ग्रंथों के अनुवाद और प्रकाशन की योजना के अंतर्गत 150 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं और 600 पुस्तकें विभिन्न भारतीय भाषाओं में शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं। लगभग 900 पुस्तकों के कापीराइट प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं।

भाषा संस्थान की स्थापना :

पंजाब सरकार चौथी योजना के अंतर्गत 25 लाख रुपये की लागत से एक भाषा संस्थान स्थापित करने पर विचार कर रही है। इस उद्देश्य के लिए नए वित्त वर्ष के योजना-बजट में आठ लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

सरकारी काम-काज में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग आवश्यक

कलकत्ता के एक समारोह में भाषण करते हुए उपराष्ट्रपति श्री वी०वी० गिरि ने कहा कि क्षेत्रीय भाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेज़ी और राष्ट्रभाषा का अध्ययन ज़रूरी है। श्री गिरि ने आगे कहा : राज्यों का प्रशासन उन्हीं की भाषाओं में चलना चाहिए। इसमें कोई गलत बात नहीं है। ऐसा तो होना ही चाहिए। हिंदी से घृणा नहीं करनी चाहिए। एक दिन वह संपर्क भाषा बनेगी ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

राजस्थान सरकार द्वारा विभिन्न हिंदी परीक्षाओं की मान्यता :

राजस्थान सरकार के भाषा विभाग ने (आदेश संख्या एफ० 4(17)भा०वि० (ए)160 दिनांक 31-12-1966) राजस्थान सरकार के अधीन नियुक्तियों के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा संचालित निम्नलिखित हिंदी परीक्षाओं की मान्यता दी है।

क्रमांक	संस्था का नाम	मान्यता दी गई परीक्षाओं के नाम	समकक्ष परीक्षा में निर्धारित हिन्दी का स्तर
1-	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद	प्रथमा	मैट्रिक
		मध्यमा (विशारद)	बी० ए०
		उत्तमा (साहित्यरत्न)	बी० ए० से उच्चतर किन्तु एम० ए० के समकक्ष नहीं
2-	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	परिचय	मैट्रिक
		कोविद	इन्टर
		रत्न	बी० ए०
3-	प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद	विदुषी	इन्टर
		सरस्वती	बी० ए०
4-	हिन्दी विद्यापीठ, देवघर	प्रवेशिका	मैट्रिक
		साहित्यभूषण	इन्टर
		साहित्यालंकार	बी० ए०
5-	ट्रावनकोर हिंदी प्रचार सभा, त्रिवेन्द्रम	प्रवेश	मैट्रिक
		भूषण	इन्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6-	असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गौहाटी	प्रबोध	मैट्रिक
		विशारद	इन्टर
7-	हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	विशारद	मैट्रिक
		भूषण	इन्टर
		विद्वान	बी० ए०
8-	बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, बम्बई	उत्तमा	मैट्रिक
		भाषारत्न	इन्टर
		साहित्य सुधाकर	बी० ए०
9-	महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना	प्रबोध	मैट्रिक
		प्रवीण	इन्टर
		पंडित	बी० ए०
10-	मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल	प्रबोध	मैट्रिक
		विशारद	इन्टर
11-	अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्, आगरा	पारंगत	बी० ए०
12-	मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलौर	प्रवेश	मैट्रिक
		उत्तमा	इन्टर
		रत्न	बी० ए०
13-	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	तीसरी	मैट्रिक
		विनीत	इन्टर
		सेवक	बी० ए०
14-	दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास	प्रवेशिका	मैट्रिक
		विशारद	इन्टर
		प्रवीण	बी० ए०
15-	हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई	काबिल	मैट्रिक
		विद्वान	इन्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिन्दी
* भारत सरकार में
हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग में प्रगति :

गृह मंत्रालय के राज्यमंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि बिहार, हरियाणा, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश की सरकारों ने अपने प्रशासनिक काम-काज के लिए हिंदी को अपनाने का निर्णय किया है। गुजरात और महाराष्ट्र की राज्य सरकारों ने निश्चय किया है कि वे केन्द्रीय सरकार से तथा उन राज्यों से हिंदी में पत्र-व्यवहार करेंगी जिन्होंने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया है। नागालैंड ने अंग्रेजी को ज्यों का त्यों रखने का निश्चय किया है। आंध्र प्रदेश, असम, जम्मू तथा कश्मीर, केरल, मद्रास, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब और पश्चिम बंगाल ने सरकारी काम-काज के लिए क्षेत्रीय भाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रयोग को चालू रखने का निश्चय किया है। नागालैंड को छोड़ कर अन्य सभी राज्यों ने प्रशासन में अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग कुछ हद तक चालू कर दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश ने केन्द्र के साथ पत्र-व्यवहार में हिंदी का प्रयोग आरंभ कर दिया है।

अहिंदी भाषी राज्यों के हिंदी लेखकों को पुरस्कार :

अहिंदी भाषी राज्यों के हिंदी लेखकों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की एक योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष पुरस्कार दिए जाते हैं। 1967 के लिए निम्नलिखित लेखकों को एक-एक हज़ार रुपये के पुरस्कार दिए गए :-

लेखक का नाम	मातृभाषा	पुरस्कृत हिंदी पुस्तक
श्री के० गणपति भट्ट	कन्नड़	अमर गाथा
श्रीमती ज्योत्स्ना देवधर	मराठी	अंतरा
श्रीमती निर्मला दर	कश्मीरी	निर्झरिणी और पत्थर
श्री मनहर चौहान	गुजराती	सीमाएं
श्री निर्मल कुमार चक्रवर्ती	बंगला	अज्ञात की ओर
श्री सदाशिव हिरेमठ	कन्नड़	नव जागरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28 मार्च, 1968 को शास्त्री भवन में आयोजित एक समारोह में शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद, परिवहन मंत्रालय के उपमंत्री श्री भक्त-दर्शन तथा शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री गिरिजाप्रसाद पाण्डेय ने अपने भाषणों में हिंदी साहित्य के विकास में अहिंदी भाषियों के योगदान पर प्रकाश डाला। समारोह में राजधानी के अनेक साहित्यकार तथा विद्वान सम्मिलित हुए।

<u>हिंदी अध्यापकों तथा नवलेखकों के प्रशिक्षण-शिविर :</u>

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय की एक योजना के अंतर्गत, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर में 18 मार्च से 24 मार्च, 1968 तक अध्यापकों के एक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन विश्व-विद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल ने किया। शिविर में अहिंदी प्रांतों के 23 हिंदी अध्यापकों ने भाग लिया। इस अवसर पर हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

निदेशालय की एक अन्य योजना के अंतर्गत 24 मार्च से 30 मार्च 1968 तक, साक्षरता निकेतन, लखनऊ में नवलेखकों को प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न भाषा भाषी तेरह लेखकों ने भाग लिया। साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचना-प्रक्रिया पर अधिकारी विद्वानों के भाषण हुए। प्रशिक्षार्थियों से कविता, कहानी आदि की रचनाएं कराई गईं। इस कार्यक्रम में सर्वश्री यशपाल, भगवती चरण वर्मा, अमृत लाल नागर, कुमुद नागर, ठाकुर प्रसाद सिंह, मन्मथनाथ गुप्त, डा0 महीप सिंह, कृष्ण नारायण कक्कड़, डा0 गोपाल शर्मा और कुलभूषण आदि ने सहयोग दिया। शिविर का उद्घाटन साक्षरता निकेतन के निदेशक श्री ए0 जे0 मुकुंद ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में श्री वीरेन्द्र सेठ से बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद का पुरस्कार वितरण समारोह :

परिषद का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह 31 मार्च, को नई दिल्ली में आयोजित किया गया । परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार-विजेताओं को उप-प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने इनाम बांटे । इस अवसर पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा : वह दिन दूर नहीं जब हिंदी के मार्ग के सब गतिरोध दूर होंगे और हिंदी का कार्य सुचारु रूप से होने लगेगा । इसी अवसर पर केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों का एक हिंदी सम्मेलन भी आयोजित किया गया । इसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया । सम्मेलन में भाषण करते हुए गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने कहा कि राजभाषा (संशोधन) अधिनियम बनने के बाद केन्द्रीय सरकार के जो कर्मचारी हिंदी में काम करना चाहते हैं उनपर कोई रोक नहीं होगी । परिषद ने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग से संबंधित एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया । इसमें हिंदी में ही सरकारी फार्म, नियम पुस्तकें, अधिनियम, हिंदी के टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर आदि प्रदर्शित किए गए ।

- उपराज्यपाल डा0 आदित्य नाथ झा ने महानगर परिषद में अपने हिन्दी अभिभाषण में कहा कि दिल्ली प्रशासन की भाषा हिंदी है और इस फैसले पर अमल के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है । कुछ विभागों में सारा काम हिंदी में होने लगा है । 15 अगस्त तक सभी विभागों में सारा काम हिंदी में होने लगेगा ।

- शिक्षा मंत्री डा0 त्रिगुण सेन ने राज्य सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि भारत संघ के 17 राज्यों में से 15 राज्यों के स्कूलों में हिंदी का अध्ययन अनिवार्य है । मद्रास तथा जम्मू और काश्मीर में हिंदी अनिवार्य नहीं है । जम्मू और काश्मीर में हिंदी का अध्ययन ऐच्छिक है । विभिन्न राज्यों में हिन्दी की पढ़ाई विभिन्न कक्षाओं से अनिवार्य है । नागालैंड में चौथी कक्षा से आठवीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य है ।

- राजधानी में होली के अवसर पर अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए । दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, नया बांस मंडल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और से गांधी मंदान में एक हास्यरस कवि सम्मेलन आयोजित किया गया । इसमें सर्वश्री निर्भय हाथरसी, काका हाथरसी, नागार्जुन, प्रभाकर माचवे, गोपाल प्रसाद व्यास आदि प्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया । कवि सम्मेलन का उद्घाटन प्रसिद्ध हास्य अभिनेता श्री आई० एस० जौहर ने किया ।

- साहित्य संस्था 'आराधना' और केरल क्लब के संयुक्त तत्वावधान में इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता मलयालम के महाकवि श्री पी० कुंजीरामन नायर का अभिनंदन किया गया । अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर ने कहा : यह श्री कुंजीरामन नायर का ही अभिनंदन नहीं है बल्कि सम्पूर्ण काव्य जगत का अभिनंदन है क्योंकि उनकी कविता क्षेत्रीय न होकर एक सार्वभौम सत्य को उद्घाटित करती है । इस अवसर पर एक कवि गोष्ठी भी हुई जिसमें श्री कुंजीरामन नायर की कुछ चुनी हुई कविताओं का अंग्रेज़ी तथा हिंदी रूपांतर प्रस्तुत किया गया । हिंदी के कवियों में श्री गिरिजाकुमार माथुर, प्रो० रमेश चंद्र गुप्त, डा० हरगुलाल तथा श्रीमती वीणागुप्त ने अपनी रचनाएं पढ़ी । काव्य पाठ के बाद काव्य पर एक परिचर्चा का आयोजन भी किया गया जिसमें केन्द्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन तथा संसद सदस्य श्री के० के० नायर ने कवि की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला ।

- शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने राज्य सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि विदेशों में हिंदी के प्रचार के लिए 5 लाख रु० की एक योजना हिंदी शिक्षा समिति ने बनाई है । विदेशों में हिंदी का प्रचार भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की देख-रेख में हो रहा है । परिषद ने ग्वाइना और ट्रिनीडाड में कुछ हिंदी अध्यापक भेजे हैं । कोलंबो, रोम, बेलग्रेड, मेलबार्न और बुखारेस्ट में भी हिन्दी कक्षाएं चल रही हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

उत्तर प्रदेश :

- उत्तरप्रदेश सरकार की पुरस्कार योजना समिति ने श्री अली अब्बास हुसैनी और स्वामी ब्रह्मानंद परिव्राजक को क्रमश: उर्दू और संस्कृत की उल्लेखनीय सेवा के लिए पांच-पांच हज़ार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है। डा0 लक्ष्मी नारायण लाल को उनकी कृति 'मन वृन्दावन' पर प्रेमचंद पुरस्कार, श्री श्रीप्रकाश को उनकी कृति 'पाकिस्तान के प्रारंभिक दिन' पर आचार्य नरेन्द्र देव पुरस्कार और डा0 हरिवंश राय बच्चन को उनकी कृति 'नागर गीत' पर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन पुरस्कार के रूप में ढाई-ढाई हज़ार रुपये की राशि देने का निश्चय किया है। हिंदी, उर्दू और संस्कृत की श्रीवृद्धि के लिए राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष 56,500 रुपये के पुरस्कार दिए गए हैं। 1968-69 के पुरस्कारों के लिए 31 मई 1968 तक रचनाएं आमंत्रित की गई हैं। विशेष विवरण के लिए सचिव, पुरस्कार योजना समिति, शिक्षा ग 2 विभाग, सचिवालय, लखनऊ से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

उड़ीसा :

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने विज्ञान के मेधावी छात्रों की वार्षिक प्रतियोगिता परीक्षाएं सभी क्षेत्रीय भाषाओं व अंग्रेजी के माध्यम से लेने का निर्णय किया है। परिषद के निदेशक डा0 एस0 के0 मित्रा ने पत्रकारों को बताया कि परीक्षाएं ज़िला स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक होंगी।

महाराष्ट्र :

नागपुर (महाराष्ट्र) के सुविख्यात लेखक महामहोपाध्याय श्री बाल शास्त्री हरदास को महाराष्ट्र सरकार ने उनके मराठी ग्रंथ 'धर्मवीर डा0 मुंजे' पर डेढ़ हज़ार रुपये का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है॥

हरियाणा :

हरियाणा सरकार के भाषा विभाग की आगामी वर्ष की योजना में हरियाणा की विभिन्न बोलियों के विकास की योजना शामिल है। इस योजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अंतर्गत मुख्यत: बागड़ी, बांगरू, अहिरवाटी, मेवाती और रोहतक ... विकास किया जाएगा, सब बोलियों की लोककथाओं तथा वीर काव्यों का संग्रह किया जाएगा; और हरियाणा के इतिहास, कला और संस्कृति पर पुस्तकें लिखने के लिए सुविख्यात लेखकों को आमंत्रित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश :

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री रामलाल ने विधान सभा में कहा कि त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत राज्य सरकार ने उर्दू को राज्य की अनिवार्य भाषा स्वीकार कर लिया है। मुख्यमंत्री सम्मेलन में भी यह बात स्वीकार कर ली गई है। पंजाबी के विकास के लिए राज्य सरकार हर संभव प्रयत्न करेगी। जो छात्र परीक्षा और पढ़ाई का माध्यम पंजाबी रखना चाहेंगे उन्हें इसकी सुविधा दी जाएगी। प्राथमिक स्कूल में एक कक्षा में 10 छात्र और पूरे स्कूल में 40 छात्र पंजाबी पढ़ना चाहेंगे तो उसे पढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी। हाई स्कूल में पंजाबी पढ़ने की व्यवस्था तब की जाएगी जब एक कक्षा में 15 और पूरे स्कूल में 60 छात्र पंजाबी पढ़ना चाहेंगे।

- हिमाचल प्रदेश हिंदी साहित्य संगम का द्वितीय वार्षिकोत्सव 6 मार्च को सुंदर नगर में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के वन तथा उद्योग मंत्री पं0 पदमदेव ने की। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के अनेक विद्वानों ने इस अवसर पर यह मांग की कि हिमाचल प्रदेश में हिंदी को राजभाषा के पद पर अविलंब प्रतिष्ठित किया जाए। उन्होंने हिमाचल प्रदेश विधान सभा के प्रमुख सदस्य श्री लक्ष्मीदत्त वैद्य तथा कुंवर दुर्गाचंद को इस विषय में विधेयक प्रस्तुत करने के लिए बधाई दी। श्री निरंजन नाथ रैणा ने सुझाव रखा कि हिमाचल प्रदेश में त्रिभाषा सूत्र लागू किया जाए और तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था की जाए।

हिंदी के सुविख्यात हास्य कवि श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' और हिंदी के प्रसिद्ध पत्रकार डा0 हरि शंकर शर्मा के निधन पर 'हिंदी समाचार' जगत शोक प्रकट करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकों की योजना :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने करनाल में पत्रकारों को बताया कि विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकें प्रादेशिक भाषाओं में तैयार करने की योजना बना ली गई है । इस योजना के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार प्रत्येक राज्य को एक करोड़ रुपये अनुदान देगी । राज्य सरकारें 25 प्रतिशत राशि देंगी । कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हिंदी परिषद के समारोह में प्रो० शेरसिंह ने कहा कि देश की एकता बनाए रखने के लिए प्रादेशिक भाषाओं का विकास करना बहुत जरूरी है । उपकुलपति श्री दीपचंद वर्मा ने विश्वास दिलाया कि विश्वविद्यालय में शीघ्र ही हिंदी माध्यम से शिक्षा देने की व्यवस्था हो जाएगी ।

विविध :

- उत्तरप्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर के पांचवे दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ध्यानपाल सिंह ने बताया कि हिंदी को 1971 से विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है । उन्होंने कहा : कृषि विषय की अच्छी पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए योग्य अनुवादक नियुक्त किए जा रहे हैं । हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखाने की व्यवस्था भी की जा रही है ।

- बरेली कालेज के पन्द्रहवें दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक तथा संसद-सदस्य सेठ गोविंद दास ने कहा कि देश का भविष्य नई पीढ़ी पर निर्भर है । जैसी नई पीढ़ी तैयार होगी वैसा ही देश बनेगा । किंतु इस कार्य में हमारी सफलता नगण्य है । हमारी शिक्षा दोषपूर्ण है, वह अंग्रेज़ियत से बुरी तरह प्रभावित है । विज्ञान के क्षेत्र में भी हम संतोषजनक प्रगति नहीं कर रहे हैं । इसका कारण विदेशी भाषा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- हिंदी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि स्व0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के सम्मान में विक्रम विश्वविद्यालय में 'नवीन अध्ययन पीठ' की स्थापना की गई है। यह शोध-संस्थान हिंदी के समस्त आधुनिक राष्ट्रीय व सांस्कृतिक काव्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान की सुविधाएं प्रदान करेगा। व्यय का आधा हिस्सा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग देगा; शेष सहायता मध्यप्रदेश सरकार से प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

- हिंदी के यशस्वी विद्वान, विचारक और समीक्षक स्व0 आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी की स्मृति में सागर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने एक स्वर्णपदक, ग्रंथमाला के प्रकाशन, शोधपीठ की स्थापना, स्मृति ग्रंथ, पुरस्कार, पुस्तकालय आदि की योजनाएं बनाई हैं। इन योजनाओं के लिए विभिन्न स्रोतों से सहायता प्राप्त करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

- कालिदास समारोह के अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय की ओर से सात दिन का एक साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन जबलपुर विश्वविद्यालय के भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष डा0 राजबली पांडेय ने किया। इस अवसर पर एक विचार-गोष्ठी भी हुई जिसमें कालिदास विषयक अनेक शोधपत्र पढ़े गए।

- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने कश्मीर के इतिहास पर एक शोधपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित किया है। यह ग्रंथ विशेष साहित्यिक समारोह में केन्द्रीय सिविल विमानन मंत्री डा0 कर्णसिंह को समर्पित किया गया है। इस अवसर पर हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार डा0 रामधारी सिंह दिनकर, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा0 गौरीनाथ शास्त्री तथा हिंदी साहित्य सम्मेलन के सचिव पं0 गोविंद शर्मा आदि साहित्यकार उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

चैकोस्लोवाकिया में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन

चैकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में हिंदी का पठन-पाठन दो स्थानों पर हो रहा है : विदेशी भाषाओं के विद्यालय में और चार्ल्स विश्वविद्यालय में। विदेशी भाषाओं के विद्यालय में सप्ताह में दो बार शाम के समय हिंदी की कक्षाएं चलती हैं। यहां सरकारी कर्मचारी, वाणिज्य अधिकारी, शिक्षक, इंजीनियर आदि सभी वर्गों के लोग हिंदी पढ़ते हैं। यहां कुछ अन्य भारतीय भाषाएं भी पढ़ाई जाती हैं किंतु हिंदी प्रमुख है। हिंदी भाषा के व्यावहारिक रूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

चार्ल्स विश्वविद्यालय में हिंदी का पठन-पाठन भारतीय विद्या विभाग के अंतर्गत हो रहा है। हिंदी का अध्ययन शास्त्रीय ढंग से कराया जाता है। विद्यार्थियों को हिंदी का गहन और व्यापक ज्ञान कराना विश्वविद्यालय का लक्ष्य है। पांच वर्ष के पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्रों को विश्वविद्यालय की उपाधि दी जाती है। उपाधि प्राप्त करने के लिए छात्रों को एक शोधपूर्ण निबंध प्रस्तुत करना पड़ता है। पाठ्यक्रम दस सत्रों में विभाजित है। प्रारंभिक सत्रों में व्याकरण के सरल नियम और सरल पाठ पढ़ाए जाते हैं। इसमें ग्रामोफोन और टेप रिकार्डों की सहायता ली जाती है। उच्चतर सत्रों में हिंदी से चेक और चेक से हिंदी में अनुवाद का अभ्यास कराया जाता है और बोलचाल की हिंदी भी सिखाई जाती है। हिंदी व्याकरण की शिक्षा में तीन पक्षों पर विशेष ज़ोर दिया जाता है : इतिहास, आधुनिक हिंदी और हिंदी की बोलियां। साहित्य के इतिहास में मध्ययुगीन साहित्य के पश्चात् आधुनिक साहित्य के इतिहास पर सर्वाधिक ध्यान और समय दिया जाता है। साहित्य के इतिहास की शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों, आंदोलनों और प्रवृत्तियों से गहन परिचय प्राप्त कर लेते हैं।

जहां तक हिंदी की शैली का प्रश्न है प्राग विश्वविद्यालय में हिंदी की संस्कृतिनिष्ठ शैली पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है। हिंदी विद्यार्थी के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य के इतिहास और संस्कृत के व्याकरण का ज्ञान आवश्यक माना जाता है। इसके अतिरिक्त उसे एक आधुनिक भारतीय भाषा की कामचलाऊ जानकारी भी प्राप्त करनी होती है। दो सत्रों में हिंदी के विद्यार्थी पर्याप्त बंगला या मराठी जान लेते हैं।

चेकोस्लोवाकिया में हिंदी की पाठ्यपुस्तकों की विशेष समस्या नहीं है। वहां के प्रमुख हिंदी विद्वान तथा प्राध्यापक स्वयं पाठ्य पुस्तकें तैयार करते हैं। इस समय चेक भाषा में हिंदी की अनेक पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हैं। हिंदी की शिक्षा चेक भाषा के माध्यम से दी जाती है, अंग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं। इसीलिए हिंदी व्याकरण और साहित्य का इतिहास आदि विषयों पर चेक भाषा में पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। शब्द-ज्ञान के लिए अंग्रेजी, रूसी या हिंदी के शब्द कोश काम में लाए जाते हैं। एक चेक-हिंदी तथा हिंदी-चेक शब्द कोश तैयार हो रहा है।

चेकोस्लोवाकिया में हिंदी का प्रचार करने वालों में प्राध्यापक ओताकोर पेर्तोल्द का नाम सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। डा0 पेर्तोल्द ने सन् 1925 में उच्च वाणिज्य महाविद्यालय में हिंदी शिक्षा देने का काम शुरु किया था। उनका दो वर्ष पूर्व 72 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ। दूसरे उल्लेखनीय प्राध्यापक हैं डा0 विन्त्सेंत्स। वे यूरोप भर में हिंदी व्याकरण के विशिष्ट विद्वान माने जाते हैं। चेक भाषा में हिंदी की पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराने में इन दो विद्वानों का योगदान सबसे अधिक है। श्री ओदोलेन स्मेकल ने भी, जो गत दस वर्षों से वहां हिंदी अध्यापन का कार्य कर रहे हैं, अनेक पाठ्यपुस्तकें तैयार की हैं। इस समय वे हिंदी वार्तालाप नामक चेक-अंग्रेजी-हिंदी पुस्तक लिख रहे हैं।

प्राग विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग में हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, तमिल और उर्दू के अध्यापन की भी व्यवस्था है।

(ज्ञानपीठ पत्रिका में प्रकाशित ओदोलेन-स्मेकल के लेख पर आधारित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेशनल बुक ट्रस्ट, 23 निजामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली-13

नेशनल बुक ट्रस्ट स्वायत्त सरकारी संस्था है। सत्साहित्य को प्रकाशित करना तथा उसे कम मूल्य पर सर्वसाधारण तक पहुंचाना - इसी मुख्य उद्देश्य को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने इसकी स्थापना की है। भारतकी विभिन्न भाषाओं में कुछ चुने हुए क्षेत्रों में पुस्तकों के प्रकाशन के अतिरिक्त पुस्तक प्रदर्शनियों और राष्ट्रीय पुस्तक समारोहों का आयोजन तथा पुस्तकों के लेखन, अनुवाद, प्रकाशन आदि विषयों पर विचारगोष्ठियों का आयोजन ट्रस्ट के कार्यकलाप में सम्मिलित है। संक्षेप में, ट्रस्ट का उद्देश्य देश में ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमें पुस्तकों के प्रति सार्वजनिक रुचि जागृत हो। अब तक ट्रस्ट ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में दो सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। हिंदी के प्रकाशनों की संख्या चालीस के लगभग है। इनमें से कुछ पुस्तकों का विवरण नीचे दिया जा रहा है।:-

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
फूलों वाले पेड़	डा0 एम0एस0 रणधावा	देश परिचय	206	9-50
असमिया साहित्य	प्रो0 हेम बरुआ	साहित्य का इतिहास	318	5-00
कुछ परिचित पेड़	डा0 एच0 सन्तापाउ	देश परिचय	146	4-00
हमारे कलपक्षी	राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह	,, ,,	88	2-50
गुरु गोविन्द सिंह	डा0 गोपाल सिंह	जीवनी	120	2-00
अहिल्याबाई	हीरालाल शर्मा	,,	120	1-75
महाराणा प्रताप	राजेन्द्र शंकर भट्ट	,,	120	1-75
कबीर	डा0 पारसनाथ तिवारी	,,	126	2-00
रानी लक्ष्मी बाई	वृन्दावन लाल वर्मा	,,	128	2-00
गैरीवाल्डी	ला0 लाजपतराय	,,	138	2-50
मैज्ज़िनी	,, ,,	,,	139	2-50
चक्रध्वज	वासुदेव शरण अग्रवाल	,,	76	3-00
भारतीय सेना की परंपराएं	धर्मपाल	कहानी	176	3-00
अंतरिक्ष यात्रा	भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव	ज्ञानविज्ञान	184	5-00
विज्ञान और जीवन	रिशी कौल्डर	,,	212	3-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक : परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

वर्ष 2 5-7-68 अंक

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

सत्यमेव जयते

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजीकरण संख्या : आर एन् 12817166

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अप्रैल 1968 अंक 8

0 भाषा संगम (नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता आदि)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (राजस्थान सरकार द्वारा विभिन्न परीक्षाओं को मान्यता)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

स्थान परिवर्तन

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय), दरियागंज स्थित अपने पुराने कार्यालय भवन से उठकर राम कृष्ण पुरम स्थित नए सरकारी भवन में आ गया है। अब से निदेशालय का पता होगा : वेस्ट ब्लाक नं0 7, राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली-22। टेलीफोन नं0 77005।

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं0 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection; Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0भाषा संगम

भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए "अंतरभारती" की स्थापना

हैदराबाद शहर के विभिन्न भाषा-भाषियों के प्रतिनिधियों की एक सभा में यह निश्चय किया गया है कि भारत की विभिन्न भाषाओं के अध्ययन और साहित्य तथा संस्कृति के आदान-प्रदान के लिए "अंतरभारती" नामक एक संस्था बनाई जाए। इस संस्था का विधान बनाने और कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक तदर्थ समिति बनाई गई है जिसके अध्यक्ष श्री गोपालराव जी एकबोटे तथा संयोजक श्री भालचंद्र आपटे हैं। अंतरभारती के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम स्वीकृत किया गया है : (1) भारतीय भाषाओं के अध्ययन की सुविधा प्रदान करना, (2) विद्वानों के मिलने-जुलने तथा विचार-विनिमय की सुविधा के लिए कवि सम्मेलन, भाषण, गोष्ठियां और परिसंवाद आदि का आयोजन करना, (3) साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उत्सव मनाने की व्यवस्था करना।

समिति ने आगामी अप्रैल और मई महीनों में भारतीय भाषाओं के भक्ति-साहित्य पर "भाषणमाला" आयोजित करने का भी निश्चय किया है।

नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा आयोजित 13 वीं नवसाक्षर साहित्य पुरस्कार प्रतियोगिता के परिणाम घोषित कर दिए गए हैं। पुरस्कार के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं की 18 पुस्तकें और पांडुलिपियां चुनी गई हैं।

बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता पुरस्कार

भारत सरकार के सामुदायिक विकास और सहकारिता विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता के अंतर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं की कृतियों पर एक-एक हज़ार रुपये के 12 पुरस्कार दिए गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय भाषाओं में मानक ग्रंथों का प्रकाशन

भारत सरकार के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने डेक्कन कालेज पूना में भाषा विज्ञान शब्दावली के संबंध में एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया । वहाँ भाषा विज्ञान विषयक लगभग 1000 शब्दों को अंतिम रूप दिया गया और 20 ऐसी पुस्तकों की सूची तैयार की गई है जिन्हें हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में अनूदित करके अग्रता के आधार पर प्रकाशित किया जाएगा । शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने एक अधिवेशन में कहा : यदि देश भर के विद्वान अपने विषय की कम से कम एक पुस्तक (मौलिक अथवा अनूदित) अपनी-अपनी भाषा में तैयार करें तो शिक्षा माध्यम के परिवर्तन की समस्या आसानी से हल हो सकती है । आयोग के कार्य की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आयोग ने लगभग 2 लाख पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कर लिया है । मानक ग्रंथों के अनुवाद और प्रकाशन की योजना के अंतर्गत 150 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं और 600 पुस्तकें विभिन्न भारतीय भाषाओं में शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली हैं । लगभग 900 पुस्तकों के कापीराइट प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं ।

भाषा संस्थान की स्थापना :

पंजाब सरकार चौथी योजना के अंतर्गत 25 लाख रुपये की लागत से एक भाषा संस्थान स्थापित करने पर विचार कर रही है । इस उद्देश्य के लिए नए वित्त वर्ष के योजना-बजट में आठ लाख रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

सरकारी काम-काज में प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग आवश्यक

कलकत्ता के एक समारोह में भाषण करते हुए उपराष्ट्रपति श्री वी0वी0 गिरि ने कहा कि क्षेत्रीय भाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी और राष्ट्रभाषा का उपयोग जरूरी है । श्री गिरि ने आगे कहा : राज्यों का प्रशासन उन्हीं की भाषाओं में चलना चाहिए । इसमें कोई गलत बात नहीं है । ऐसा तो होना ही चाहिए : हिंदी से घृणा नहीं करनी चाहिए । एक दिन यह संपर्क भाषा बनेगी ही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएं

राजस्थान सरकार द्वारा विभिन्न हिंदी परीक्षाओं की मान्यता :

राजस्थान सरकार के भाषा विभाग ने (आदेश संख्या एफ0 4(17)जी0ए0/(ए)160 दिनांक 31-12-1966) राजस्थान सरकार के अधीन नियुक्तियों के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा संचालित निम्नलिखित हिंदी परीक्षाओं को मान्यता दी है।

क्रमांक	संस्था का नाम	मान्यता दी गई परीक्षाओं के नाम	समकक्ष परीक्षा में निर्धारित हिन्दी का स्तर
1-	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद	प्रथमा	मैट्रिक
		मध्यमा (विशारद)	बी0 ए0
		उत्तमा (साहित्यरत्न)	बी0 ए0 से उच्चतर किन्तु एम0 ए0 के समकक्ष नहीं
2-	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	परिचय	मैट्रिक
		कोविद	इन्टर
		रत्न	बी0 ए0
3-	प्रयाग महिला विद्यापीठ, इलाहाबाद	विदुषी	इन्टर
		सरस्वती	बी0 ए0
4-	हिन्दी विद्यापीठ, देवघर	प्रवेशिका	मैट्रिक
		साहित्यभूषण	इन्टर
		साहित्यालंकार	बी0 ए0
5-	ट्रावनकोर हिन्दी प्रचार सभा, त्रिवेन्द्रम	प्रवेश	मैट्रिक
		भूषण	इन्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6-	असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गोहाटी	प्रबोध	मैट्रिक
		विशारद	इन्टर
7-	हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद	विशारद	मैट्रिक
		भूषण	इन्टर
		विद्वान	बी० ए०
8-	बम्बई हिन्दी विद्यापीठ, बम्बई	उत्तमा	मैट्रिक
		भाषारत्न	इन्टर
		साहित्य सुधाकर	बी० ए०
9-	महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पूना	प्रबोध	मैट्रिक
		प्रवीण	इन्टर
		पंडित	बी० ए०
10-	मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल	प्रबोध	मैट्रिक
		विशारद	इन्टर
11-	अखिल भारतीय हिन्दी परिषद्, आगरा	पारंगत	बी० ए०
12-	मैसूर हिंदी प्रचार परिषद्, बंगलौर	प्रवेश	मैट्रिक
		उत्तमा	इन्टर
		रत्न	बी० ए०
13-	गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद	तीसरी	मैट्रिक
		विनीत	इन्टर
		सेवक	बी० ए०
14-	दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास	प्रवेशिका	मैट्रिक
		विशारद	इन्टर
		प्रवीण	बी० ए०
15-	हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई	काबिल	मैट्रिक
		विद्वान	इन्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

0 हिन्दी

* भारत सरकार में

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग में प्रगति :

गृह मंत्रालय के राज्यमंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि बिहार, हरियाणा, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश की सरकारों ने अपने प्रशासनिक काम-काज के लिए हिंदी को अपनाने का निर्णय किया है। गुजरात और महाराष्ट्र की राज्य सरकारों ने निश्चय किया है कि वे केन्द्रीय सरकार से तथा उन राज्यों से हिंदी में पत्र-व्यवहार करेंगी जिन्होंने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया है। नागालैंड ने अंग्रेजी को ज्यों का त्यों रहने दिया है। आंध्र प्रदेश, असम, जम्मू तथा कश्मीर, केरल, मद्रास, महाराष्ट्र, मैसूर, उड़ीसा, पंजाब और पश्चिम बंगाल ने सरकारी काम-काज के लिए क्षेत्रीय भाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रयोग को चालू रखने का निश्चय किया है। नागालैंड को छोड़ कर अन्य सभी राज्यों ने प्रशासन में अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग कुछ हद तक चालू कर दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश ने केन्द्र के साथ पत्र-व्यवहार में हिंदी का प्रयोग आरंभ कर दिया है।

अहिंदी भाषी राज्यों के हिंदी लेखकों को पुरस्कार :

अहिंदी भाषी राज्यों के हिंदी लेखकों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की एक योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष पुरस्कार दिए जाते हैं। 1967 के लिए निम्नलिखित लेखकों को एक-एक हज़ार रुपये के पुरस्कार दिए गए :-

लेखक का नाम	मातृभाषा	पुरस्कृत हिंदी पुस्तक
श्री के० गणपति भट्ट	कन्नड़	अमर गाथा
श्रीमती ज्योत्स्ना देवधर	मराठी	अंतरा
श्रीमती निर्मला दर	कश्मीरी	निर्झरिणी और पत्थर
श्री मनहर चौहान	गुजराती	सीमाएं
श्री निर्मल कुमार चक्रवर्ती	बंगला	अज्ञात की ओर
श्री सदाशिव [illegible]	कन्नड़	नव जागरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

28 मार्च, 1968 को शास्त्री भवन में आयोजित एक समारोह में शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने पुरस्कार वितरित किए। इस अवसर पर शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भागवत झा आज़ाद, परिवहन मंत्रालय के उपमंत्री श्री भक्त-दर्शन तथा शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री गिरिजाप्रसाद पांडेय ने अपने भाषणों में हिंदी साहित्य के विकास में अहिंदी भाषियों के योगदान पर प्रकाश डाला। समारोह में राजधानी के अनेक साहित्यकार तथा विद्वान सम्मिलित हुए।

<u>हिंदी अध्यापकों तथा नवलेखकों के प्रशिक्षण-शिविर</u> :

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय की एक योजना के अंतर्गत, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभविद्यानगर में 18 मार्च से 24 मार्च, 1968 तक अध्यापकों के एक शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन विश्व-विद्यालय के उपकुलपति श्री ईश्वर भाई पटेल ने किया। शिविर में अहिंदी प्रांतों के 23 हिंदी अध्यापकों ने भाग लिया। इस अवसर पर हिंदी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

निदेशालय की एक अन्य योजना के अंतर्गत 24 मार्च से 30 मार्च 1968 तक, साक्षरता निकेतन, लखनऊ में नवलेखकों का प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित किया गया। इसमें विभिन्न भाषा भाषी तेरह लेखकों ने भाग लिया। साहित्य की विभिन्न विधाओं की रचना-प्रक्रिया पर अधिकारी विद्वानों के भाषण हुए। प्रशिक्षार्थियों से कविता, कहानी आदि की रचनाएं कराई गईं। इस कार्यक्रम में सर्वश्री यशपाल, भगवती चरण वर्मा, अमृत लाल नागर, कुमुद नागर, ठाकुर प्रसाद सिंह, मन्मथनाथ गुप्त, डा० महीप सिंह, कृष्ण नारायण कक्कड़, डा० गोपाल शर्मा और कुलभूषण आदि ने सहयोग दिया। शिविर का उद्घाटन साक्षरता निकेतन के निदेशक श्री ए० जे० मुकुंद ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में श्री वीरेन्द्र खरे से बहुमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद का पुरस्कार वितरण समारोह :

परिषद का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह 31 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित किया गया। परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार-विजेताओं को उप-प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने इनाम बांटे। इस अवसर पर भाषण करते हुए उन्होंने कहा : वह दिन दूर नहीं जब हिंदी के मार्ग के सब गतिरोध दूर होंगे और हिंदी का कार्य सुचारू रूप से होने लगेगा। इसी अवसर पर केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों का एक हिंदी सम्मेलन भी आयोजित किया गया। इसमें भारत के विभिन्न राज्यों से आए प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में भाषण करते हुए गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल ने कहा कि राजभाषा (संशोधन) अधिनियम बनने के बाद केन्द्रीय सरकार के जो कर्मचारी हिंदी में काम करना चाहते हैं उनपर कोई रोक नहीं होगी। परिषद ने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग से संबंधित एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया। इसमें हिंदी में छपे सरकारी फार्म, नियम पुस्तकें, अधिनियम, हिंदी के टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर आदि प्रदर्शित किए गए।

- उपराज्यपाल डा० आदित्य नाथ झा ने महानगर परिषद में अपने हिन्दी अभिभाषण में कहा कि दिल्ली प्रशासन की भाषा हिंदी है और इस फैसले पर अमल के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है। कुछ विभागों में सारा काम हिंदी में होने लगा है। 15 अगस्त तक सभी विभागों में सारा काम हिंदी में होने लगेगा।

- शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन ने राज्य सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि भारत संघ के 17 राज्यों में से 15 राज्यों के स्कूलों में हिंदी का अध्ययन अनिवार्य है। मद्रास तथा जम्मू और काश्मीर में हिंदी अनिवार्य नहीं है। जम्मू और काश्मीर में हिंदी का अध्ययन ऐच्छिक है। विभिन्न राज्यों में हिन्दी की पढ़ाई विभिन्न कक्षाओं से अनिवार्य है। नागालैंड में चौथी कक्षा से आठवीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य है।

- राजधानी में होली के अवसर पर अनेक साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन, कथा बांस मंडल की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और से गांधी मैदान में एक हास्यरस कवि सम्मेलन आयोजित किया गया । इसमें सर्वश्री निर्भय हाथरसी, काका हाथरसी, नागार्जुन, प्रभाकर माचवे, गोपाल प्रसाद व्यास आदि प्रसिद्ध कवियों ने भाग लिया । कवि सम्मेलन का उद्घाटन प्रसिद्ध हास्य अभिनेता श्री आई० एस० जौहर ने किया ।

– साहित्य संस्था "आराधना" और केरल क्लब के संयुक्त तत्वावधान में इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता मलयालम के महाकवि श्री पी० कुंजीरामन नायर का अभिनंदन किया गया । अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर ने कहा : यह श्री कुंजीरामन नायर का ही अभिनंदन नहीं है बल्कि सम्पूर्ण काव्य जगत का अभिनंदन है क्योंकि उनकी कविता क्षेत्रीय न होकर एक सार्वभौम सत्य को उद्घाटित करती है । इस अवसर पर एक कवि गोष्ठी भी हुई जिसमें श्री कुंजीरामन नायर की कुछ चुनी हुई कविताओं का अंग्रेजी तथा हिंदी रूपांतर प्रस्तुत किया गया । हिंदी के कवियों में श्री गिरिजाकुमार माथुर, प्रो० रमेश चंद्र गुप्त, डा० हरगुलाल तथा श्रीमती वीणा गुप्त ने अपनी रचनाएं पढ़ीं । काव्य पाठ के बाद काव्य पर एक परिचर्चा का आयोजन भी किया गया जिसमें केन्द्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन तथा संसद सदस्य श्री के० के० नायर ने कवि की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला ।

– शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने राज्य सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि विदेशों में हिंदी के प्रचार के लिए 5 लाख रु० की एक योजना हिंदी शिक्षा समिति ने बनाई है । विदेशों में हिंदी का प्रचार भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद की देख-रेख में हो रहा है । परिषद ने ग्वाइना और ट्रिनीडाड में कुछ हिंदी अध्यापक भेजे हैं । कोलंबो, रोम, बेलग्रेड, मेलबार्न और बुखारेस्ट में भी हिन्दी कक्षाएं चल रही हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

उत्तर प्रदेश :

- उत्तरप्रदेश सरकार की पुरस्कार योजना समिति ने श्री अली अब्बास हुसैनी और स्वामी अखानंद परिव्राजक को क्रमशः उर्दू और संस्कृत की उल्लेखनीय सेवा के लिए पांच-पांच हजार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया है। डा० लक्ष्मी नारायण लाल को उनकी कृति 'मन वृन्दावन' पर प्रेमचंद पुरस्कार, श्री श्रीप्रकाश को उनकी कृति 'पाकिस्तान के प्रारंभिक दिन' पर आचार्य नरेन्द्र देव पुरस्कार और डा० हरिवंश राय बच्चन को उनकी कृति 'नागर गीत' पर बालकृष्ण शर्मा 'नवीन पुरस्कार के रूप में ढाई-ढाई हजार रुपये की राशि देने का निश्चय किया है। हिंदी, उर्दू और संस्कृत की श्रीवृद्धि के लिए राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष 56,500 रुपये के पुरस्कार दिए गए हैं। 1968-69 के पुरस्कारों के लिए 31 मई 1968 तक रचनाएं आमंत्रित की गई हैं। विशेष विवरण के लिए सचिव, पुरस्कार योजना समिति, शिक्षा ग 2 विभाग, सचिवालय, लखनऊ से पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

उड़ीसा :

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने विज्ञान के मेधावी छात्रों की वार्षिक प्रतियोगिता परीक्षाएं सभी क्षेत्रीय भाषाओं व अंग्रेजी के माध्यम से लेने का निर्णय किया है। परिषद के निदेशक डा० एस० के० मित्रा ने पत्रकारों को बताया कि परीक्षाएं ज़िला स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक होंगी।

महाराष्ट्र :

नागपुर (महाराष्ट्र) के सुविख्यात लेखक महामहोपाध्याय श्री बाल शास्त्री हरदास को महाराष्ट्र सरकार ने उनके मराठी ग्रंथ 'धर्मवीर डा० मुंजे' पर डेढ़ हजार रुपये का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है॥

हरियाणा :

हरियाणा सरकार के भाषा विभाग की आगामी वर्ष की योजना में हरियाणा की विभिन्न बोलियों के विकास की योजना शामिल है। इस योजना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अंतर्गत मुख्यतः बागड़ी, बांगरू, अहिरवाटी, मेवाती और रोहतक की बोलियों का विकास किया जाएगा, सब बोलियों की लोककथाओं तथा वीर काव्यों का संग्रह किया जाएगा और हरियाणा के इतिहास, कला और संस्कृति पर पुस्तकें लिखने के लिए सुविख्यात लेखकों को आमंत्रित किया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश :

हिमाचल प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री रामलाल ने विधान सभा में कहा कि त्रिभाषा सूत्र के अंतर्गत राज्य सरकार ने उर्दू को राज्य की अनिवार्य भाषा स्वीकार कर लिया है। मुख्यमंत्री सम्मेलन में भी यह बात स्वीकार कर ली गई है। पंजाबी के विकास के लिए राज्य सरकार हर संभव प्रयत्न करेगी। जो छात्र परीक्षा और पढ़ाई का माध्यम पंजाबी रखना चाहेंगे उन्हें इसकी सुविधा दी जाएगी। प्राथमिक स्कूल में एक कक्षा में 10 छात्र और पूरे स्कूल में 40 छात्र पंजाबी पढ़ना चाहेंगे तो उसे पढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी। हाई स्कूल में पंजाबी पढ़ने की व्यवस्था तब की जाएगी जब एक कक्षा में 15 और पूरे स्कूल में 60 छात्र पंजाबी पढ़ना चाहेंगे।

– हिमाचल प्रदेश हिंदी साहित्य संगम का द्वितीय वार्षिकोत्सव 6 मार्च को सुंदर नगर में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता हिमाचल प्रदेश के वन तथा उद्योग मंत्री पं० पद्मदेव ने की। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के अनेक विद्वानों ने इस अवसर पर यह मांग की कि हिमाचल प्रदेश में हिंदी को राजभाषा के पद पर अविलंब प्रतिष्ठित किया जाए। उन्होंने हिमाचल प्रदेश विधान सभा के प्रमुख सदस्य श्री लक्ष्मीदत्त वैद्य तथा कुंवर दुर्गाचंद को इस विषय में विधेयक प्रस्तुत करने के लिए बधाई दी। श्री निरंजन नाथ रैणा ने सुझाव रखा कि हिमाचल प्रदेश में त्रिभाषा सूत्र लागू किया जाए और तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत के अध्ययन की व्यवस्था की जाए।

हिंदी के सुविख्यात हास्य कवि श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' और हिंदी के प्रसिद्ध पत्रकार डा० हरि शंकर शर्मा के निधन पर 'हिंदी समाचार' जगत शोक प्रकट करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकों की योजना :

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह ने करनाल में पत्रकारों को बताया कि विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य पुस्तकें प्रादेशिक भाषाओं में तैयार करने की योजना बना ली गई है। इस योजना के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार प्रत्येक राज्य को एक करोड़ रुपये अनुदान देगी। राज्य सरकारें 25 प्रतिशत राशि देंगी। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हिंदी परिषद के समारोह में प्रो0 शेरसिंह ने कहा कि देश की एकता बनाए रखने के लिए प्रादेशिक भाषाओं का विकास करना बहुत जरूरी है। उपकुलपति श्री दीपचंद वर्मा ने विश्वास दिलाया कि विश्वविद्यालय में शीघ्र ही हिंदी माध्यम से शिक्षा देने की व्यवस्था हो जाएगी।

विविध :

- उत्तरप्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पंतनगर के पांचवें दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री ध्यानपाल सिंह ने बताया कि हिंदी को 1971 से विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। उन्होंने कहा : कृषि विषय की अच्छी पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए योग्य अनुवादक नियुक्त किए जा रहे हैं। हिंदी में मौलिक पुस्तकें लिखाने की व्यवस्था भी की जा रही है।

- बरेली कालेज के पन्द्रहवें दीक्षांत समारोह में भाषण करते हुए हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक तथा संसद-सदस्य सेठ गोविंद दास ने कहा कि देश का भविष्य नई पीढ़ी पर निर्भर है। जैसी नई पीढ़ी तैयार होगी वैसा ही देश बनेगा। किंतु इस कार्य में हमारी सफलता नगण्य है। हमारी शिक्षा दोषपूर्ण है, वह अंग्रेज़ियत से बुरी तरह प्रभावित है। विज्ञान के क्षेत्र में भी हम संतोषजनक प्रगति नहीं कर रहे हैं। इसका कारण विदेशी भाषा के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- हिंदी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि स्व0 बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के सम्मान में विक्रम विश्वविद्यालय में 'नवीन अध्ययन पीठ' की स्थापना की गई है। यह शोध-संस्थान हिंदी के समस्त आधुनिक राष्ट्रीय व सांस्कृतिक काव्य के अध्ययन, अध्यापन तथा अनुसंधान की सुविधाएं प्रदान करेगा। व्यय का आधा हिस्सा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग देगा; शेष सहायता मध्यप्रदेश सरकार से प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

- हिंदी के यशस्वी विद्वान, विचारक और समीक्षक स्व0 आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी की स्मृति में सागर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग ने एक स्वर्णपदक, ग्रंथमाला के प्रकाशन, शोधपीठ की स्थापना, स्मृति ग्रंथ, पुरस्कार, पुस्तकालय आदि की योजनाएं बनाई हैं। इन योजनाओं के लिए विभिन्न स्रोतों से सहायता प्राप्त करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

- कालिदास समारोह के अवसर पर विक्रम विश्वविद्यालय की ओर से सात दिन का एक साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन जबलपुर विश्वविद्यालय के भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष डा0 राजबली पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर एक विचार-गोष्ठी भी हुई जिसमें कालिदास विषयक अनेक शोधपत्र पढ़े गए।

- श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ ने कश्मीर के इतिहास पर एक शोधपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित किया है। यह ग्रंथ विशेष साहित्यिक समारोह में केन्द्रीय सिविल विमानन मंत्री डा0 कर्णसिंह को समर्पित किया गया है। इस अवसर पर हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार डा0 रामधारी सिंह दिनकर, वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा0 गौरीनाथ शास्त्री तथा हिंदी साहित्य सम्मेलन के सचिव पं0 मौलिचंद्र शर्मा आदि साहित्यकार उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विदेशों में

चैकोस्लोवाकिया में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन

चैकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग में हिंदी का पठन-पाठन दो स्थानों पर हो रहा है : विदेशी भाषाओं के विद्यालय में और चार्ल्स विश्वविद्यालय में। विदेशी भाषाओं के विद्यालय में सप्ताह में दो बार शाम के समय हिंदी की कक्षाएं चलती हैं। यहां सरकारी कर्मचारी, वाणिज्य अधिकारी, श्रमिक, इंजीनियर आदि सभी वर्गों के लोग हिंदी पढ़ते हैं। यहां कुछ अन्य भारतीय भाषाएं भी पढ़ाई जाती हैं किंतु हिंदी प्रमुख है। हिंदी भाषा के व्यावहारिक रूप पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

चार्ल्स विश्वविद्यालय में हिंदी का पठन-पाठन भारतीय विद्या विभाग के अंतर्गत हो रहा है। हिंदी का अध्ययन शास्त्रीय ढंग से कराया जाता है। विद्यार्थियों को हिंदी का गहन और व्यापक ज्ञान कराना विश्वविद्यालय का लक्ष्य है। पांच वर्ष के पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद छात्रों को विश्वविद्यालय की उपाधि दी जाती है। उपाधि प्राप्त करने के लिए छात्रों को एक शोधपूर्ण निबंध प्रस्तुत करना पड़ता है। पाठ्यक्रम दस सत्रों में विभाजित है। प्रारंभिक सत्रों में व्याकरण के सरल नियम और सरल पाठ पढ़ाए जाते हैं। इसमें ग्रामोफोन और टेप रिकार्डों की सहायता ली जाती है। उच्चतर सत्रों में हिंदी से चेक और चेक से हिंदी में अनुवाद का अभ्यास कराया जाता है और बोलचाल की हिंदी भी सिखाई जाती है। हिंदी व्याकरण की शिक्षा में तीन पक्षों पर विशेष ज़ोर दिया जाता है : इतिहास, आधुनिक हिंदी और हिंदी की बोलियां। साहित्य के इतिहास में मध्ययुगीन साहित्य के पश्चात् आधुनिक साहित्य के इतिहास पर सर्वाधिक ध्यान और समय दिया जाता है। साहित्य के इतिहास की शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी हिंदी साहित्य के प्रमुख साहित्यकारों, आंदोलनों और प्रवृत्तियों से गहन परिचय प्राप्त कर लेते हैं।

जहां तक हिंदी की शैली का प्रश्न है प्राग विश्वविद्यालय में हिंदी की संस्कृतिनिष्ठ शैली पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है। हिंदी विद्यार्थी के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत साहित्य के इतिहास और संस्कृत के व्याकरण का ज्ञान आवश्यक माना जाता है। इसके अतिरिक्त उसे एक आधुनिक भारतीय भाषा की कामचलाऊ जानकारी भी प्राप्त करनी होती है। दो सत्रों में हिंदी के विद्यार्थी पर्याप्त बंगला या मराठी जान लेते हैं।

चेकोस्लोवाकिया में हिंदी की पाठ्यपुस्तकों की विशेष समस्या नहीं है। वहां के प्रमुख हिंदी विद्वान तथा प्राध्यापक स्वयं पाठ्य पुस्तकें तैयार करते हैं। इस समय चेक भाषा में हिंदी की अनेक पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हैं। हिंदी की शिक्षा चेक भाषा के माध्यम से दी जाती है, अंग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं। इसीलिए हिंदी व्याकरण और साहित्य का इतिहास आदि विषयों पर चेक भाषा में पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। शब्द-ज्ञान के लिए अंग्रेजी, रूसी या हिंदी के शब्द कोश काम में लाए जाते हैं। एक चेक-हिंदी तथा हिंदी-चेक शब्द कोश तैयार हो रहा है।

चेकोस्लोवाकिया में हिंदी का प्रचार करने वालों में प्राध्यापक ओताकोर पेर्तोल्द का नाम सर्वप्रथम उल्लेखनीय है। डा0 पेर्तोल्द ने सन् 1925 में उच्च वाणिज्य महाविद्यालय में हिंदी शिक्षा देने का काम शुरु किया था। उनका दो वर्ष पूर्व 72 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ। दूसरे उल्लेखनीय प्राध्यापक हैं डा0 विन्त्सेंत्स। वे यूरोप भर में हिंदी व्याकरण के विशिष्ट विद्वान माने जाते हैं। चेक भाषा में हिंदी की पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराने में इन दो विद्वानों का योगदान सबसे अधिक है। श्री ओदोलेन स्मेकल ने भी, जो गत दस वर्षों से वहां हिंदी अध्यापन का कार्य कर रहे हैं, अनेक पाठ्यपुस्तकें तैयार की हैं। इस समय वे 'हिंदी वार्तालाप' नामक चेक-अंग्रेजी-हिंदी पुस्तक लिख रहे हैं।

प्राग विश्वविद्यालय के भारतीय विद्या विभाग में हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, बंगला, तमिल और उर्दू के अध्ययन की भी व्यवस्था है।

('ज्ञानपीठ पत्रिका' में प्रकाशित आंदोलेन-स्मेकल के लेख पर आधारित)

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० नए प्रकाशन

नेशनल बुक ट्रस्ट, 23 निज़ामुद्दीन पूर्व, नई दिल्ली-13

नेशनल बुक ट्रस्ट स्वायत्त सरकारी संस्था है। सत्साहित्य को प्रकाशित करना तथा उसे कम मूल्य पर सर्वसाधारण तक पहुंचाना - इसी मुख्य उद्देश्य को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने इसकी स्थापना की है। भारत की विभिन्न भाषाओं में कुछ चुने हुए क्षेत्रों में पुस्तकों के प्रकाशन के अतिरिक्त पुस्तक प्रदर्शनियों और राष्ट्रीय पुस्तक समारोहों का आयोजन तथा पुस्तकों के लेखन, अनुवाद, प्रकाशनादि विषयों पर विचारगोष्ठियों का आयोजन ट्रस्ट के कार्यकलाप में सम्मिलित है। संक्षेप में, ट्रस्ट का उद्देश्य देश में ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमें पुस्तकों के प्रति सार्वजनिक रुचि जागृत हो। अब तक ट्रस्ट ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में दो सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। हिंदी के प्रकाशनों की संख्या चालीस के लगभग है। इनमें से कुछ पुस्तकों का विवरण नीचे दिया जा रहा है :-

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ सं0	मूल्य
फूलों वाले पेड़	डा0 एम0एस0 रणधावा	देश परिचय	206	9-50
असमिया साहित्य	प्रो0 हेम बरुआ	साहित्य का इतिहास	318	5-00
कुछ परिचित पेड़	डा0 एस0 सन्तापाऊ	देश परिचय	146	4-00
हमारे जलपक्षी	राजेश्वरप्रसाद नारायण सिंह	,,	88	2-50
गुरु गोविन्द सिंह	डा0 गोपाल सिंह	जीवनी	120	2-00
अहिल्याबाई	हीरालाल शर्मा	,,	120	1-75
महाराणा प्रताप	राजेन्द्र शंकर भट्ट	,,	120	1-75
कबीर	डा0 पारसनाथ तिवारी	,,	126	2-00
रानी लक्ष्मी बाई	वृन्दावन लाल वर्मा	,,	128	2-00
गैरिबाल्डी	ला0 लाजपतराय	,,	138	2-50
मैज़िनी	,, ,,	,,	120	2-50
चक्रध्वज	वासुदेव शरण अग्रवाल	,,	76	3-00
भारतीय सेना की परंपराएं	धर्मपाल	कहानी	176	3-00
अंतरिक्ष यात्रा	भगवती प्रसाद श्रीवास्तव	ज्ञानविज्ञान	184	5-00
विज्ञान और जीवन	रिशी कौल्डर	,,	212	3-50

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए ले० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक : परशुराम शर्मा

महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

हिंदी समाचार जगत

पुस्तकालय गुरुकुल काँगड़ी

9

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 मई, 1968 अंक 9

0 भाषा संगम (पंजाबी राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित आदि)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

यदि सर्वोच्च न्यायालय का काम हिंदी में तथा उच्च न्यायालयों का काम हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में हो तो इससे देश की वैधानिक सत्ता को कोई खतरा नहीं हो सकता। यह आशंका निराधार है कि इससे वकीलों और जजों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में आना-जाना संभव नहीं होगा। भारतीय भाषाओं में वैधानिक विचारों की अभिव्यक्ति की पूरी क्षमता है।

– केंद्रीय विधि मंत्री श्री पी० गोविन्द मेनन (पृ०11)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संगम

पंजाबी सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित :

13 अप्रैल 1968 से पंजाब में सरकारी काम-काज के लिए हर स्तर पर पंजाबी का प्रयोग आरंभ हो गया है। सचिवालय स्तर तक प्रशासन का सारा काम अब से पंजाबी में किया जाएगा। केन्द्र तथा हिंदी भाषी राज्यों से पत्र-व्यवहार हिंदी में किया जाएगा और अहिंदी भाषी राज्यों के साथ अंग्रेजी में। कर्मचारियों को पंजाबी में टिप्पण और मसौदा लेखन का प्रशिक्षण देने के लिए कक्षाएं चालू कर दी गई हैं। सचिवालय में प्रयोग के लिए राज्य सरकार ने गुरुमुखी लिपि के दो हजार टाइपराइटर खरीदे हैं। कुछ और टाइपराइटरों की खरीद के लिए आदेश दे दिए गए हैं। पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने पारिभाषिक शब्दों का एक अंग्रेजी-पंजाबी कोश भी प्रकाशित किया है। सभी अधिकारियों से कहा गया है कि वे इस कोश का अध्ययन करें। राज्य के हर स्तर पर पंजाबी को लागू करने के इस निर्णय का राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा अन्य प्रमुख नेताओं ने स्वागत किया है। पंजाब सरकार के इस भाषा कानून द्वारा पंजाब में सरकारी काम-काज के क्षेत्र में अंग्रेजी का आधिपत्य लगभग समाप्त हो गया है। इस कानून के लागू होने के फलस्वरूप अब केवल पंजाबी में लिखे दस्तावेज़ ही अधिकृत माने जाएंगे। दूसरी भाषाओं में लिखे दस्तावेज़ अधिक से अधिक अनुवाद समझे जाएंगे। पंजाब सरकार ने सभी नगरपालिकाओं का कार्य पंजाबी में चलाने के लिए पंजाब नगरपालिका कानून में भी आवश्यक संशोधन कर दिया है।

ग्रंथ साहब का तेलुगु में अनुवाद

गुरु नानक देव की पांचवी जन्म शताब्दी के अवसर पर आगामी वर्ष नवंबर में गुरु ग्रंथ साहब का तेलुगु अनुवाद प्रकाशित किया जाएगा। सिखों के इस धर्म ग्रंथ का अनुवाद श्री वी0 भानुमूर्ति कर रहे हैं। वे तेलुगु के लेखक हैं।

ज्ञानपीठ पुरस्कार :

भारतीय ज्ञानपीठ के तीसरे वाग्देवी पुरस्कार का निर्णय शीघ्र ही घोषित किया जाएगा। चौथे पुरस्कार के लिए प्राप्त रचनाओं पर विचार हो रहा है। पांचवें पुरस्कार के लिए विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं, भारतीय विश्वविद्यालयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भाषा विभागों, समीक्षकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों आदि से कृतियों के प्रस्ताव विचारार्थ आमंत्रित किए जा रहे हैं। प्रस्ताव-पत्र भारतीय ज्ञानपीठ, 9 अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता से प्राप्त किए जा सकते हैं।

उर्दू घर का शिलान्यास :

अंजुमन-ए तरक्की-ए उर्दू हिंद द्वारा राउज़ एवेन्यू, नई दिल्ली में 'उर्दू घर' का निर्माण किया जा रहा है। प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उर्दू घर का शिलान्यास करते हुए कहा : उर्दू मीठी, पुरजोश और वक्त की रफ़्तार के साथ सहज ही ढल जाने वाली शानदार भाषा है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि उर्दू देश की एकता को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

छठी अखिल भारतीय बुनियादी साहित्य प्रतियोगिता :

भारत सरकार के सामुदायिक विकास तथा सहकार विभाग द्वारा आयोजित उपर्युक्त प्रतियोगिता के लिए विभिन्न भारतीय भाषाओं की पांडुलिपियों/पुस्तकों को आमंत्रित किया गया है। इस प्रतियोगिता के अंतर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं की रचनाओं पर एक-एक हजार रुपये के 17 पुरस्कार दिए जाएंगे। पुस्तकें तथा पांडुलिपियाँ प्राप्त करने की अंतिम तारीख 30 सितंबर, 1968 है। विस्तृत जानकारी इस पते से प्राप्त की जा सकती है : निदेशक (बुनियादी साहित्य), खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकार मंत्रालय, (सामुदायिक विकास और सहकार विभाग, कृषि भवन, नई दिल्ली।

संकलन : केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के इस प्रकाशन में 'भाषा' पत्रिका में प्रकाशित विभिन्न भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट रचनाओं को हिंदी और हिंदीतर भाषाओं के अनुवाद के साथ प्रकाशित किया गया है। कृतियों की विविधता और गरिमा की दृष्टि से संकलन एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। 580 पृष्ठ के डिमाई आकार के इस संकलन का मूल्य मात्र 10 रुपये 50 पैसे है। इसकी प्रतियां मनीआर्डर भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइन्स, दिल्ली-8 से प्राप्त की जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी :

असम में राष्ट्रभाषा प्रचार का काम सन् 1934 में महात्मा गांधी की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध समाज सेवक बाबा राघवदास ने शुरू किया । असम के कई युवक तथा युवतियों को हिंदी की शिक्षा लेने के लिए काशी, इलाहाबाद और गोरखपुर भेजा गया । श्री बाबा राघवदास, अपने आश्रम बरहज से असम में हिंदी प्रचार की व्यवस्था चलाते थे किंतु तब तक प्रचार कार्य के लिए किसी संस्था की स्थापना नहीं हुई थी ।

इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए नवंबर, 1938 में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना हुई । प्रारंभ में इसका नाम असम हिंदी प्रचार समिति था जो आगे चलकर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति हो गया । इसकी स्थापना का सबसे अधिक श्रेय असम के लोकनेता स्व० गोपीनाथ बरदले को है । प्रारंभ में हिंदी प्रचार का कार्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की देख-रेख में किया जाता था । सन् 1942 में वर्धा समिति ने उन्हें अपनी प्रचार-व्यवस्था स्वतंत्ररूप से चलाने की अनुमति दे दी । 1945 में जब हिंदी और हिन्दुस्तानी का विवाद चला तो समिति की व्यवस्थापिका सभा ने हिन्दुस्तानी का समर्थन किया । फलतः मूल संस्था दो पृथक्-पृथक् समितियों के रूप में हिंदी और हिंदुस्तानी प्रचार का कार्य करने लगी । परन्तु आगे चलकर 9 मार्च 1952 को हिन्दी-हिंदुस्तानी का भेद भुला कर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और असम प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति (वर्धा शाखा) पुनः एक हो गई ।

प्रचार-कार्य : समिति के संविधान में इसका कार्यक्षेत्र असम, नागालैंड, मणिपुर उत्तर पूर्व सीमांत अंचल तथा त्रिपुरा बताया गया है । प्रचार कार्य की दृष्टि से इन क्षेत्रों को विभिन्न अंचलों में विभाजित किया गया है । प्रत्येक अंचल के प्रचार कार्य की निगरानी के लिए संगठक नियुक्त किए गए हैं । हर पांच मील की दूरी पर एक परीक्षा केन्द्र स्थापित किया गया है । इस समय परीक्षा केन्द्रों की कुल संख्या लगभग 450 है और प्रमाणित प्रचारक लगभग 1150 हैं । हिंदी के सुव्यवस्थित अध्ययन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापन के लिए समिति एक उच्चतम विद्यालय, 20 विशारद विद्यालय और 100 प्रबोध विद्यालयों का संचालन करती है। इसके अतिरिक्त सहयोगी हिंदी शिक्षकों द्वारा अनेक शिक्षण-केन्द्रों में भी हिंदी पढ़ाने की व्यवस्था है।

हिंदी विद्यापीठ

समिति ने अखिल भारतीय हिंदी परिषद की सर्वोच्च उपाधि परीक्षा 'पारंगत' की पढ़ाई के लिए गुवाहाटी शहर में हिंदी विद्यापीठ की स्थापना की है। इसमें समिति की प्रवीण तक की परीक्षाओं की पढ़ाई की भी व्यवस्था है।

परीक्षाएं : समिति निम्नलिखित परीक्षाओं का संचालन करती है : परिचय, प्रथमा, प्रवेशिका, प्रबोध, विशारद और प्रवीण। इनमें से प्रबोध और विशारद को भारत सरकार ने अपने यहां नौकरियों आदि के लिए क्रमश: मैट्रिक और इंटर की हिंदी योग्यता के समकक्ष माना है। प्रवीण समिति की सर्वोच्च उपाधि परीक्षा है। समिति की विभिन्न परीक्षाओं में प्रतिवर्ष 20 से 25 हजार तक विद्यार्थी बैठते हैं।

साहित्य विभाग : इस विभाग की स्थापना 1949 में की गई। अब तक इस विभाग की ओर से लगभग पचास पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें से अधिकांश पाठ्य पुस्तकें हैं। अनुवाद साहित्य माला के अंतर्गत साहित्य कला, पंत अरिहणा, लौहित्य और नीलाचल, नाम घोषा, बरगीत आदि पुस्तकें असमिया साहित्य के अंतर्गत शतधारा नामक ग्रंथ तथा कोश साहित्य में हिंदी असमिया कोश विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पुस्तकों के साथ-साथ समिति के कार्यालय से 'राष्ट्रसेवक' नामक एक मासिक हिंदी पत्रिका भी फरवरी 1951 से प्रकाशित हो रही है।

पुस्तकालय : समिति के कार्यालय में एक केन्द्रीय पुस्तकालय है। इसमें हिंदी, असमिया, बंगला, उर्दू आदि की लगभग साढ़े सात हजार पुस्तकें हैं। पुस्तकालय से संबद्ध वाचनालय में अनेक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाएं नियमित रूप से आती हैं। इसके अतिरिक्त समिति द्वारा स्वीकृत और उससे सहायता प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाले विद्यालयों में भी एक-एक पुस्तकालय है जिन की उन्नति के लिए समिति की ओर से समय-समय पर अनुदान दिया जाता है ।

मुद्रणालय : समिति ने लगभग 50 हजार की लागत से 1957 में एक मुद्रणालय की स्थापना भी की है ।

समिति के समस्त कार्यों का संचालन एक कार्यपालिका समिति करती है । इस समय कार्यपालिका के अध्यक्ष असम के मुख्य मंत्री श्री विमला प्रसाद चलिहा और प्रधान सचिव श्री रजनीकांत चक्रवर्ती हैं । समिति का मुख्य कार्यालय गुवाहाटी-3 में है जहां समिति का अपना भवन बना हुआ है ।

\+ \+ \+ \+ \+

हिन्दी सम्मेलन तथा हिन्दी व्यवहार प्रदर्शनी :

सरकारी कर्मचारियों को सरकारी आदेशों के अनुसार हिंदी में कार्य करने की दिशा में प्रोत्साहित करने की दृष्टि से केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने विभिन्न प्रदेशों में हिन्दी सम्मेलन करने का निश्चय किया है । इस निश्चय के अनुसार 19 मई को लखनऊ में, 26 मई को भोपाल में तथा 2 जून को जालंधर में कर्मचारियों के हिंदी सम्मेलन किए जाएंगे । इन सम्मेलनों में संबंधित प्रदेशों तथा आसपास के क्षेत्रों के सभी केन्द्रीय कर्मचारियों को आमंत्रित किया जा रहा है ।

सम्मेलनों के अवसर पर भारत सरकार द्वारा हिन्दी में कामकाज करने के संबंध में निकाले गए आदेशों और राजभाषा कानून के संदर्भ में कितना काम हिन्दी में किया जा सकता है, क्या क्या कठिनाइयां हैं, उन्हें कैसे दूर किया जाए और इस दिशा में किस ढंग से कार्य किया जाए आदि सभी विषयों पर विचार किया जाएगा । इस प्रकार का एक सम्मेलन दिल्ली में हुआ था जिसमें गृह मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री विद्याचरण शुक्ल तथा उपप्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई पधारे थे । उसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे ।

इन नगरों में हिंदी व्यवहार प्रदर्शनी भी आयोजित की जाएगी । सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग किस प्रकार हो रहा है, उसके बढ़ने की क्या संभावनाएं हैं, आदि बातों पर इसमें प्रकाश डाला जाएगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में

निर्णय पत्रिकाओं का प्रकाशन :

विधि मंत्रालय ने अधीनस्थ न्यायालयों के मार्गदर्शन के लिए हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में दो कानूनी पत्रिकाएं प्रकाशित करने का निश्चय किया है। ये पत्रिकाएं हैं : उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका और उच्च न्यायालय निर्णय पत्रिका। इनमें क्रमशः उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के निर्णयों के हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के अनुवाद होंगे। अधीनस्थ न्यायालयों में इस समय हिंदी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं में काम होता है। वर्तमान न्याय-व्यवस्था के अनुसार उच्च न्यायालय के सभी निर्णय अधीनस्थ न्यायालयों को मानने पड़ते हैं। उच्च न्यायालयों के निर्णय इस समय केवल अंग्रेज़ी में ही उपलब्ध होते हैं। सभी राज्यों की अपनी-अपनी भाषाओं में इन पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए उपयुक्त कार्रवाई की जा रही है। आशा है कि इस काम में कोई विशेष कठिनाई नहीं आएगी क्योंकि राजभाषा (विधायी) आयोग ने 91 केन्द्रीय अधिनियमों का हिंदी अनुवाद करके तथा कानून की अनेक शाखाओं की पारिभाषिक शब्दावली तैयार करके इस काम के लिए भूमिका पहले से ही तैयार कर रखी है। ऐसी व्यवस्था भी की जा रही है कि न्यायालयों में एक जैसी हिंदी शब्दावली और एक ही जैसी भाषा-शैली का प्रयोग हो।

हिंदी टाइपराइटरों और टेलीप्रिंटरों की मांग में वृद्धि :

लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर में औद्योगिक विकास तथा कंपनी मामलों के मंत्री श्री फ़खरुद्दीन अली अहमद ने कहा : हिंदुस्तान टेलीप्रिंटर्स मद्रास ने हिंदी टेलीप्रिंटरों के निर्माण का काम अपने हाथ में ले लिया है। 1968-69 में यह कंपनी 800 मशीनों की अनुमानित मांग को पूरा करेगी। हिंदी टाइपराइटरों के संबंध में मंत्री महोदय ने बताया कि सरकारी दफ़्तरों में आगामी पांच वर्षों में 17000 टाइपराइटरों की आवश्यकता का अनुमान लगाया गया है। इस समय कई फर्में टाइपराइटरों का उत्पादन कर रही हैं और 1967 में हिंदी टाइपराइटरों का कुल उत्पादन 5003 हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्टेट बैंक के फार्म हिंदी में

स्टेट बैंक आफ इंडिया ने पहली बार नित्य प्रति उपयोग में आने वाले कई फार्मों को हिंदी में भी छापा है। केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् ने इस संबंध में आवश्यक सुझाव देकर तथा फार्मों का अनुवाद करके इस काम में सहायता पहुंचाई है। बैंक शीघ्र ही ऐसे अन्य फार्मों को भी हिंदी में छपवा रहा है।

हिंदी शिक्षण योजना - प्रमाण-पत्र वितरण समारोह :

गृह मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के एक समारोह में पुरस्कार और प्रमाण-पत्र वितरण करते हुए, गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमन्नारायण ने अहमदाबाद में कहा : विश्व के सभी राष्ट्र प्रशासन का काम-काज अपनी-अपनी राष्ट्रभाषाओं में करते हैं। नेपाल जैसे छोटे देश ने भी नेपाली को राजकाज की भाषा बनाया है। इसे देखते हुए यह एक विचित्र बात लगती है कि भारत जैसे विशाल देश में कोई राष्ट्रभाषा नहीं है और वह अभी तक अंग्रेजी पर निर्भर है। इस अवसर पर हिंदी शिक्षण योजना के पर्यवेक्षक श्री शिवराम वर्मा ने अहमदाबाद में हिंदी शिक्षण योजना की प्रगति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा : अहमदाबाद में इस योजना के अधीन 1957 में काम शुरू किया गया था। अब तक 3000 सरकारी कर्मचारियों को हिंदी का शिक्षण दिया गया है।

हिंदी शिक्षण के पत्राचार पाठ्यक्रम की प्रगति :

जैसा कि हिंदी समाचार जात के मार्च, 1968 के अंक में सूचित किया जा चुका है, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय में हिंदी शिक्षण का पत्राचार पाठ्यक्रम 1 मार्च, 1968 से विधिवत् आरंभ हो गया है। इस वर्ष 'प्रवेश' नामक प्रारंभिक पाठ्यक्रम के लिए 720 विद्यार्थियों को भरती किया गया है जिनमें से 45 विद्यार्थी अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, मलेशिया, सिंगापुर, दक्षिणी अफ्रीका, श्रीलंका तथा जापान आदि देशों के हैं। इस पाठ्यक्रम में दाखिला प्राप्त करने के लिए 1500 से भी अधिक व्यक्तियों ने आवेदन भेजे थे किंतु कतिपय कारणों से पहले वर्ष में विद्यार्थियों की संख्या सीमित रखनी पड़ी है। अब तक विद्यार्थियों को 5 पाठ भेजे जा चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

भाषा-विज्ञान विचारगोष्ठी :

दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा विज्ञान विभाग और अमरिकी संस्थान की भारतीय विद्या परिषद के सम्मिलित सहयोग से हिंदी के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन पर 5 से 8 अप्रैल तक एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे कार्यों का मूल्यांकन और अध्ययन तथा अनुसंधान की नई संभावनाओं की खोज इस गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य था। इस विचारगोष्ठी में देश-विदेश के अनेक प्रतिष्ठित विद्वान सम्मिलित हुए। इसका उद्घाटन भाषा विज्ञान संस्थान पूना के निदेशक डा० एस० एम० कत्रे ने किया।

विचारगोष्ठी में भाषा विज्ञान के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने के लिए चार सामान्य और पांच विशेष बैठकें हुई। इन बैठकों में अधिकारी विद्वानों द्वारा लगभग 25 निबंध पढ़े गए। बैठकों के विषय इस प्रकार थे : भारतीय विश्वविद्यालयों के भाषा एवं साहित्य विभाग में भाषा विज्ञान का स्वरूप और उसकी स्थिति, हिंदी में लिखित सामान्य भाषा-विज्ञान संबंधी पुस्तकों का स्वरूप, समसामयिक भाषा वैज्ञानिक ढांचा और हिंदी का ऐतिहासिक तथा विवरणात्मक विश्लेषण, हिन्दी का अध्यापन और हिंदीतर भाषा भाषी भारतीय पाठक, हिंदी वाक्य गठन के विभिन्न पक्ष, हिंदी में तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी में कोश विज्ञान, हिंदी में शैली विज्ञान और साहित्यिक आलोचना और हिंदी का ध्वनि शास्त्र।

- क्षेत्रीय भाषाएं देश की एकता के लिए खतरा नहीं बन सकती :

बार एसोशियेशन द्वारा नई दिल्ली में आयोजित एक सेमिनार का उद्घाटन करते हुए विधि मंत्री श्री पी० गोविन्द मेनन ने कहा : यदि सर्वोच्च न्यायालय का काम हिंदी में तथा उच्च न्यायालयों का काम हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में हो तो इससे देश की वैधानिक एकता को कोई खतरा नहीं हो सकता। यह आशंका निराधार है कि इससे वकीलों और जजों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में आना-जाना संभव नहीं होगा। भारतीय भाषाओं में वैधानिक विचारों की अभिव्यक्ति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरी क्षमता है । अतः यह कहना भी ठीक नहीं है कि जब तक वे पूरी तरह विकसित नहीं हो जाती तब तक कानून के क्षेत्र में उनका उपयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि उपयोग उचित विकास के लिए नितान्त आवश्यक है । इस दिशा में शुरुआत के तौर पर कानून की शिक्षा के माध्यम में परिवर्तन किया जाना चाहिए ।

दक्षिण में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना का सुझाव :

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के एक प्रतिनिधि मंडल ने दक्षिण में हिंदी के प्रचार को बढ़ावा देने के लिए सभा की ओर से तैयार किया गया ज्ञापन प्रधानमंत्री को दिया है । ज्ञापन में यह सुझाव रखा गया है कि दक्षिण में एक हिंदी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए जो भारत सरकार के अधीन रहते हुए दक्षिण में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन को आगे बढ़ाए । प्रतिनिधि मंडल के नेता कांग्रेस अध्यक्ष श्री निजलिंगप्पा ने कहा है कि हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मैसूर सरकार मुफ्त में भूमि देने को तैयार है । प्रतिनिधि मंडल ने प्रधानमंत्री के अतिरिक्त उपप्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई तथा शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो0 शेरसिंह से भी भेंट की । राजधानी के साहित्यकारों ने एक छोटे से समारोह में प्रतिनिधि मंडल का स्वागत किया । समारोह की अध्यक्षता श्री गंगाशरण सिंह ने की । इस प्रतिनिधि मंडल में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की चारों शाखाओं तथा केन्द्रीय शाखा के उच्च पदाधिकारी थे ।

वेदमूर्ति पं0 श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का अभिनंदन :

राजधानी के नागरिकों ने दिल्ली गेट के फुटबाल स्टेडियम में आयोजित एक समारोह में, वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान पं0 श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का अभिनंदन किया । समारोह की अध्यक्षता उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा ने की । उन्होंने अभिनंदन समिति की ओर से वेदमूर्ति सातवलेकर को एक अभिनंदन ग्रंथ भेंट किया । राजधानी के नागरिकों के प्रति आभार प्रकट करते हुए श्री सातवलेकर ने कहा : जब तक हम अपनी भाषाओं का आदर करना नहीं सीखेंगे और विदेशी भाषा को ही हृदय से लगाए रहेंगे तब तक हमारी या हमारे राष्ट्र की उन्नति संभव नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रादेशिक अंचल में

उत्तरप्रदेश

- अखिल भारतीय हिंदी प्रकाशक संघ का तेरहवां वार्षिक अधिवेशन 21 और 22 अप्रैल को श्री कन्हैयालाल मलिक की अध्यक्षता में कानपुर में सम्पन्न हुआ। शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने अपने लिखित उद्घाटन भाषण में जो उनकी अनुपस्थिति में केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के उप निदेशक श्री जीवन नायक द्वारा पढ़ा गया कहा : हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि प्रादेशिक भाषाओं की सभी महत्वपूर्ण पुस्तकों का हिंदी रूपांतर उपलब्ध हो। ऐसा करने से भारत की सभी भाषाओं और हिंदी में एकता स्थापित होगी।

उड़ीसा

- उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा का 34 वां वार्षिक अधिवेशन 27 अप्रैल को केन्द्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक प्रो० ए० चंद्रहासन की अध्यक्षता में हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन राज्य के उपमुख्य मंत्री श्री पवित्र मोहन प्रधान ने किया। 28 अप्रैल को पं० रामेश्वर दयाल दुबे की अध्यक्षता में प्रचारक सम्मेलन हुआ जिसका उद्घाटन डा० हरेकृष्ण मेहताब ने किया। शिक्षा मंत्री श्री वनमाली पटनायक और सहकार विभाग के मंत्री श्री मुरारी प्रसाद मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

पंजाब

- पंजाब सरकार के सचिवालय में एक हिंदी कक्ष खोला गया है जो केंद्रीय सरकार और हिंदी भाषी राज्यों के साथ हिंदी में पत्र व्यवहार करने में पंजाब सरकार के अनुवादक और दुभाषिये का काम करेगा। केन्द्रीय सरकार और हिंदी भाषी राज्यों को भेजे जाने वाले पत्रों के मसौदे संबंधित विभागों द्वारा पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में तैयार किए जाएंगे। हिंदी कक्ष इनका हिंदी अनुवाद करेगा। अहिंदी भाषी राज्यों के साथ केवल अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार किया जाएगा। यह व्यवस्था 13 अप्रैल को गुरुमुखी लिपि में पंजाबी के राजभाषा बन जाने के फलस्वरूप की गई है।

महाराष्ट्र

- बंबई हिंदी विद्यापीठ, बंबई की ओर से विदर्भ क्षेत्र के हिंदी प्रचारकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एक शिविर आयोजित किया गया । शिविर के समापन समारोह में भाषण करते हुए विद्यापीठ के उपकुलपति डा० जी० दि० पराङकर ने कहा : अंग्रेजी बड़ी सम्पन्न भाषा है इसमें कोई संदेह नहीं, परंतु उसको भारतीय भाषाओं पर हावी होने का मौका स्वतंत्र भारत में नहीं दिया जा सकता । हमारा बैर अंग्रेज़ी भाषा से नहीं उसकी प्रभुता से है । अखिल भारतीय स्तर पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए हिंदी को अपनाना ही होगा ।

मैसूर

केन्द्रीय परिवहन मंत्री डा० वी० के० आर० वी० राव ने बंगलौर में प्रकाशकों तथा साहित्यकारों की एक सभा में कहा : यदि इसी समय से स्कूलों और विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी के स्थान पर क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बना दिया जाए तो आगामी 50 वर्षों में भारत विश्व के उन्नत राष्ट्रों में गिना जा सकेगा । विज्ञान और तकनीकी विषयों में क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा देने में अधिक सुविधा होगी । मैं पूरे उत्तरदायित्व के साथ कहता हूं कि इस देश में क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाना सफल होगा ।

हरियाणा :

गुड़गांव स्थित सनातन धर्म कालेज के वार्षिक उत्सव में दीक्षांत भाषण करते हुए शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह ने कहा : सरकार यह निर्णय कर चुकी है कि विश्वविद्यालयों में क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा दी जाएगी । गत दो सौ वर्षों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होने के कारण विश्व के ज्ञान-भंडार में हमारा मौलिक योगदान नगण्य रहा है ।

हिमाचल प्रदेश :

हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री डा० वाई० एस० परमार ने नंगल में एक सभा में भाषण करते हुए कहा है : पहाड़ी भाषा को राजभाषा का दर्जा देने से हिंदी को कोई हानि नहीं होगी क्योंकि हिंदी को राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त है । उन्होंने कहा कि हिंदी आज भी राज्य की सरकारी भाषा है और राज्य का अधिकांश कामकाज हिंदी में होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*विश्वविद्यालयों में

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, तिरुपति का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग - एक परि

श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन-अध्यापन और शोध की व्यवस्था सन् 1959 में हुई। इसके पूर्व हिंदी केवल बी० ए० तक पढ़ाई जाती थी। प्रारंभ से ही डा० विजयपाल सिंह हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे हैं।

इनके अतिरिक्त विभाग में दो रीडर हैं: डा० एस० टी० नरसिंहाचारी तथा डा० चंद्रभान रावत। विभाग में पांच प्राध्यापक और दो ट्यूटर भी हैं।

इस समय बी०ए० में हिंदी का अध्यापन अतिरिक्त विषय, भाषा, सामान्य विषय और विशेष विषय के रूप में होता है। इतने प्रकार की अध्यापन-व्यवस्था का उद्देश्य यह है कि अधिक से अधिक छात्र हिंदी अध्ययन की सुविधा प्राप्त कर सकें। गत वर्ष तक विभाग से 63 छात्र हिंदी में एम०ए० कर चुके थे और 20 छात्र हिंदी एम०ए० का अध्ययन कर रहे थे। सभी छात्र अहिंदी भाषी हैं। एम०ए० में निबंध के प्रश्न-पत्र के स्थान पर छात्र लघु-प्रबंध भी प्रस्तुत कर सकते हैं। इस प्रकार छात्रों द्वारा अब तक विभिन्न विषयों पर पन्द्रह लघु प्रबंध प्रस्तुत किए जा चुके हैं और छः विषयों पर लघु-प्रबंध तैयार किए जा रहे हैं।

विभाग की देख रेख में स्नातकोत्तर शोध कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है: अब तक छः विद्यार्थी पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। स्वीकृत शोध-प्रबंधों के विषय इस प्रकार हैं: भूषण और उनका साहित्य, वृंद और उनका साहित्य, हिंदी और तेलुगु वैष्णव भक्ति साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी - तेलुगु छायावाद काव्य का तुलनात्मक अध्ययन, रीतिकालीन काव्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और केशव की भाषा। दो शोध-प्रबंध विचाराधीन हैं। इनका विषय है: रीतिकालीन काव्य में अभिव्यंजना एवं शिल्प, तथा रामचरितमानस का सांस्कृतिक अध्ययन। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों पर इस समय शोध-कार्य चल रहा है: शुक्ल जी के इतिहास में आदि काल और भक्तिकाल, निराला की काव्य भाषा और शैली का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, दिनकर और उनका काव्य, तेलुगु में हिंदी के आगत शब्द: ध्वनि वैज्ञानिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और अर्थविज्ञानिक अध्ययन, हिंदी साहित्य के इतिहासों में आधुनिक काल, केशव साहित्य का सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक अध्ययन, हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, डा० नगेन्द्र की सैद्धांतिक और व्यावहारिक समीक्षा, और आधुनिक काव्य में अस्पष्टता।

राजकीय छात्रवृत्तियां, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से फेलोशिप आदि की सुविधाएं प्राप्त हुई हैं। बंगाल हिंदी मंडल की ओर से 50 रुपये मासिक की एक छात्रवृत्ति भी विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी को प्रतिवर्ष मिलती है। इसके अतिरिक्त विभाग के छात्रों और अध्यापकों ने अपने निजी प्रयत्नों से नौ हज़ार रुपये की एक निधि एकत्र की है। इस राशि से एम०ए० और बी०ए० में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों को चार पुरस्कार दिए जाते हैं।

पाठ्यक्रम, अध्यापन विधि और शोध पद्धति की समस्याओं पर हिंदी के प्रतिष्ठित विद्वानों से विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए विभाग समय-समय पर विद्वानों की गोष्ठियां आयोजित करता है। अब तक विभाग बड़े पैमाने पर तीन सेमिनार आयोजित कर चुका है।

विभाग के प्राध्यापक इस समय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से शोध की कुछ विशेष योजनाओं में लगे हुए हैं। इनके विषय इस प्रकार हैं : केशव कोश, चित्तूर जिले की हिंदी भाषी जनता का भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण, रीतिकालीन वीर काव्यों का ऐतिहासिक पर्यालोचन, तुलसी का पारिभाषिक शब्द-कोश, हिंदी और तेलुगु की समान शब्दावली, वृंद ग्रंथावली का सम्पादन।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से कुछ अन्य नियमित योजनाएं भी विभाग में चल रही हैं। इनमें तेलुगु और हिंदी का तुलनात्मक व्याकरण, हिंदी और तेलुगु के तुलनीय मुहावरे और हिंदी तथा तेलुगु की विशेष कृतियों का तेलुगु और हिंदी में अनुवाद उल्लेखनीय हैं। तुलनात्मक व्याकरण का काम समाप्त हो चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*विदेशों में

समसामयिक हिंदी कविता का जर्मन भाषा में अनुवाद :

पश्चिम जर्मनी में अभी हाल ही में समसामयिक हिंदी कविताओं के एक संकलन का जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ है । पुस्तक के प्रकाशक हैं एर्डमैन, ट्यूबिंगटन (पश्चिम जर्मनी) और संकलन के संपादक तथा अनुवादक हैं हाइडल विश्वविद्यालय के दक्षिण एशिया संस्थान के प्रतिनिधि डा० लोठार लुट्से । संकलन का नाम श्री कैलाश बाजपेयी की एक कविता पंक्ति "एक सिल की तरह भी गिरी स्वतंत्रता" पर आधारित है । इसमें सर्वश्री अज्ञेय, शमशेर बहादुर सिंह, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, गजानन माधव मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय, राजकमल चौधरी, श्रीकांत वर्मा, कैलाश बाजपेयी, विश्वनाथ त्रिपाठी, अजित कुमार, केदारनाथ सिंह और रमेश गौड़ की कविताएं संकलित की गई हैं ।

बर्मा के हिंदी साहित्यकार का सम्मान :

बर्मा हिंदी साहित्य सम्मेलन के तरहवें वार्षिक अधिवेशन में बर्मा के प्रसिद्ध हिंदी साहित्य सेवी श्री ऊ पारगू का सम्मान किया गया । इस अवसर पर उन्हें "स्वर्गीय बसेसर लाल गोइनका स्मारक साहित्य पुरस्कार" और स्वर्णपदक दिया गया । श्री ऊ पारगू ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी का विधिवत् अध्ययन किया है । अनेक स्वतंत्र रचनाओं के अतिरिक्त अब तक हिंदी और संस्कृत के छोटे-बड़े 18 ग्रंथों का बर्मी में अनुवाद कर चुके हैं । अभिनंदन के उत्तर में श्री ऊ पारगू ने कहा : हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है । यह विश्व की सम्पन्न तथा समृद्ध भाषाओं में से एक है । हिंदी के माध्यम से ही हमें भारतीय आत्मा के सही दर्शन होते हैं ।

रूसी भाषा में भारतीय कहानियां

नाउका प्रकाशन सोवियत संघ में शीघ्र ही भारतीय साहित्य के अनेक संग्रहों का प्रकाशन करेगा । इनमें बीरबल की चतुरता और उसके हास्य की कहानियां भी होंगी । इस संग्रह की एक लाख प्रतियां प्रकाशित की जाएंगी । अभी हाल ही में पंजाब की पौराणिक गाथाओं के एक संग्रह की एक लाख प्रतियां रूसी भाषा में प्रकाशित की गई हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय में प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकों के प्रकाशन की योजना 1963 से चल रही है। योजना के अंतर्गत प्रकाशित पुस्तक की कीमत निदेशालय निश्चित करता है जो लागत के ढाई से तीन गुणा तक होती है। पुस्तक प्रकाशित होने निदेशालय उसकी एक तिहाई प्रतियां खरीद लेता है। अब तक इस योजना के अंतर्गत 64 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 1967-68 में प्रकाशित पुस्तकों की सूची नीचे दी जा रही

क्र०सं०	पुस्तक का नाम	लेखक	प्रकाशक	मूल्य
1-	जनजातीय जीवन और संस्कृति	राजीवलोचन शर्मा	सहकारी प्रकाशन, प्रसारण, कानपुर	6.50
2-	मानवशरीर की वैज्ञानिक पुस्तक	एडिथ ई स्प्राउल	आशा पब्लिशिंग कं०, नई दिल्ली	6.50
3-	ब्रिटैन का इतिहास - दो भाग	रैमजे म्योर	कैपीटल बुक हाउस, दिल्ली	35-00
4-	मनुष्य की उत्पत्ति और मानव जातियां	भूपेन्द्र नाथ सान्याल	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	5.00
5-	पृथ्वी की सच्ची कहानी	पैट्रिक मूर	,,	3.50
6-	नवीन विज्ञान : 1001 प्रश्न और उत्तर	बुडवरी	आत्माराम एंड संस, दिल्ली	8.00
7-	मैडम क्यूरी	ईवक्यूरी	ओरिएण्ट लांगमैंस, नई दिल्ली	3.25
8-	मेरी जीवन गाथा	हैलेन केलर	,,	2.50
9-	जीवों के शत्रु-विषाणु	कैनेथ एम. स्मिथ	आत्माराम एंड संस, दिल्ली	5.00
10-	काल और कला	दिनकर कौशिक	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	8.00
11-	प्रगति के स्वर	यूनेस्को प्रकाशन	एशियन पब्लिशर्स, जालंधर	7.50
12-	अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए शिक्षा	,,	,,	7.00
13-	श्रमिक यूनियनवाद का सार	विक्टर फेथर	सिद्धार्थ पब्लिकेशंस, दिल्ली	5.50
14-	विराट जागृति और प्रजातंत्रवाद की चुनौती	जान स्ट्रैची	,,	6.50
15-	अंग्रेजी भाषा का प्रसार	मोती बाबू ऊषा अग्रवाल	भारतीय अनुवाद परिषद, दिल्ली	2.75
16-	प्रसार एवं ग्राम्य कल्याण	ओ.पी. दहामा	रामप्रसाद एंड संस, आगरा	10.00
17-	वाकाटक-गुप्त-युग	मजूमदार एवं अल्तेकर	मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली	14.00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदेशालय के प्रकाशन

मानक-ग्रंथ

1. सम-स्थानिकों के संसार में (In the World of Isotopes) लेखक : वी० मेजेन्सेफ
   अनु० जगदीश चंद्र सोनी पृष्ठ संख्या : 98 मूल्य : 2.90
2. अर्धचालक और उनके उपयोग (Semi-Conductors and their use)
   लेखक : ए० एफ० यौफी अनु० उदितकुमार शर्मा पृष्ठ संख्या: 125 मूल्य: 3.75
3. शुद्धघन ज्यामिति प्रवेशिका (An Introduction to pure solid Geometry)
   ले० गणेश सखाराम महाजनि अनु०हरीश्वरप्रसाद सिन्हा पृष्ठ संख्या 102 मूल्य 4.15
4. अश्रव्य ध्वनियां (Sounds we cannot hear) ले० : बी० कुद्रयावत्सेव
   अनु० श्री पुरुषोत्तमलाल जैन पृष्ठ संख्या : 127 मूल्य : 3.10
5. कार्बोहाइड्रेट और ग्लाइकोसाइड ले०डा० फूलदेव सहाय वर्मा पृष्ठ : 183 मूल्य: 4.85
6. भारतीय परंपरा (Indian Heritage) ले० : प्रो० हुमायून् कबिर
   अनु० : महेंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ सं० : 122 मूल्य : 2.50
7. अंतर्राष्ट्रीय संबंध ले० महेशप्रसाद टण्डन पृष्ठ सं० : 284 मूल्य : 8.80
8. भारत की वित्तीय शासन व्यवस्था ले० हरिगोपाल परांजपे पृष्ठ सं०: 268 मूल्य: 8.50
9. समीकरण सिद्धांत ले० डा० श्रीराम सिन्हा पृष्ठ सं० : 100 मूल्य : 5.35
10. माताओं और शिशुओं के रोगों की रोकथाम ले० : ओ० मकेयेवा
    अनु० दिनेशचंद्र शर्मा पृष्ठ सं० : 198 मूल्य : 4.00
11. उल्काएँ (Meteors) ले० वी० फेडिंस्की अनु०पवनकुमार जैन पृष्ठ: 122 मूल्य: 2.60
12. रहस्यमय विश्व (The Mysterious Universe) ले० : जेम्स जीन्स
    अनु० : श्रीमती अनन्तलक्ष्मी अम्मान पृष्ठ संख्या : 110 मूल्य : 2.80
13. प्रकाश तरंगें और उनके उपयोग (Light Waves and Their Uses)
    ले० ए० ए० माइकेलसन अनु० ओम प्रकाश वर्मा पृष्ठ सं० : 146 मूल्य: 4.90
14. भाषा, सत्य और तर्क-शास्त्र (Language, Truth and Logic) ले० जे० ए० अय्यर
    अनु० : भूपेंद्रनाथ सान्याल पृष्ठ सं० : 148 मूल्य : 2.95
15. अपना हृदय सबल बनाइए (Strengthen Your Heart) ले० वी० जेलेनिन पृष्ठ: 142

कोश साहित्य

1. पारिभाषिक शब्द-संग्रह (अंग्रेजी-हिंदी) (Consolidated Glossary of Technical Terms) पृष्ठ संख्या : 1370 मूल्य : 12.00
2. शब्दार्थ मीमांसा ले० रामचंद्र वर्मा पृष्ठ सं० : 362 मूल्य : 11.50

भाषा पत्रिका

अब तक 19 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। एक अंक का मूल्य 1.25

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक पृष्ठ संख्या : 148 मूल्य : 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक पृष्ठ संख्या : 270 मूल्य : 12.50

- निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर **प्रबन्धक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-8 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली** से खरीदे जा सकते हैं।

परिषद, दि...
रामप्रसाद एंड संस,
...गरा

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2

अंक 10

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन 12817/66

जय हिंदी जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 जून, 1968 अंक 10

0 भाषा संगम (ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि)

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (हिंदी विद्यापीठ, देवघर)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में

0 नए प्रकाशन

हिंदी : सार्वदेशिक भाषा

हिंदी को सार्वदेशिक भाषा स्वीकार किया जा चुका है और इस निर्णय से पीछे नहीं हटा जा सकता। अतः भाषा संबंधी जो भी चर्चाएं हों वे केवल इस संदर्भ में ही होनी चाहिए कि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी को लाने के लिए कितना समय और चाहिए।

- उपप्रधानमंत्री, श्री मोरारजी देसाई

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक-7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संगम

तृतीय ज्ञानपीठ-पुरस्कार :

भारतीय ज्ञानपीठ की ओर से प्रतिवर्ष भारतीय भाषाओं की सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक रचना पर एक लाख रुपये का पुरस्कार दिया जाता है। इस वर्ष यह पुरस्कार कन्नड़ कवि डा0 के0 वी0 पुटप्पा और गुजराती के साहित्यकार श्री उमाशंकर जोशी में वितरित किया गया है। डा0 पुटप्पा की पुरस्कृत कृति 'रामायण दर्शनम्' एक महाकाव्य है। श्री जोशी को उनके कविता-संकलन 'निशीथ' पर पुरस्कार दिया गया है। पुरस्कार की राशि के साथ लेखकों को प्रशस्ति-पत्र और वाग्देवी की अष्ट-धातु प्रतिमाएं भी भेंट की जाएंगी।

'रामायणदर्शनम्' आधुनिक कन्नड़ साहित्य का एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। यह काव्य कृति गत कई दशाब्दियों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण साहित्यिक रचना मानी जाती है। डा0 के0 वी0 पुटप्पा का जन्म सन् 1904 में मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के एक छोटे से गांव कुप्पाली में हुआ था। तीर्थहल्ली में स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने दक्षिण भारत के कला-केन्द्र मैसूर में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। उनकी प्रकाशित साहित्यिक कृतियों की संख्या लगभग 60 है। इसमें 'रामायणदर्शनम्' के अतिरिक्त 21 काव्य संग्रह, 11 नाटक, 1 उपन्यास, 2 कहानी-संग्रह, 1 रेखाचित्र संग्रह, 9 निबंध संग्रह, समीक्षा ग्रंथ और व्याख्यान संग्रह, 2 जीवनियां और 6 बाल-साहित्य की कृतियां सम्मिलित हैं। तीन अनूदित ग्रंथ, दो काव्य संग्रह और एक उपन्यास प्रेस में है।

श्री उमाशंकर जोशी का जन्म सन् 1911 में गुजरात के एक ग्रामीण अंचल वामना में हुआ था। बचपन से ही वे एक प्रखर-बुद्धि छात्र थे और कविता में उन की नैसर्गिक रुचि थी। वे स्वाधीनता संग्राम के सेनानी थे और असहयोग आंदोलन में दो बार कालेज छोड़ कर जेल गए थे। उनकी प्रथम कविता 'विश्वगीता' अठारह वर्ष की अवस्था में प्रकाशित हुई थी। 'निशीथ' उनका सातवां काव्य संग्रह है। इसमें उनकी 116 कविताएं संकलित हैं। यद्यपि इस ग्रंथ के बाद उनके चार और काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं किंतु 'निशीथ' आज भी उनके काव्य का सफल प्रतिनिधित्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है । इसके लोक गीत गुजरात की जनता में लोकप्रिय हो चुके हैं । श्री जोशी जी की साहित्यिक कृतियों में 8 कविता संग्रह, 2 नाट्य कृतियां, 4 कहानी संग्रह, 1 उपन्यास, 2 निबंध-संग्रह, 8 समीक्षात्मक लेख संग्रह, 2 अनूदित ग्रंथ, 2 शोध-ग्रंथ और 3 सम्पादित ग्रंथ प्रमुख हैं ।

भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा इससे पहले दो पुरस्कार दिए जा चुके हैं । पहला पुरस्कार मलयालम के महाकवि जी० शंकर कुरुप को उनकी काव्यकृति 'ओटक्कुषल' (बांसुरी) पर और दूसरा पुरस्कार बंगला के प्रख्यात लेखक श्री ताराशंकर बंद्योपाध्याय को उनके 'गणदेवता' नामक उपन्यास पर दिया गया था । चौथे पुरस्कार के लिए प्राप्त रचनाओं पर विचार हो रहा है । पांचवें पुरस्कार के लिए विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों के भाषा विभागों, समीक्षकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों आदि से कृतियों के प्रस्ताव विचारार्थ आमंत्रित किए गए हैं । प्रस्ताव-पत्र भारतीय ज्ञानपीठ, 9 अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता से प्राप्त किए जा सकते हैं ।

दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां :

उत्तरप्रदेश सरकार ने निर्णय किया है कि जो विद्यार्थी हिंदी एम०ए० प्रथम श्रेणी में या अच्छे अंकों से द्वितीय श्रेणी में पास करेंगे उन्हें दक्षिण भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए 250 रुपये प्रति मास की छात्रवृत्ति दी जाएगी । छात्रों को तमिल सीखने के लिए अन्नमलै, तेलुगु सीखने के लिए वाल्टेयर, कन्नड़ सीखने के लिए मैसूर और मलयालम सीखने के लिए त्रिवेन्द्रम के विश्वविद्यालयों में भेजा जाएगा । भाषाएं सीखने का पाठ्यक्रम दस मास का होगा और छात्रवृत्ति बारह मास तक दी जाएगी । इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को रेल का किराया तथा अन्य खर्च भी दिया जाएगा ।

हिंदी-तमिल स्वयंशिक्षक का प्रकाशन :

हिंदी माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाएं सिखाने की योजना के अंतर्गत स्वयं शिक्षक माला की प्रथम पुस्तक प्रकाशित हो गई है । "हिंदी तमिल स्वयंशिक्षक" नाम की इस पुस्तक का प्रकाशन केन्द्रीय हिंदी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय) ने किया है । यह पुस्तक हिंदी भाषा के माध्यम से तमिल सीखने में उपयोगी सिद्ध होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

हिंदी विद्यापीठ देवघर :

विदेशी शिक्षा प्रणाली के स्थान पर भारतीय शिक्षा प्रणाली को जनजीवन में लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से सन् 1928 में "हिंदी प्रवेशिका" के नाम से इस संस्था का जन्म हुआ । सात विद्यार्थी और एक अध्यापक के साथ एक साधारण झोपड़ी में इसका कार्य आरंभ हुआ । उस समय हिंदी साहित्य सम्मेलन की विभिन्न परीक्षाओं के लिए पढ़ाई की व्यवस्था की गई । सन् 1930 में असहयोग आंदोलन के सिलसिले में इसके अनेक अधिकारी, शिक्षक और विद्यार्थी जेलों में गए किंतु अध्ययन-अध्यापन का काम चलता रहा । सन् 1935 में इस संस्था को गोबर्द्धन साहित्य महाविद्यालय का रूप दिया गया । इसमें हिंदी साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा के पाठ्य-विषयों को विभिन्न कक्षाओं में बांट कर शुरु से अंत तक पढ़ाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया । सन् 1936 में हिंदी विद्यापीठ स्वतंत्र संस्था के रूप में काम करने लगी और हिंदीविद्, प्रवेशिका, साहित्य भूषण और साहित्यालंकार की परीक्षाओं का संचालन करने लगी । स्व0 डा0 राजेन्द्र प्रसाद इसके स्थायी सभापति बने और अहिंदी भाषी प्रान्तों से बड़ी संख्या में विद्यार्थी हिंदी-अध्ययन के लिए आने लगे । सन् 1957 में संस्था पंजीयन अधिनियम 21 (1860) के अंतर्गत यह संस्था पंजीयित हुई ।

उद्देश्य और कार्यकलाप : संस्था के विधान में इसका उद्देश्य इस प्रकार निर्दिष्ट है : हिंदी भाषा और साहित्य का प्रचार और विकास करना, हिंदी के माध्यम से प्रारंभ से उच्च स्तर की शिक्षा देकर स्वावलंबी, समाजसेवी तथा जागृत नागरिक तैयार करना । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विद्यापीठ अखिल भारतीय स्तर पर विद्यालय, महाविद्यालय शोध संस्थान तथा परीक्षा केन्द्र स्थापित करके हिंदी का प्रचार-प्रसार और विकास करती है ।

शिक्षण तथा प्रचार व्यवस्था :

इस समय हिंदी साहित्य तथा कुछ अन्य विषयों के उच्च अध्ययन के लिए गोबर्द्धन साहित्य महाविद्यालय, हिंदी माध्यम से माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा के लिए उच्च विद्यालय तथा कुमार विद्यालय चल रहे हैं । उच्चतर माध्यमिक (प्रवेशिका)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तर के स्कूलों की संख्या 7 और अलंकार स्तर के कालेजों की संख्या 19 है। इसके अतिरिक्त राजेन्द्र शोध-संस्थान में प्रधानतः हिंदी में स्नातकोत्तर अध्ययन और अनुसंधान की व्यवस्था है।

परीक्षाएं :

विद्यापीठ, हिंदीविद्, प्रवेशिका, साहित्यभूषण और साहित्यालंकार इन चार परीक्षाओं का संचालन कर रही है। भारत सरकार ने अपने यहां नौकरियों आदि के प्रयोजन के लिए प्रवेशिका को एस०एल०सी०, साहित्य भूषण को इण्टर और साहित्यालंकार को बी०ए० की हिंदी योग्यता के समकक्ष माना है। इन परीक्षाओं में लगभग 6000 विद्यार्थी प्रतिवर्ष बैठते हैं। परीक्षा-केन्द्रों की संख्या लगभग 850 है। विद्यापीठ में हिंदी और अंग्रेजी में टाइपराइटिंग और आशुलेखन का प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था है।

शोध-कार्य :

हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विद्यापीठ में बिहार की आदिवासी बोलियों के साहित्य के संग्रह तथा प्रकाशन का काम भी हो रहा है। यह काम राजेन्द्र शोध संस्थान की देख-रेख में होता है। आदिवासी विकास योजना के अंतर्गत बिहार की आदिवासी बोलियों के लोकसाहित्य को हिंदी भाषा तथा आदिवासी बोलियों में प्रकाशित किया जाता है और आदिवासी लोगों के धर्म, संस्कृति आदि के संबंध में शोधपूर्ण ग्रंथ तैयार कराए जाते हैं।

पुस्तकालय तथा वाचनालय :

विद्यापीठ का एक केन्द्रीय पुस्तकालय है जिसमें लगभग 5 हजार पुस्तकें हैं। इसमें हिंदी की अनेक दैनिक तथा नियतकालिक पत्रिकाएं आती हैं।

प्रेस तथा प्रकाशन विभाग :

विद्यापीठ का अपना एक प्रेस है जिसके लिए एक अलग भवन का निर्माण किया गया है। विद्यापीठ के प्रकाशनों में अधिकतर पाठ्य पुस्तकें हैं किंतु कुछ खोजपूर्ण ग्रंथ भी प्रकाशित हुए हैं।

प्रधान कार्यालय :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विद्यापीठ का प्रधान कार्यालय वैद्यनाथ, देवघर (बिहार) में है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की विचार-गोष्ठियां

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से जून मास में विभिन्न विषयों की तकनीकी शब्दावली के निर्माण के संबंध में अनेक विचार-गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। 27-5-68 से 8-6-68 तक त्रिवेन्द्रम में आयोजित विचार-गोष्ठियों में, भौतिकी, रसायन, भूविज्ञान, भूगोल विषयों की शब्दावली पर विचार किया जाएगा। 27-5-68 से 15-6-68 तक मसूरी में आयोजित विचार गोष्ठियों में इतिहास, राजनीति, सैनिक-विज्ञान, अर्थशास्त्र और वाणिज्य तथा साहित्य समालोचना विषयों की शब्दावली पर विचार होगा। वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, समाजशास्त्र, सामाजिक मानव विज्ञान, भौतिक मानव विज्ञान, औषध विज्ञान तथा पुस्तकालय विज्ञान विषयों की शब्दावली पर विचार करने के लिए पूना में 25-5-68 से 8-6-68 तक विचार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है।

शब्दावली पत्रिका का प्रकाशन

भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से पारिभाषिक शब्दावली से संबंधित एक त्रैमासिक पत्रिका शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य आयोग द्वारा तैयार की गई शब्दावली को विश्वविद्यालय के अध्यापकों और विशेषज्ञ विद्वानों में लोकप्रिय बनाना है ताकि विज्ञान और मानविकी की विभिन्न शाखाओं के अध्यापन, मूल लेखन और अनुवाद में इस शब्दावली का अधिकाधिक उपयोग हो सके। विशेष जानकारी के लिए प्रधान प्रकाशन अधिकारी, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, कर्जन रोड बैरक्स, नई दिल्ली-1 से पत्र व्यवहार किया जा सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वित्तीय सहायता के लिए आवेदन आमंत्रित

- केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने हिंदी के प्रचार और विकास में लगी स्वैच्छिक संस्थाओं, विशेषकर अहिंदी भाषी प्रदेशों की संस्थाओं से वित्तीय सहायता के लिए 1 अगस्त तक आवेदन-पत्र मांगे हैं। संस्थाओं को अपने आवेदन-पत्र राज्य सरकारों के माध्यम से भेजने होंगे। विस्तृत जानकारी के लिए अनुसचिव (भाषा) एच-1 अनुभाग, शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली से पत्र-व्यवहार किया जाए।

शिक्षा आयोग की रिपोर्ट हिंदी में प्रकाशित :

शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर सम्यक् विचार करने के लिए भारत सरकार द्वारा डा० दौलतसिंह कोठारी की अध्यक्षता में नियुक्त शिक्षा आयोग की जो रिपोर्ट दो वर्ष पहले अंग्रेज़ी में प्रकाशित हुई थी, उसका हिंदी रूपांतर केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से प्रकाशित किया जा रहा है।

उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका का प्रकाशन :

विधि मंत्रालय के राजभाषा (विधायी) आयोग ने उच्चतम न्यायालय निर्णय पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ कर दिया है। इस मासिक पत्रिका के अप्रैल और मई के अंक निकल चुके हैं। इस पत्रिका में उच्चतम न्यायालय द्वारा महत्वपूर्ण मामलों में दिए गए निर्णयों का हिंदी रूपांतरण प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक मूल्य 45-00 रुपये और एक प्रति का मूल्य 4-00 रुपये है। इसकी प्रतियां, राजभाषा आयोग, विधायी विभाग, विधि मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली से प्राप्त हो सकती हैं।

महालेखाकार, केन्द्रीय राजस्व के कर्मचारियों का हिंदी उत्सव :

केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद, महालेखाकार केन्द्रीय राजस्व शाखा का वार्षिक समारोह 16 मई को कार्यालय के मनोरंजन भवन में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता परिषद की शाखा के संरक्षक श्री डी० डी० धींगरा ने की। परिषद के उपप्रधान श्री म० सुब्रह्मण्यम मुख्य अतिथि थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ का विशेष अधिवेशन :

अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ का विशेष अधिवेशन 29 मई को हुआ । इसमें यह निश्चय किया गया कि हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए एक व्यापक नीति निर्धारित करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय स्तर पर एक विचारगोष्ठी आयोजित की जाए जिसमें सभी हिंदी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित हों । अधिवेशन में यह भी निश्चय किया गया कि हिंदी के संबंध में फैलाई जा रही गलत धारणाओं को दूर करने के लिए विशिष्ट साहित्यकारों का एक शिष्टमंडल अहिंदी भाषी प्रांतों में भेजा जाए । अहिंदी भाषी राज्यों के हिंदी लेखकों की समस्याओं पर भी इस अधिवेशन में विचार किया गया ।

श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का अभिनंदन

हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा "आजकल" के भूतपूर्व संपादक श्री देवेन्द्र सत्यार्थी का उनकी षष्ठिपूर्ति के अवसर पर 28 मई को राजधानी के साहित्यकारों द्वारा अभिनंदन किया गया । शिल्पी चक्र में आयोजित इस समारोह में अनेक साहित्यकार सम्मिलित हुए, यथा: सर्वश्री मुद्राराक्षस, कृष्णा सोबती, देवेन्द्र इस्सर डा० नामवर सिंह, नरेन्द्र धीर आदि और पंजाबी की प्रसिद्ध कवियत्री श्रीमती अमृता प्रीतम।

सत्यार्थी जी ने अपनी दीर्घकालीन साहित्य साधना में हिंदी, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी के अनेक ग्रंथ लिखे हैं और देश भर में भ्रमण करके लोक साहित्य का अमूल्य संग्रह किया है ।

दिल्ली नगर निगम में हिंदी

दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों ने यह आशा व्यक्त की है कि आगामी 15 अगस्त के बाद निगम का सारा काम हिंदी में होने लगेगा । निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री केदारनाथ साहनी द्वारा बुलाई गई बैठक में सभी विभागाध्यक्षों ने कहा कि 15 अगस्त के बाद सारा काम हिंदी में करने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* प्रादेशिक अंचल में

असम

असम राज्य के स्कूलों में हिंदी के अध्ययन की स्थिति :

असम राज्य में, माध्यमिक स्कूलों में हिंदी चौथी कक्षा से आठवीं कक्षा तक और उच्च माध्यमिक स्कूलों में चौथी कक्षा से दसवीं कक्षा तक अनिवार्य है। ग्यारहवीं कक्षा में हिंदी अनिवार्य नहीं है।

चौथी कक्षा से आठवीं कक्षा तक और नवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक अहिंदी माध्यम वाले स्कूलों में हिंदी के स्तर की तुलना क्रमश: हिंदी माध्यम वाले स्कूलों की चौथी कक्षा से छठी कक्षा तक और सातवीं कक्षा से आठवीं कक्षा तक के स्तर से की जा सकती है।

माध्यमिक स्तर पर हिंदी में परीक्षा देना अनिवार्य नहीं है।

माध्यमिक स्कूलों में नवीं और दसवीं कक्षा में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों की संख्या लगभग 4500 और 4000 है।

दूसरी और तीसरी योजना की अवधि में विभिन्न स्कूलों में क्रमश: 519 और 300 हिंदी शिक्षक नियुक्त किए गए। चौथी योजना की अवधि में लगभग 1000 और हिंदी शिक्षकों की आवश्यकता होगी।

हिंदी शिक्षकों के लिए मिडिल स्कूलों में वेतनमान रु0 140-275 है। उनकी हिंदी की योग्यता हिंदी विषय में इंटरमीडिएट के समकक्ष होनी चाहिए और उन्हें कम से कम मिडिल पास होना चाहिए, यद्यपि मैट्रिक को तरजीह दी जाती है।

हाई स्कूलों और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में हिंदी शिक्षकों का वेतनमान रु0 200-500 है। उनकी हिंदी योग्यता हिंदी में बी0ए0 परीक्षा के बराबर होनी आवश्यक है। कम से कम उन्हें मिडिल पास होना चाहिए, यद्यपि मैट्रिक को तरजीह दी जाती है।

उत्तर प्रदेश

उत्तरप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का 13वां अधिवेशन :

उत्तरप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन का 13वां अधिवेशन हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री यशपाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशपाल ने कहा : हिंदी को अपनाए बिना भारत में लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता है। भाषाओं के 'असमान बोझ' की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा : यदि अहिंदी भाषी क्षेत्र अपनी असुविधाएं दूर करने के उपायों की मांग करें तो कोई भी व्यक्ति उनसे असहमत नहीं होगा परन्तु अंग्रेजी को अनिवार्य बनाकर सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए समान असुविधा की एक स्वाभाविक स्थिति बना देना न्याय संगत नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में अंग्रेजी के आधिपत्य की आलोचना करते हुए उन्होंने कहा : सर्वसाधारण की शिक्षा में अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को अनिवार्य बना देना जनता पर एक असंगत और निरर्थक बोझ लाद देना है। मैट्रिक या बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त करने वाले अधिकांश लोगों के जीवन में अंग्रेजी ज्ञान के उपयोग का कोई अवसर नहीं आता।

- उत्तर प्रदेश सरकार ने हिंदी के विकास के लिए एक हिंदी संस्थान स्थापित करने का निश्चय किया है। इस पर तीन लाख रुपया खर्च होगा। हिंदी की मौलिक पुस्तकें, अन्य भाषाओं से अनूदित पुस्तकें तथा शोध ग्रंथों का प्रकाशन इस संस्थान का प्रमुख काम होगा। संस्थान को हिंदी के एक व्यापक कोश के प्रणयन और प्रकाशन का काम भी सौंपा जाएगा।

- केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की ओर से विभिन्न स्थानों पर केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के हिंदी सम्मेलन आयोजित किए गए। 19 मई को लखनऊ में एक सम्मेलन हुआ। इस अवसर पर केन्द्रीय वित्त मंत्रालय के उपमंत्री श्री जगन्नाथ पहाड़िया ने कहा : स्वतंत्र देश में विदेशी भाषा का बोलबाला होना अशोभनीय है। सरकारी काम-काज उस भाषा में किया जाना चाहिए जिसे अधिकांश जनता समझ सके या व्यवहार में ला सके।

महाराष्ट्र

- केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद की बम्बई शाखा ने 22 मई 1968 को बम्बई में गुजरात और महाराष्ट्र के सरकारी कर्मचारियों के हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए महाराष्ट्र सरकार के उपमंत्री श्री सुंदरराव सोलंके ने कहा कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग धीरे-धीरे बढ़ाया जाना चाहिए। अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रो० ए० चंद्रहासन ने कहा : हिंदी के सार्वदेशिक रूप का विकास करने के लिए सभी भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाना चाहिए और अंग्रेजी के तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दों को लेने में भी नहीं हिचकना चाहिए। परिषद की समन्वय समिति के मंत्री श्री कृष्ण शिवमणि ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि नगर में 3286 कर्मचारी हिंदी सीख रहे हैं।

– पूना विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह 27 मई को पूना में मनाया गया। इस अवसर पर दीक्षांत भाषण करते हुए विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री एस०वी० दाटेस्कर ने कहा : भाषा समस्या राजनैतिक भूल के कारण पैदा हुई है। भूल यह है कि हमने भाषा को शिक्षा साधन बनाने के बदले उसे साध्य बना दिया है।

– पूना विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद ने हाल ही में हुई अपनी बैठक में सिफारिश की है कि बिना अंग्रेजी लिए एस०एस०सी० परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों के लिए बी०ए० और एम०ए० के ऐसे पाठ्यक्रम शुरू किए जाएं जिनमें अंग्रेजी विषय न हो। परिषद ने कहा है कि पूना विश्वविद्यालय को इस दिशा में पहल करनी चाहिए।

मध्यप्रदेश

– केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री श्री भागवत झा आजाद ने इंदौर में पत्रकारों को बताया : शिक्षा में गुणात्मक सुधार तभी संभव होगा जब शिक्षा का माध्यम तथा भारतीय सेवाओं में भर्ती की परीक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं होंगी।

केरल

– केरल हिंदी प्रचार सभा का नवां पदवीदान समारोह 28 मई 1968 को टैगोर सैंटिनरी थियेटर में सम्पन्न हुआ। केरल के शिक्षा मंत्री श्री सी० एच० मुहम्मद कोया ने समारोह की अध्यक्षता की और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (दिल्ली) के निदेशक प्रो० ए० चन्द्रहासन ने दीक्षांत भाषण दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

मद्रास विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग - एक परिचय

मद्रास विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना सन् 1952 में हुई थी। विभाग के अध्यक्ष पद पर इस समय डा० एस० शंकर राजू नायडू काम कर रहे हैं। डा० एस० एन० गणेशन इनके सहयोगी प्राध्यापक हैं।

विश्वविद्यालय में हिंदी एम०ए० का पाठ्यक्रम है किंतु हिंदी कालेज ने अभी संबद्धता प्राप्त नहीं की है। सन् 1957 से पहले अनेक छात्र 'प्राइवेट' तौर पर परीक्षा देकर हिंदी एम० ए० की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं।

अब तक पी-एच० डी० की डिग्री के लिए एक शोध प्रबन्ध स्वीकृत हुआ है। इसका विषय है 'कम्ब रामायण और तुलसी रामायण का तुलनात्मक अध्ययन'। विभाग ने कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं। इनमें एक शोध ग्रंथ तथा तीन अन्य ग्रंथ हैं। अन्य प्रकाशनों में तमिल की प्रसिद्ध कृति 'तिरुक्कुरळ' का हिंदी अनुवाद और हिंदी ग्रंथ 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का तमिल अनुवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विभाग 'जर्नल आफ ओरियंटल रिसर्च' नामक पत्रिका के हिंदी खंड का प्रकाशन भी करता है।

अन्य विश्वविद्यालय

'हिंदी समाचार आत' के गत अंकों में अहिंदी भाषी प्रदेशों के अनेक विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों की जानकारी प्रकाशित की जा चुकी है। कुछ विश्वविद्यालय ऐसे भी हैं जिनमें स्वतंत्र हिंदी विभाग नहीं हैं फिर भी हिंदी में स्नातकोत्तर अध्ययन की सुविधा किसी न किसी रूप में उपलब्ध है। इन विश्वविद्यालयों के बारे में संक्षिप्त जानकारी नीचे दी जा रही है।

मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद

मराठवाड़ा विश्वविद्यालय में स्वतंत्र हिंदी विभाग की स्थापना अभी तक नहीं हुई है। फिर भी संबद्ध कालेजों के प्राध्यापकों की सहायता से हिंदी में स्नातकोत्तर अध्ययन की व्यवस्था है। प्रोफेसर इन्चार्ज डा० चन्द्रभान रावत के अतिरिक्त प्रो० पी० एल० राजूरकर, श्री आई० एस० पवार और श्री पी० पी० अग्रवाल हिंदी अध्यापन का कार्य करते हैं अब तक 65 छात्र हिंदी में एम० ए० कर चुके हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1967-68 के शैक्षिक वर्ष में हिंदी एम०ए० का अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या 20 थी। इनमें 17 हिंदी भाषी और 3 अहिंदी भाषी थे।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध-कार्य की व्यवस्था भी है। इस समय डा० भालचन्द्र तैलंग के निर्देशन में निम्नलिखित विषयों पर शोध कार्य हो रहा है :-

1- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी — श्री बी० के० आर्य
2- हिंदी और मराठी का रीति शृंगार — श्री वाई० एस० पवार
3- मराठवाड़ा हिंदी कलगी तुर्रा काव्य — श्री के० डी० ढोकरात
4- हिंदी और बंजारा बोली — श्री पी० एस० गोहेल
5- हरियाणा क्षेत्र के लोकगीतों का सामाजिक पहलू — श्री जे० बी० शर्मा
6- मराठी, हिंदी और दक्खिनी भाषाओं के आख्यान काव्यों का तुलनात्मक अध्ययन — श्रीमती राजकुमारी शर्मा
7- दक्खिनी हिंदी के विकास में मुस्लिम कवियों का योगदान — श्री एन० एम० सूर्यवंशी
8- एकनाथी साहित्य और भाषा का अध्ययन — श्री एस० डी० पालकी
9- उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ का हिंदी गद्य — श्री टी० बी० कावडे

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित विषयों पर स्वतंत्र रूप से शोध कार्य हो रहा है :-

1- जानकी प्रसाद कृत राम रसायन — श्री के० बी० मित्र
2- रामकथा चरितों का तुलनात्मक अध्ययन — श्री बी० एस० राजूरकर

एस० एन० डी० टी० महिला विश्वविद्यालय, बम्बई

इस विश्वविद्यालय में भी स्वतंत्र हिंदी विभाग स्थापित नहीं हुआ है किंतु इसके द्वारा संचालित और इससे संबद्ध कालेजों में सभी स्तरों पर ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था है। सन् 1958 से 1966 तक विश्वविद्यालय से 153 छात्र हिंदी में एम०ए० कर चुके हैं जिनमें से 26 हिंदी भाषी तथा 127 अहिंदी भाषी हैं। 1967-68 के शैक्षिक वर्ष में हिंदी एम० ए० की तैयारी करने वाले छात्रों की संख्या 32 है जिसमें 8 हिंदी भाषी और 24 अहिंदी भाषी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

इस विश्वविद्यालय में भी अभी हिंदी विभाग की स्थापना नहीं हुई है किंतु सन् 1964 से हिंदी में एम०ए० करने की सुविधा अवश्य है। अब तक 59 छात्र मुख्य विषय के रूप में हिंदी एम०ए० कर चुके हैं।

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य की भी व्यवस्था है। एक छात्र कुमारी हेमा कर्णिक को पी-एच डी० की उपाधि दी गई है। शोध प्रबंध का विषय था: हिंदी नाट्य साहित्य में नारी भावना तथा मराठी नाट्य साहित्य से प्रासंगिक तुलना (1850 से 1950) तक। निम्नलिखित विषयों पर शोध हो रहा है :-

1- हिंदी के ऐतिहासिक नाटकों में ऐतिहासिक तत्व तथा उनके मूल स्रोत — श्री बी० वी० कुलकर्णी
2- हिंदी नाटक और रस सिद्धांत — श्री वी० वी० कोटवाणे
3- आधुनिक हिंदी काव्य में भारतीय - पाश्चात्य दार्शनिक एवं धार्मिक तत्व — श्री एस० एस० नोटानी
4- हिंदी कथा साहित्य में प्रतिबिंबित मानवतावाद — श्री एस० जी० गोकाकर

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

पंजाबी विश्वविद्यालय में कोई स्वतंत्र हिंदी विभाग नहीं है किंतु विश्वविद्यालय से संबद्ध महेन्द्र कालेज में हिंदी एम०ए० की कक्षाएं चलती हैं। इस कालेज में हिंदी के तीन प्राध्यापक हैं। सन् 1966 तक 62 छात्र हिंदी एम०ए० पास कर चुके थे। प्रतिवर्ष 25-30 छात्र हिंदी एम०ए० की कक्षाओं में प्रवेश पाते हैं।

बंबई विश्वविद्यालय, बम्बई

यद्यपि बम्बई विश्वविद्यालय में स्वतंत्र हिंदी विभाग अभी तक स्थापित नहीं हुआ है किंतु विश्वविद्यालय से संबद्ध अनेक कालेजों में हिंदी के स्नातकोत्तर अध्यापन तथा अनुसंधान की सुविधा है।

अहिंदी भाषी प्रदेशों के निम्नलिखित विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग नहीं हैं: रवीन्द्र भारती कलकत्ता, कल्याणी विश्वविद्यालय, कल्याणी, बर्दवान विश्वविद्यालय, बर्दवान, गोहाटी विश्वविद्यालय, गोहाटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

० नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ०	मूल्य
	सामयिक प्रकाशन, 2 अन्सारी रोड, दरियागंज, दिल्ली-6 :			
भारतीय काव्यशास्त्र	सं० उदयभानु सिंह	समालोचना	264	15-00
महाकवि विद्यापति	कृष्णनंदन पीयूष	,,	262	15-00
	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी :			
अतीत का अभिनन्दन	प्रो० मायाप्रसाद त्रिपाठी	निबंध	182	2-00
	साहित्य मंदिर, सी०के० 15।3 बुलानाला, वाराणसी :			
अंतरिक्ष की ओर	महावीर प्रसाद अग्रवाल	अंतरिक्ष विज्ञान	144	6-00
	जनसेवक भोजपुरी साहित्य परिषद, 1 जौनपुरी बाजार, जमशेदपुर :			
बुरक बनली	रसिक बिहारी ओझा	एकांकी	131	2-00
	रूप सहकार, 218 वासी प्रोफेसर्स क्वार्टर्स, वल्लभविद्यानगर :			
अकथ	श्रीमानंद सारस्वत, महावीर दाधीच, कीर्तिनाथ कुर्तकोटि	कविता संग्रह	64	3-00
	केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली :			
संकलन	संपादक : ए० चंद्रहासन, श्री जीवन नायक, श्रीमती तारा तिक्कू, श्री जगदीश चतुर्वेदी	भारतीय साहित्य की प्रतिनिधि रचनाएं	580	10-50
	काथलिक प्रेस, रांची :			
अंग्रेजी हिंदी कोश	फादर कामिल बुल्के	कोश	891	15-00
	रचना प्रकाशन, 5 खुसरो बाग, इलाहाबाद-1 :			
तुलसी पूर्व राम साहित्य	डा० अमरपाल सिंह	शोध प्रबंध	287	18-00
प्रसाद के नाटकों में नियतिवाद	पद्माकर शर्मा	समालोचना	146	8-00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वदर्शन की पत्रिका

यूनेस्को कूरियर (हिन्दी)

यूनेस्को का मासिक पत्र "यूनेस्को कूरियर" विश्व की दस भाषाओं में (अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनी, रूसी, जर्मनी, इतालवी, अरबी, हिंदी और तमिल) प्रकाशित होता है। प्रतिमास 120 देशों में 15 लाख से अधिक लोग इसे पढ़ते हैं। इसमें अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से शिक्षा-विज्ञान और संस्कृति संबंधी समाचार, लेख, चित्र आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। इस की गणना संसार की सर्वश्रेष्ठ सचित्र पत्रिकाओं में की जाती है। निष्पक्ष रूप से तथ्यों को प्रस्तुत करने वाली यह प्रमुख पत्रिका है।

अध्यापकों, छात्रों और सर्वसाधारण के लिए यह अत्यंत उपादेय पत्रिका है। सभी पुस्तकालयों, क्लबों, वाचनालयों और सबसे बढ़ कर हमारे घरों में इसको स्थान मिलना चाहिए। शैक्षिक संस्थाओं के लिए वार्षिक चंदा (11 अंक) 9.50 रुपये और अन्य ग्राहकों के लिए 10.50 रुपये। ग्राहक बनने के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम को अग्रिम वार्षिक चंदा भेजें।

भाषा (त्रैमासिक)

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याओं पर विचारों के आदान-प्रदान का एकमात्र मंच। समय-समय पर प्रकाशित विशेषांक पत्रिका के अतिरिक्त आकर्षण हैं। मूल्य एक प्रति 2.00 रुपये। वार्षिक : 7.50 रुपये। प्राप्ति स्थान : प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, पटियाला हाउस, नई दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए लें० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास लें० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा -- लें० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा
महा प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अंक 11

29-10-68

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817/66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 जुलाई, 1968 अंक 11

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति)

0 हिंदी

- भारत सरकार में
- राजधानी में
- प्रादेशिक अंचल में
- विश्वविद्यालयों में
- विदेशों में

0 नए प्रकाशन

हिंदी पुस्तकों की थोक खरीद

अहिंदी भाषी क्षेत्रों की शैक्षिक संस्थाओं को मुफ्त वितरण के लिए, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी ललित और सरल वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य की मौलिक एवं अनूदित पुस्तकें आमंत्रित की जा रही हैं । पुस्तकें (तीन-तीन प्रतियां) भेजने की अंतिम तारीख 25 अगस्त 1968 है । विस्तृत जानकारी के लिए प्रमुख पत्र-पत्रिकाएं देखें ।

(केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक - 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

o भाषा संगम

हिंदी माध्यम से तेलुगु सीखने के लिए पुस्तक-माला

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की आंध्र शाखा ने हिंदी के माध्यम से तेलुगु सिखाने के लिए आठ पुस्तकें तैयार की हैं। इस पुस्तक-माला का विमोचन 3 जुलाई 1968 को नई दिल्ली नगरपालिका के हाल में आयोजित एक समारोह में किया गया। उप प्रधान मंत्री श्री मोरारजी देसाई की अनुपस्थिति में डा० रामधारी सिंह 'दिनकर' ने पुस्तक-विमोचन किया। अपने संदेश में श्री देसाई ने कहा : भावात्मक एकता को मजबूत बनाने के लिए भाषा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सामने रखकर दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा जैसी संस्थाएं उत्तर और दक्षिण की भाषाओं के समन्वय से देश के दोनों भागों को मिलाने के लिए जो काम कर रही है वह देश की एकता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान है।

भाषा शास्त्र का ग्रीष्मकालीन स्कूल :

बड़ौदा विश्वविद्यालय में गत मई-जून में भाषा शास्त्र के शिक्षण के लिए एक ग्रीष्म-स्कूल चलाया गया जिसमें विभिन्न प्रदेशों के लगभग 95 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। बड़ौदा विश्वविद्यालय के भाषा शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो० डी० डी० माहुलकर के निर्देशन में यह शिक्षण सम्पन्न हुआ। ग्रीष्म स्कूल का आयोजन बड़ौदा विश्वविद्यालय और लिंग्विस्टिक सोसाइटी आफ इंडिया के सम्मिलित प्रयास से हुआ और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इसके लिए आर्थिक सहायता दी।

भारतीय भाषाओं के विकास के लिए अंग्रेजी का आधिपत्य समाप्त हो :

सांगली (महाराष्ट्र) के प्राथमिक शिक्षण मंडल की ओर से आयोजित एक सभा में अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए महाराष्ट्र के शिक्षा शास्त्री प्रो० पी०बी० पाटिल ने कहा : अंग्रेजी हमारे जीवन में वह स्थान नहीं ले सकती जो मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा को प्राप्त है। यदि अंग्रेज़ी को यह स्थान देने का प्रयत्न किया गया तो उसका विरोध किया जाएगा। मुट्ठी भर अंग्रेजी भक्तों का हठ हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को बहुत बड़ी हानि पहुंचा रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, बेंगलूर :

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति एक सार्वजनिक रजिस्टर्ड संस्था है। यह मैसूर राज्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार कर रही है। हिंदी के प्रचार को एक राष्ट्रीय कार्य मानते हुए इसे आगे बढ़ाने के उद्देश्य से यह संस्था सन् 1952 में स्थापित हुई थी। हिंदी के प्रचार, प्रसार और विकास में महिलाओं के योगदान की प्रतीक इस संस्था के सारे पदाधिकारी महिलाएं हैं किंतु कार्य-क्षेत्र केवल स्त्रियों के लिए सीमित नहीं है। इसकी सेवाओं का लाभ स्त्रियों और पुरुषों दोनों को मिल रहा है। हिंदी प्रेमी 3 रुपये देकर इसका सदस्य बन सकता है। इस समय इसकी सदस्य संख्या 1416 है।

समिति का उद्देश्य और कार्य : भारत की एकता समिति का प्रधान लक्ष्य है। हिंदी भाषा का प्रचार उसका साधन है। मैसूर राज्य में प्रांतीय भाषा तथा अंतर-प्रांतीय कार्यों में हिन्दी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समिति सतत प्रयत्नशील है। इसके अतिरिक्त कन्नड़ साहित्य की श्रेष्ठ कृतियों और कृतिकारों को हिंदी में लाना तथा योग्य लेखकों को हिंदी में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना भी समिति का एक पूर्वनिर्धारित कर्तव्य है।

परीक्षाएं :

समिति इस समय पांच परीक्षाओं का संचालन करती है। ये परीक्षाएं हैं - प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, भाषाभूषण और भाषा प्रवीण (उपाधि परीक्षा)। मैसूर राज्य ने सीनियर प्राथमिक स्कूलों और हाई स्कूलों में हिंदी अध्यापकों की नियुक्ति के लिए समिति की भाषाभूषण और भाषाप्रवीण परीक्षाओं को स्थायी मान्यता प्रदान की है। भारत सरकार में नौकरियों के प्रयोजन के लिए समिति की परीक्षाओं की मान्यता का प्रश्न विचाराधीन है। मैसूर, असम तथा गोवा की सरकारों ने भाषाप्रवीण परीक्षा को उपाधि परीक्षा मान लिया है। इन परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लगभग 4 हज़ार विद्यार्थी शामिल होते हैं। लगभग 650 प्रचारक और प्रचारिकाएं हिन्दी अध्यापन के कार्य में लगी हुई हैं। इस समय लगभग 200 निःशुल्क वर्ग चल रहे हैं। ये परीक्षाएं वर्ष में दो बार होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपर्युक्त परीक्षाओं के अतिरिक्त समिति स्कूली छात्रों के लिए परिचय, प्रवेश, दूसरी और तीसरी इन चार विशेष परीक्षाओं का संचालन करती है। ये परीक्षाएं क्रमशः सातवीं, आठवीं, नवीं और दसवीं कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए हैं। इन परीक्षाओं का पाठ्यक्रम वही है जो स्कूलों में निश्चित है। परीक्षाएं वर्ष में एक बार जनवरी-फरवरी में होती हैं। इनमें प्रवेश चाहने वाले विद्यार्थियों की संख्या प्रति वर्ष एक लाख से अधिक होती है।

पुस्तकालय तथा वाचनालय : समिति के 5 प्रमुख पुस्तकालय हैं जिनके स्थायी सदस्य लगभग 250 हैं। छात्रों को हिंदी जगत की विभिन्न गतिविधियों से परिचित रखने के लिए समिति ने 5 वाचनालय भी खोले हैं जिनमें दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक तथा वार्षिक हिंदी पत्र-पत्रिकाएं मंगाई जाती हैं।

पुस्तक प्रकाशन : समिति ने अब तक 14 पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित की हैं। समिति 25,000 रुपये की अनुमानित लागत से कन्नड़ की कुछ पुस्तकों के हिंदी अनुवाद तथा हिंदी-कन्नड़ कोश तैयार कर रही है। लगभग 10000 रुपये की अनुमानित लागत से हिन्दी की एक मासिक पत्रिका निकालने की भी योजना है।

सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कार्यक्रम : समिति समय-समय पर साहित्यिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इनमें देश के विभिन्न भूभागों के हिंदी विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है। हिंदी के प्रचार और हिंदी के शिक्षण में सुधार के उद्देश्य से अध्यापकों तथा प्रचारकों की विचार गोष्ठियां समय-समय पर आयोजित की जाती हैं। छात्रों में हिंदी लेखन तथा भाषण की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देने के लिए प्रतिवर्ष राज्य स्तर और ज़िला-स्तर पर लेखन और भाषण स्पर्धाएं चलाई जाती हैं और योग्य छात्रों को पुरस्कार दिए जाते हैं।

पुनश्चर्या पाठ्यक्रम : हिंदी के अध्यापकों को हिंदी शिक्षण की नवीनतम प्रणालियों से अवगत कराने के लिए समिति छः सप्ताह का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम चलाती है। अब तक मैसूर राज्य के शिक्षा विभाग के सहयोग से ऐसे दो सत्र चलाए जा चुके हैं। माध्यमिक स्कूलों के लगभग 250 अध्यापकों ने इनसे लाभ उठाया।

समिति का मुख्य कार्यालय चामराज पेट, बेंगलूर-14 में स्थित है। इसकी वर्तमान अध्यक्षा श्रीमती आर० मन्नूबाई मानेजी और सचिव श्रीमती एन० सुशीला हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ हिंदी

भारत सरकार में

<u>अहिंदी भाषी राज्यों के छात्रों को हिंदी अध्ययन के लिए छात्रवृत्तियां :</u>

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने, 1968-69 में अहिंदी भाषी राज्यों के छात्रों को, हिंदी में मैट्रिकोत्तर अध्ययन के लिए एक हजार छात्रवृत्तियां देने का निर्णय किया है। छात्रवृत्तियों का राज्यवार वितरण इस प्रकार होगा - आंध्रप्रदेश 205, असम 84, गुजरात 54, जम्मू और कश्मीर 9, केरल 95, मद्रास 100, महाराष्ट्र 104, मैसूर 133, उड़ीसा 46, पंजाब 28, पश्चिम बंगाल 92, नागालैंड 1, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह 1, चंडीगढ़ 1, दादरा और नगरहवेली 1, गोवा, दीव और दमन 11, मणिपुर 2, नेफा 1, पांडिचेरी 1, त्रिपुरा 3 और लकादीव 1। पूर्व विश्वविद्यालय, इंटरमीडिएट तथा डिग्री पाठ्यक्रम (प्रथम वर्ष) कक्षाओं में अहिंदी भाषी राज्यों में पढ़ने वाले छात्रों को 50 रुपये प्रतिमास और हिंदी राज्यों में पढ़ने वाले छात्रों को 80 रुपये प्रतिमास मिलेंगे। इसी प्रकार बी०ए० द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष के छात्रों को क्रमशः 75 रुपये और 105 रुपये तथा एम०ए०, एम०लिट्, पी-एच०डी० और हिंदी अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के छात्रों को क्रमशः 100 रुपये और 125 रुपये छात्रवृत्ति के रूप में मिलेंगी।

<u>बाल साहित्य प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें आमंत्रित :</u>

केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने 14वीं बाल साहित्य प्रतियोगिता के लिए 16 अगस्त 1968 तक पुस्तकें तथा पांडुलिपियां आमंत्रित की हैं। इस प्रतियोगिता में 1966, 1967 तथा 1968 में अब तक लिखी पुस्तकें/पांडुलिपियां भेजी जा सकती हैं। पाठ्य पुस्तकों पर विचार नहीं किया जाएगा। जिस पुस्तक को केन्द्रीय या राज्य सरकार द्वारा अथवा सरकारी सहायता प्राप्त संस्था या अंतर्राष्ट्रीय संगठन द्वारा पुरस्कार मिल चुका है उसे प्रतियोगिता में शामिल नहीं किया जाएगा। लेखक और प्रकाशक क्रमशः 3 रुपये और 5 रुपये के शुल्क के साथ पुस्तक/पांडुलिपि सहायक शिक्षा सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, अनुभाग बी०एस०ई० 3, शास्त्री भवन, नई दिल्ली को भेज सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी की टेलीफोन निर्देशिका :

दिल्ली नगर के लिए प्रथम हिंदी टेलीफोन निर्देशिका अक्तूबर मास के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित हो जाएगी। इस निर्देशिका को तैयार करने में 50 कर्मचारियों को 9 महीने लगे हैं। अंग्रेजी की निर्देशिका की तुलना में हिंदी निर्देशिका तैयार करने का काम बहुत कठिन था। अंग्रेजी निर्देशिका में तो कुछ नामों को जोड़ने और कुछ को काटने का ही काम था किंतु हिंदी निर्देशिका में नामों के सही उच्चारण और नागरीकरण तथा अनुक्रम की समस्याएं बहुत पेचीदा थीं।

हिंदी प्रयोग विषयक आदेश :

गृह मंत्रालय की ओर से सभी मंत्रालयों तथा संलग्न कार्यालयों को शीघ्र ही ऐसे निर्देश दिए जा रहे हैं जिनमें उनसे कहा गया है कि हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाएं। इस प्रश्न पर अभी हाल ही में मंत्रिमंडल की एक बैठक में विचार हुआ था। बैठक में सामान्य रूप से यह महसूस किया गया कि राजभाषा (संशोधन) अधिनियम के पास हो जाने के बाद अब मंत्रालय को अधिनियम में निर्दिष्ट कार्यविधि अपनानी चाहिए। अधिनियम के अंतर्गत कोई भी राज्य केन्द्र के साथ अंग्रेजी या हिंदी में पत्र-व्यवहार कर सकता है और उसी भाषा में उत्तर की अपेक्षा कर सकता है। मंत्रिमंडल की बैठक में इस विषय पर सभी एक मत थे कि जिस प्रशासनिक एकक में कर्मचारियों की कमी की वजह से निर्दिष्ट कार्यविधि को अपनाना संभव न हो उसकी ओर तत्काल ध्यान दिया जाए।

भारतीय भाषाएं सिखाने के लिए नवीन तरीकों की खोज :

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की प्रशासन समिति ने परिषद को निर्देश दिया है कि वह अंग्रेजी तथा भारतीय भाषाएं पढ़ाने के नवीनतम तरीकों के विकास तथा उनमें अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए योजना बनाए। प्रशासन समिति ने यह निर्णय शिक्षा मंत्री डा० त्रिगुण सेन के एक सुझाव पर किया है। समिति के निदेश में यह भी कहा गया है कि उक्त योजना बनाते समय परिषद हैदराबाद के अंग्रेजी संस्थान, आगरा के हिंदी संस्थान तथा दिल्ली के रूसी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में

– केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद ने जीवन बीमा कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हाल ही में 'जीवन बीमा-प्रारूप और टिप्पणियां' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है । यह पुस्तक बीमा संबंधी कामों को हिंदी में करने के लिए उपयोगी है । पुस्तक में विकास अधिकारी तथा एजेंटों की नियुक्ति, कमीशन, लाइसेंसों का नवीकरण, बीमा प्रस्ताव, डाक्टरी परीक्षा, आयु निर्धारण, वेतन बचत योजना और भुगतान आदि की अवधि बदलने के कार्य से संबंधित टिप्पणियों तथा मसौदों के नमूने दिए गए हैं ।

– हिंदी के प्रमुख साहित्यकार तथा वयोवृद्ध संसद सदस्य सेठ गोविन्द दास ने हिंदी राज्यों को चेतावनी दी है कि यदि इस वर्ष के अंत तक सरकार के सारे कामों में हिंदी का प्रयोग शुरू नहीं हुआ तो इन राज्यों के मुख्य मंत्रियों का घेराव किया जाएगा । उन्होंने बताया कि यह घेराव पूर्णतः अहिंसक होगा । उन्होंने यह सुझाव भी दिया है कि भाषा समस्या को हल करने के लिए एक गोल मेज़ कान्फ्रेंस तुरंत बुलाई जाए । भाषा समस्या पर व्यापक चर्चा करते हुए उन्होंने कहा : लोक सेवा आयोग की परीक्षाएं क्षेत्रीय भाषाओं में करने का जो निर्णय किया गया है उसे तुरंत कार्यान्वित किया जाना चाहिए । केन्द्र तथा हिंदी भाषी राज्यों के बीच पत्राचार हिंदी में ही होना चाहिए ।

– भारतीय साहित्य परिषद की ओर से 23 जून, रविवार को राजधानी में भारतीय भाषाओं के विज्ञान-लेखकों और वैज्ञानिकों की एक गोष्ठी आयोजित की गई । गोष्ठी की अध्यक्षता डा० बालकृष्ण करुणाकर नायर ने की । गोष्ठी में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किए गए : (1) सभी भाषाओं के प्रकाशक मिल कर साल में कम से कम एक बार एक पुस्तिका का प्रकाशन करें जिसमें साल भर में प्रकाशित लोकप्रिय पुस्तकों की विषयवार सूची दी जाए, (2) समस्त भारतीय भाषाओं के विज्ञान-लेखकों का एक सम्मेलन बड़े पैमाने पर बुलाया जाए जिसमें विभिन्न प्रदेशों के विज्ञान-लेखक संघों के प्रतिनिधि शामिल हों, (3) भारतीय वैज्ञानिकों से लोकप्रिय वैज्ञानिक साहित्य लिखने का अनुरोध किया जाए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. प्रादेशिक अंचल में

मद्रास

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का पदवीदान समारोह

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का 38वां पदवीदान समारोह 23 जून को मद्रास में सम्पन्न हुआ । अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ के अध्यक्ष बाबू गंगाशरण सिंह ने अपने दीक्षांत भाषण में कहा : भाषा को लेकर उपद्रव मचाने वाले न तो हिंदी का हित करते हैं और न देश का । इससे भारत तथा भारतीय भाषाओं को भारी आघात लगता है । हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा इसलिए मानी गई कि अहिंदी भाषी लोगों ने उसकी उपयोगिता को समझा । इसलिए नहीं कि हिंदी प्रांतों ने उसके लिए जोरदार आंदोलन चलाया । आज भी हिंदी का राष्ट्रभाषा पद तभी मजबूत होगा जब अहिंदी भाषी प्रांतों के लोग उसे प्रेम से अपनाएंगे, अपनी इच्छा से उसे सीखेंगे और उसका उपयोग करेंगे ।

तमिलनाड हिंदी प्रेमी संस्था

मद्रास में गत मास तमिलनाड हिंदी प्रेमी संस्था की स्थापना की गई । इस संस्था का उद्देश्य त्रिभाषा सूत्र का प्रचार करना और राज्य के हिंदी प्रेमियों को हिंदी सीखने की सुविधाएं उपलब्ध कराना है । मद्रास के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री भक्तवत्सलम् ने 6 जून को आयोजित एक समारोह में इस संस्था का उद्घाटन किया । अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा : त्रिभाषा सूत्र के स्थान पर द्विभाषा सूत्र लागू करना अनुचित है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति का यह मूलभूत अधिकार है कि वह जो भाषा चाहे सीखे । उन्होंने कहा : मैं स्वयं हिंदी लादने का विरोधी हूं लेकिन त्रिभाषा सूत्र हिंदी लादने का प्रयत्न नहीं है । यदि कोई कहे कि हिंदी मत पढ़ो तो यह उसे हिंदी न पढ़ने के लिए बाध्य करना है । समारोह की अध्यक्षता भूतपूर्व राज्य मंत्री श्रीमती वेंकटाचलम् ने की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्ध्रप्रदेश

- तिरुपति में हाल ही में आयोजित शिक्षाशास्त्रियों के एक सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें राज्य सरकार से कहा गया है कि वह क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाए और हिंदी तथा अंग्रेजी को प्राथमिक कक्षाओं में अतिरिक्त भाषाओं के रूप में पढ़ाने की व्यवस्था करे। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी को अपनाया जाए। बिहार के भूतपूर्व राज्यपाल श्री एस० अनंतशयनम् आयंगार ने अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए कहा : हिंदी को अंग्रेज़ी के स्थान पर लाना ही चाहिए क्योंकि यह हमारी राष्ट्रभाषा है तथापि प्रत्येक बालक को अपनी क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान भी होना चाहिए।

गोआ

- गोआ प्रशासन ने अंग्रेज़ी माध्यम के माध्यमिक स्कूलों में नए शिक्षा-सत्र से मराठी अथवा कोंकणी भाषा की पढ़ाई की व्यवस्था करने के आदेश दिए हैं। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि माध्यमिक स्कूलों को जून 1969 से इन भाषाओं की पढ़ाई की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करनी होगी। गोआ प्रशासन के शिक्षा विभाग के वक्तव्य के अनुसार अधिकांश प्रारंभिक स्कूलों में पढ़ाई मराठी के माध्यम से होती है इसलिए यह आवश्यक है कि इन छात्रों को माध्यमिक स्तर तक उसी माध्यम से शिक्षा दी जाए। जिन छात्रों की पढ़ाई का माध्यम भारतीय भाषाओं में से कोई भाषा नहीं है उन्हें गोआ में तीसरी कक्षा से मराठी और दमन तथा दीव में तीसरी कक्षा से गुजराती पढ़ाई जाएगी।

महाराष्ट्र

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के तत्वावधान में डेक्कन कालेज, पूना में आयोजित "भाषा शास्त्र तथा भाषा-अध्यापन विषयक" शिविर में समापन भाषण देते हुए प्रसिद्ध इतिहासज्ञ महामहोपाध्याय प्रो० दत्तो वामन पोतदार ने यह विश्वास व्यक्त किया कि हिंदी भाषा के राष्ट्रभाषा बनने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई कठिनाई नहीं है । उन्होंने कहा : संपर्क भाषा कोई नवीन कल्पना नहीं है । शताब्दियों तक इस देश के विभिन्न भूभागों के विद्वान, यात्री, व्यापारी तथा राजकीय नेता आपस में विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए एक समान माध्यम का प्रयोग करते रहे हैं । मुगल बादशाह अकबर के राज्यकाल में अनेक कैथोलिक मिशनरियों के दस्तावेजों में भी ऐसा पाया जाता है कि हिंदुस्तानी भाषा भारत में सर्वत्र समझी जाती थी ।

बिहार

- बिहार सरकार ने निर्णय किया है कि उसके सरकारी कर्मचारियों के लिए हिंदी परीक्षा पास करना अनिवार्य होगा । परीक्षा पास किए बिना उन्हें स्थायित्व नहीं दिया जाएगा और न ही दक्षतारोध को पार करने दिया जाएगा । परीक्षा पास करने पर उन्हें वेतनमान की उस अवस्था में वेतन मिलने लगेगा जिसके वे तब तक हकदार होंगे किंतु वेतन-वृद्धि की बकाया राशि उन्हें नहीं दी जाएगी । इस निर्णय के अनुसार सरकारी कर्मचारियों की सेवा-शर्तों में आवश्यक संशोधन किए जा रहे हैं ।

- बिहार सरकार के शिक्षा विभाग ने विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा के लिए हिंदी में मौलिक पुस्तकों के लेखन तथा प्रकाशन की एक योजना बनाई है जिस पर एक करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है । इस योजना का काम बिहार विश्वविद्यालय आयोग ने प्रारंभ कर दिया है । आयोग इस काम में बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों का सहयोग प्राप्त करेगा । हिंदी क्षेत्र के उपकुलपतियों की वाराणसी में हुई बैठक में किए गए निर्णय के आधार पर ही यह योजना बनाई गई है ।

हरियाणा

सरकारी काम-काज के लिए अंग्रेज़ी के स्थान पर हिंदी को लाने के उद्देश्य से हरियाणा सरकार ने ज़िला स्तर पर अनेक प्रशिक्षण केन्द्र शुरु किए हैं । इनमें कर्मचारियों को हिंदी टंकण (टाइपिंग) और आशुलेखन में प्रशिक्षण दिया जाएगा । अब तक राज्य में 1116 हिंदी टंकक (टाइपिस्ट) और आशुलिपिक (स्टेनोग्राफर) तैयार किए जा चुके हैं । 7000 सरकारी कर्मचारी 'बोध' और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रबोध' परीक्षाएं पास कर चुके हैं। पता चला है कि हरियाणा सरकार 15 अगस्त से सभी सरकारी कामों के लिए हिंदी को सहभाषा बना देगी और आगामी 26 जनवरी से हिंदी पूर्णरूपेण राजभाषा बन जाएगी। सरकार ने यह निर्णय भी लिया है कि हिंदी आशुलेखन की परीक्षा पास करने वालों को 30 रुपये की वेतन-वृद्धि दी जाएगी। प्रदेश की वित्त मंत्री श्रीमती ओमप्रभा जैन ने एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा कि हरियाणा में सभी स्तरों पर हिंदी को लागू करने के निर्णय का सख्ती से पालन किया जाएगा।

- हरियाणा के मुख्यमंत्री ने चंडीगढ़ में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा: राज्य में सरकारी कामकाज की भाषा हिंदी होगी। इस संबंध में शीघ्र ही निर्णय किया जाएगा और जितनी जल्दी संभव हुआ, राज्य-प्रशासन का काम हिंदी में चलाया जाएगा।

उत्तरप्रदेश

- बाल-साहित्य परिषद, इलाहाबाद का वार्षिक समारोह हिंदी साहित्य सम्मेलन के प्रांगण में 30 जून, 1968 को मनाया गया। हिंदी के प्रसिद्ध कहानी लेखक श्री अमरकांत ने समारोह की अध्यक्षता की। उत्तरप्रदेश के शिक्षा प्रसार विभाग के अधिकारी श्री बृजभूषण शर्मा मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर परिषद के बाल सदस्यों द्वारा रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। चल बाल-पुस्तकालय के माध्यम से बीस दिन के अंतर्गत किए गए कार्य की रिपोर्ट श्री अशोक गुप्त ने प्रस्तुत की।

दिल्ली

नई दिल्ली नगरपालिका की हिंदी उपसमिति की बैठक में यह निश्चय किया गया है कि बाहर से हिंदी में आने वाले सभी पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिए जाएं। सभी विभागाध्यक्षों से कहा गया है कि भविष्य में बाहर से आने वाले पत्रों का मासिक रिकार्ड रखा जाए। उपसमिति ने सुझाव दिया है कि चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों से संबंधित सभी फार्म आदि हिंदी में छपवाए जाएं और सभी संस्थानों के नामपट्ट हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लगाए जाएं।

- काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने केन्द्रीय विधि मंत्री श्री गोविन्द मेनन को अपनी स्थायी समिति का सदस्य बनाया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालयों में

गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद का स्नातकोत्तर हिंदी विभाग- एक परिचय

गुजरात विद्यापीठ की स्थापना सन् 1920 में राष्ट्रीय शिक्षण संस्था के रूप हुई। इसके संस्थापक महात्मा गांधी थे जो आजीवन इसके कुलपति रहे। उसके बाद सरदार पटेल और डा0 राजेन्द्र प्रसाद इस पद पर रहे। भारत के उपप्रधानमंत्री श्री मोरारजी भाई वर्तमान कुलपति हैं। विद्यापीठ में प्रारंभ से ही हिंदी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। उसके एक महत्वपूर्ण अंग "हिंदी भवन" द्वारा 1944 से छः क्रमबद्ध परीक्षाएं आयोजित की जाती हैं। इनमें प्रतिवर्ष लगभग एक लाख विद्यार्थी बैठते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण अंग "हिंदी शिक्षण महाविद्यालय" द्वारा अहिंदी भाषी क्षेत्रों के लिए सन् 1962 से हिंदी शिक्षा विनीत और हिंदी शिक्षा विशारद के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

स्नातकोत्तर हिंदी विभाग :- इस विभाग के आरंभ होने से पूर्व "हिंदी भवन" द्वारा "हिंदी पारंगत" के नियमित वर्ग शनिवार और रविवार को चलाए जाते थे। इसका अभ्यासक्रम एम0 ए0 के समकक्ष था। जुलाई 1963 में विद्यापीठ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सिफारिश पर राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था घोषित किया गया और इसे विश्वविद्यालय के रूप में मान्यता मिली। जुलाई 1965 में यहां स्नातकोत्तर हिंदी विभाग प्रारंभ हुआ। इस समय विभाग में दो अध्यापक हैं। डा0 कुंज बिहारी वार्ष्णेय, प्राध्यापक, विभाग के अध्यक्ष हैं और संस्कृत विभाग के रीडर डा0 रमेश बेटाई भारतीय आलोचना और काव्यशास्त्र पढ़ाते हैं।

शिक्षण व्यवस्था : इस समय विद्यापीठ में पारंगत (एम0 ए0) की डिग्री के लिए अध्ययन की व्यवस्था है। यह अभ्यास क्रम दो वर्ष का है। छात्र को हिंदी के सात प्रश्नपत्रों के अतिरिक्त उर्दू, संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती आदि में से किसी एक भाषा का एक प्रश्नपत्र लेना पड़ता है। अन्य भाषाओं में एम0 ए0 करने वाले छात्र हिंदी को गौण विषय के रूप में भी ले सकते हैं। दूसरे वर्ष में किसी पूर्व स्वीकृत विषय पर 50 से 100 पृष्ठों का एक शोध-निबंध प्रस्तुत करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

50 अंक की मौखिक परीक्षा होती है। सात प्रश्नपत्रों में पाठ्य पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, भारतीय और पाश्चात्य साहित्यालोचन, दो विशिष्ट कवि, भाषा विज्ञान तथा हिंदी भाषा का इतिहास, निबंध, समीक्षा अनुवाद आदि विषयों का समावेश किया गया है।

हिंदी विषय लेकर एम०ए० करने वाले कुछ छात्रों को केन्द्र की ओर से छात्रवृत्तियां मिलती हैं। विद्यापीठ की ओर से भी 75 रुपये की एक योग्यता छात्रवृत्ति और 100 रुपये की एक फेलोशिप दी जाती है। विद्यापीठ के पुस्तकालय से सामान्यत: सभी छात्रों को पाठ्यपुस्तकें तथा सन्दर्भ ग्रंथ उपलब्ध हो सकते हैं। सप्ताह में कुछ घंटे प्रत्येक छात्र को पुस्तकालय में अध्ययन के लिए आना पड़ता है। परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

सन् 1966 से लेकर अब तक 10 छात्र पारंगत (एम०ए० हिंदी) की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं।

----000----

अंग्रेजी के बिना बी०ए० में प्रवेश

दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के सिंडीकेट ने निश्चय किया है कि जिन छात्रों ने मैट्रिक की परीक्षा अंग्रेजी के बिना उत्तीर्ण की थी तथा अब पूर्व विश्वविद्यालय की परीक्षा भी पास कर ली है उन्हें बी०ए० में प्रवेश दिया जाएगा। सिंडीकेट ने यह भी निश्चय किया है कि बाहरी छात्र स्नातक-पूर्व और स्नातकोत्तर कक्षाओं की पढ़ाई जारी रख सकते हैं।

हिंदी में बी० काम का पत्राचार पाठ्यक्रम

राजस्थान विश्वविद्यालय ने अगले शैक्षिक वर्ष से बी०काम के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू करने का निर्णय किया है। वाणिज्य विषय की डिग्री के लिए सारे देश में यह पहला पत्राचार पाठ्यक्रम होगा। शिक्षा का माध्यम हिंदी होगा। इसमें ऐसे छात्र प्रवेश पा सकते हैं जिन्होंने उच्चतर माध्यमिक परीक्षा या पूर्व-विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम या उसके समकक्ष कोई परीक्षा पास की हो। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस पाठ्यक्रम के लिए .5 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

x विदेशों में

विदेशियों को पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिंदी सीखने की सुविधा

केन्द्रीय हिंदी निदेशालय का पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग जुलाई 1968 से विदेशियों को हिंदी सिखाने के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम का एक विशेष सत्र शुरु कर रहा है। आवेदन-पत्र भेजने की अंतिम तारीख 25 जुलाई 1968 है। शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होगा। प्रथम प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम (हिंदी प्रवेश) की अवधि दो वर्ष की होगी। दूसरे वर्ष के अंत में विदेशों में विभिन्न केन्द्रों में परीक्षा ली जाएगी। दो साल का उच्च पाठ्यक्रम (हिंदी परिचय) बाद में शुरु किया जाएगा।

शुल्क :

विदेशों में रहने वाले छात्रों से नाममात्र का शुल्क लिया जाएगा जो इस प्रकार है :

	डालर		पौंड	शिलिंग	पैंस
शिक्षा शुल्क (प्रति वर्ष)	10	या	4	3	4
प्रवेश शुल्क	5	या	2	1	8
परीक्षा शुल्क	5	या	2	1	8

इस रकम की अदायगी संबंधित देश की मुद्रा में की जा सकेगी।

आवेदन-पत्र तथा विस्तृत जानकारी के लिए इस पते पर लिखें :-

निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय (शिक्षा मंत्रालय),

वेस्ट ब्लाक 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22।

श्रीलंका विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना :

पेराडेनिया स्थित श्रीलंका विश्वविद्यालय ने हिंदी के अध्ययन के लिए एक अलग विभाग खोलने का निश्चय किया है। हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के भूतपूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डा० रामकुमार वर्मा को इस विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। भारत सरकार ने कोलम्बो योजना के अंतर्गत हाल ही में डा० वर्मा की सेवाएं श्रीलंका विश्वविद्यालय को दी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

निदेशालय के नए प्रकाशनों की सूचना इस पत्र के पिछले अंकों में दी जा चुकी है। यहां नीचे कुछ ऐसे प्रकाशनों की जानकारी दी जा रही है जो इस समय प्रेस में हैं और शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं :-

1- हिंदी वर्तनी का मानकीकरण : हिंदी वर्तनी के मानकीकरण के लिए भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा नियुक्त हिंदी वर्तनी समिति के निर्णय आवश्यक व्याख्याकरण के साथ इस पुस्तिका में दिए गए हैं। यह प्रकाशन निःशुल्क है।

2- स्टैंडर्डाइजेशन आफ हिंदी स्पेलिंग : यह पुस्तिका "हिंदी वर्तनी का मानकीकरण" शीर्षक प्रकाशन का अंग्रेजी संस्करण है। यह हाल ही में प्रकाशित हुई है।

3- देवनागरी लिपि का क्रमिक विकास : अक्टूबर 1967 में शिक्षा मंत्रालय की ओर से आयोजित परिवर्धित देवनागरी संगोष्ठी के अवसर पर देवनागरी थ्रू दि एजेज नामक पुस्तक निःशुल्क वितरण के लिए प्रकाशित की गई थी। इस पुस्तक में देवनागरी के उद्भव और क्रमिक विकास के संबंध में अधिकारी विद्वानों के निबंध तथा वर्णमाला चार्ट छपे थे। पुस्तक की मांग और उपयोगिता को देखते हुए इसका हिंदी संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है जो समूल्य होगा।

4- शब्दानुक्रमणिकाएं : हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध ग्रंथों की शब्दानुक्रमणिकाएं प्रकाशित करने की योजना के अंतर्गत कामायनी, साकेत, प्रियप्रवास और श्रीधर पाठक के ग्रंथों की शब्दानुक्रमणिकाएं शीघ्र प्रकाशित हो रही हैं।

5- ग्रंथावलियां : हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकारों की कृतियों के सर्वसंग्रह प्रकाशित करने की योजना के अंतर्गत रहीम ग्रंथावली और नागरीदास ग्रंथावली शीघ्र प्रकाशित होने वाली हैं।

6- हम्मीर रासो का आलोचनात्मक संस्करण छप रहा है।

7- हिंदी-तेलुगु स्वयंशिक्षक : हिंदी के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाएं सीखने के लिए स्वयं-शिक्षक प्रकाशित करने की योजना के अंतर्गत यह दूसरी पुस्तक है। "हिंदी-तमिल स्वयंशिक्षक" नामक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यूनेस्को कूरियर' (हिन्दी)

सम्मतियां और संदेश

1- श्री सैंडी काफलर,
प्रधान संपादक, यूनेस्को कूरियर, पेरिस से प्राप्त
केबल संदेश :-

"हिन्दी कूरियर के 'आज का सोवियत संघ'
(दिसम्बर, 1987) अंक के उत्तम कागज,
उत्तम मुद्रण और उत्तम सज्जा के लिए
हार्दिक बधाई।"

2- डा० त्रिगुण सेन, केन्द्रीय शिक्षा मंत्री का संदेश :

मुझे हर्ष है कि यूनेस्को कूरियर के हिंदी
संस्करण को कूरियर के प्रधान संपादक ने
प्रशस्ति भेजी है। वस्तुतः इसका श्रेय आप
को तथा हिंदी निदेशालय के आपके सह-
योगियों को है।

3- श्री जी० के० चंदिरामानी, शिक्षा सचिव, भारत सरकार
की शुभ-कामना :-

"यूनेस्को कूरियर के हिंदी संस्करण के प्रकाशन
में केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय जो भूमिका
अदा कर रहा है - उससे मुझे बड़ा हर्ष हुआ।
यूनेस्को ने आपको प्रशस्ति पत्र भेजा है -
इसके लिए मैं आपको तथा निदेशालय को
हार्दिक बधाई देता हूं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए ले० वी० ज़ेलेनिन पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास ले० हरीराम गुप्त पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेजी शब्द-कोश पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली-6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

... सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी समाचार जगत

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

वर्ष 2 अंक 12

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

शिक्षा-मंत्रालय

भारत सरकार

जय हिंदी, जय नागरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्ट्रेशन संख्या : आर एन् 12817।66

जय हिंदी : जय नागरी

हिंदी समाचार जगत

वर्ष 2 अगस्त 1968 अंक 12

0 भाषा संगम

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं (मणिपुर हिंदी परिषद, इम्फाल)

0 हिंदी

* भारत सरकार में
* राजधानी में
* प्रादेशिक अंचल में
* विश्वविद्यालयों में
* विदेशों में

0 नए प्रकाशन

लोकतंत्र की सफलता के लिए यह अनिवार्य है कि जनसाधारण राज्य के कार्य-संचालन में पूर्ण और सक्रिय सहयोग दें। जब तक राज्य का प्रशासन जनभाषा से भिन्न किसी अन्य भाषा में चलता रहेगा तब तक राज्य के कार्यों में जनता का सहयोग अधूरा ही रहेगा।

(आंध्र सरकार द्वारा विधान सभा में प्रस्तुत श्वेत पत्र से)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैस्ट ब्लाक नं० 7, रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली-22 से प्रकाशित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 भाषा संगम

राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के प्रस्ताव में त्रिभाषा सूत्र पर जोर :

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्ताव को केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने स्वीकृति दे दी है। इससे पहले शिक्षा की नीति का प्रस्ताव ब्रिटिश शासन काल में सन् 1913 में स्वीकृत हुआ था। प्रस्ताव में कहा गया है कि शिक्षा पर कुल राष्ट्रीय आय का छः प्रतिशत खर्च होना चाहिए और इस लक्ष्य को जल्दी से जल्दी प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। प्रस्ताव में त्रिभाषा सूत्र अपनाने पर जोर दिया गया है। राज्यों को माध्यमिक स्तर तक त्रिभाषा सूत्र लागू करने का निर्देश दिया गया है। हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी और अंग्रेजी के अलावा दक्षिण भारत की एक भाषा का अध्ययन तथा हिंदीतर भाषी राज्यों में हिंदी, क्षेत्रीय भाषा तथा अंग्रेजी के अध्ययन का सुझाव है। प्रस्ताव में सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था के पुनर्निर्माण का लक्ष्य रखा गया है। सभी राज्यों से अनुरोध किया गया है कि वे चौदह वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा देने की व्यवस्था करें। प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि भारतीय भाषाओं का तेजी से विकास किया जाए। भारतीय भाषाओं को विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम बनाने पर जोर दिया गया है यद्यपि उसके लिए कोई अवधि निर्धारित नहीं की गई है। भारत की सांस्कृतिक एकता में संस्कृत के महत्व को स्वीकार करते हुए, उसके अध्ययन के लिए भी हर तरह से प्रोत्साहन देने का सुझाव दिया गया है।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा राजभाषा आयोग की स्थापना :

आंध्रप्रदेश विधान सभा में सरकार की ओर से एक श्वेतपत्र प्रस्तुत किया गया है जिसमें कहा गया है कि आंध्र में एक राजभाषा आयोग की स्थापना की जाएगी। यह आयोग विधि विभाग की वर्तमान अनुवाद समिति का स्थान ले लेगा। श्वेतपत्र की प्रस्तावना में कहा गया है : लोकतंत्र की सफलता के लिए यह अनिवार्य है कि जनसाधारण राज्य के कार्य-संचालन में पूर्ण और सक्रिय सहयोग दें। जब तक राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रशासन जन-भाषा से भिन्न किसी अन्य भाषा में चलता रहेगा तब तक राज्य के कार्यों में जनता का सहयोग अधूरा ही रहेगा । इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने भाषावार प्रांतों के निर्माण का समर्थन किया था । विधान सभा की कार्रवाई में क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग पिछले कुछ वर्षों में अधिकाधिक होने लगा है अत: क्षेत्रीय भाषा को सरकारी काम-काज की भाषा बनाने के लिए उपयुक्त कानून बनाना बहुत जरूरी हो गया है । श्वेतपत्र में यह भी कहा गया है कि गत वर्षों में लगभग सभी राज्यों ने राज-काज में क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग के लिए कानून पास कर दिए हैं । वर्तमान स्थिति यह है कि लगभग सभी राज्यों में लोकभाषा को प्रशासन, शिक्षा तथा आर्थिक विकास के कार्यों में अधिकाधिक उपयोग में लाया जा रहा है ।

तेलुगु को राजभाषा बनाने में एक मुख्य कठिनाई यह है कि बहुत से सरकारी कर्मचारियों की मातृभाषा तेलुगु नहीं है । इसके अतिरिक्त इस काम के लिए लगभग 10000 तेलुगु टाइपराइटरों की आवश्यकता होगी जिसके कारण सरकारी खजाने पर बड़ा बोझ पड़ेगा ।

मध्यप्रदेश में संस्कृत के विकास की योजना :

संस्कृत भाषा के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली में संस्कृत को उचित स्थान प्रदान करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश सरकार ने निश्चय किया है कि 1968-69 से वर्तमान पाठ्यक्रम के स्थान पर प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री और आचार्य परीक्षाओं की पढ़ाई की व्यवस्था की जाएगी । शास्त्री तथा आचार्य परीक्षाओं का पाठ्यक्रम कालेज में, मध्यमा का पाठ्यक्रम हाई स्कूल में तथा प्रथमा का पाठ्यक्रम मिडिल स्कूल में पढ़ाया जाएगा । ग्वालियर के संस्कृत महाविद्यालय में परम्परागत पाठ्यक्रम यथावत् चलता रहेगा । नई योजना के अंतर्गत संस्कृत के अध्यापकों के वेतनमान भी उनकी प्रतिष्ठा के अनुरूप निश्चित किए जा रहे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 स्वैच्छिक हिंदी संस्थाएं

मणिपुर हिन्दी परिषद, इम्फाल

परिषद की स्थापना सन् 1953 में हुई । यह एक लोकप्रिय शैक्षिक संस्था है । संस्था के प्रमुख संस्थापकों में श्री एल0 ललितमाधव शर्मा, श्री एच0 ङिजमणिदेव शर्मा, श्री एल0 भागवतदेव शर्मा, श्री राधामोहन शर्मा, श्री हिजम विजय सिंह, श्री चन्द्रमणि शर्मा, श्री नीलवीर शर्मा, श्री मनिस्नी शर्मा प्रमुख हैं । सन् 1953 में परिषद का विधान बना और परीक्षा-नियमावली भी जारी की । सन् 1954 से प्रारंभ में एक स्थानीय एम0 ई0 स्कूल में परिषद का कार्यालय खुला । सन् 1954 से हिंदी परीक्षाएं लेना आरंभ किया गया । सन् 1958 में संस्था रजिस्टर्ड हुई । राज्य सरकार ने परिषद की हिन्दी परीक्षाओं को मान्यता एवं आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहित किया । सन् 1961 में भारत सरकार ने परिषद की दो परीक्षाओं को मान्यता दी । सन् 1964 में परिषद का अपना भवन बन गया । इसके बनाने में भारत सरकार ने 20,000 रुपये की सहायता दी है ।

परीक्षाएं : परिषद निम्नलिखित परीक्षाओं का संचालन करती है :- हिंदी प्रारंभिक, हिंदी प्रवेश, हिंदी परिचय, हिंदी प्रबोध, हिंदी विशारद और हिंदी रत्न । इनमें हिंदी प्रबोध और हिंदी विशारद क्रमशः हिंदी विषय में मैट्रिक एवं इण्टर के समकक्ष भारत सरकार द्वारा मान्य हैं । उच्चतम हिंदी रत्न की मान्यता भारत सरकार के विचाराधीन है । अब तक विभिन्न परीक्षाओं में 20312 परीक्षार्थी बैठ चुके हैं । औसतन प्रतिवर्ष 1563 विद्यार्थी परिषद की परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं । मणिपुर राज्य के निम्नलिखित उप मंडलों में परिषद का कार्य पिछले 13 वर्षों से सुव्यवस्थित रूप से चल रहा है :- पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, थौबाल विष्णुपुर, उखरुल तेंगनौपाल, चूड़ाचांदपुर, माओ, जिरिबाम । सब मिलाकर कुल 89 परीक्षा-केन्द्र इन उप मंडलों में चल रहे हैं ।

प्रचार : परिषद का कार्य सम्बद्ध स्थानीय समितियों और सम्बद्ध स्थानीय विद्यालय समितियों के माध्यम से चलता है । प्रमाणित प्रचारक व प्रमुख प्रचारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार-कार्य करते हैं। परिषद का कार्यक्षेत्र केवल मणिपुर ही में सीमित है। मणिपुर के बाहर परिषद की कोई शाखा नहीं है।

परिषद के विभिन्न परीक्षा-केन्द्रों और मुख्य शिक्षण-केन्द्रों में प्रतिवर्ष कार्यकर्ताओं और प्रचारकों के सहयोग से प्रमाणपत्र-पुरस्कार वितरणोत्सव मनाये जाते हैं। गणतंत्र दिवस आदि राष्ट्रीय पर्व भी परिषद द्वारा आयोजित सभा द्वारा मनाये जाते हैं।

विद्यालय : परिषद इम्फाल में एक हिंदी महाविद्यालय का संचालन करती है, जिसको राज्य सरकार से अनुदान मिलता है। इस विद्यालय में हिंदी की उच्च शिक्षा दी जाती है। परिषद से सम्बद्ध हिंदी विद्यालय 87 हैं जिनका संचालन स्थानीय विद्यालय समितियां करती हैं। इनमें 47 विद्यालयों को राज्य सरकार से अनुदान मिलता है।

पुस्तकालय : परिषद का अपना पुस्तकालय है। पुस्तकालय में अब तक 1254 हिंदी पुस्तकें संगृहीत हैं। परिषद अपने पुस्तकालय में पुस्तकों की संख्या बढ़ाने का प्रयत्न कर रही है। साथ ही वाचनालय में विद्यार्थियों को पठन-पाठन की सुविधा प्रदान करने के निमित्त दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकाएं मंगा कर रखती हैं।

प्रकाशन : परिषद अब तक विद्यालयों के लिए 15 पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है। परिषद द्वारा प्रकाशित और सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्वीकृत पुस्तकों की बिक्री के लिए पुस्तक बिक्री विभाग खोला गया है।

सालाना बजट : प्रत्येक वर्ष प्रायः 15 हजार से 20 हजार रुपये तक का बजट बनता है। परिषद को राज्य सरकार से 5000 रुपये का वार्षिक अनुदान मिलता है।

संविधान : परिषद का अपना संविधान है जिसके अनुसार परिषद को गणतांत्रिक ढंग की संस्था का रूप दिया गया है। संविधान के अनुसार निम्नलिखित सभा व समितियां परिषद का कार्य सम्पादन करती हैं :-

व्यवस्थापिका सभा, कार्यपालिका (कार्यकारिणी), स्थानीय समितियां, परीक्षा समिति, साहित्य निर्माण तथा प्रकाशन समिति।

परिषद के वर्तमान प्रधान मंत्री श्री भागवत देव शर्मा हैं। संस्था का मुख्य कार्यालय एसेम्बली रोड, इम्फाल में स्थित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 हिंदी

* भारत सरकार में

सरकारी प्रयोजनों के लिए हिंदी का प्रगामी प्रयोग - गृह मंत्रालय के अनुदेश :

संविधान के अनुच्छेद 343 की व्यवस्था के अनुसार 26 जनवरी, 1965 से हिन्दी संघ की राजभाषा हो गई। तथापि, राजभाषा अधिनियम, 1963 को पारित करते हुए यह व्यवस्था की गई कि उस तारीख के बाद भी हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भी संघ के उन सभी सरकारी प्रयोजनों के लिए बराबर प्रयुक्त होती रहेगी, जिनके लिए वह उस तारीख के तुरंत पहले प्रयुक्त की जा रही थी। इस प्रकार द्विभाषिक स्थिति की अवधि शुरू हुई, जिसमें कि संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाएं प्रयुक्त की जा सकती हैं। राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 के पारित होने से राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 के स्थान पर नये उपबंध लागू किये गये हैं। राजभाषा अधिनियम, 1963 तथा राजभाषा (संशोधन) अधिनियम, 1967 प्रकाशित हो चुके हैं। अधिनियम के संशोधित उपबंधों के कार्यान्वयन के लिए मन्त्रालयों आदि द्वारा योजना बनाने के हेतु निम्नलिखित अनुदेश जारी किये जा रहे हैं।

2. जिन राज्यों ने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, उनके और संघ के बीच पत्र-व्यवहार के लिए अंग्रेजी प्रयुक्त की जाएगी। परन्तु अधिनियम में यह व्यवस्था की गई है कि ऐसा राज्य भी संघ के साथ हिंदी में पत्र-व्यवहार कर सकता है, और ऐसी स्थिति में उस राज्य के साथ किए जाने वाले पत्र-व्यवहार में अंग्रेजी का प्रयोग अनिवार्य नहीं होगा। जिन राज्यों ने केन्द्रीय सरकार के साथ पत्र-व्यवहार के लिए हिन्दी अपना ली है (हरियाणा, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब), उनके सम्बन्ध में इस प्रकार के आदेश पहले से ही विद्यमान हैं कि इन राज्यों से प्राप्त होने वाले सभी हिन्दी पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त इन राज्यों के साथ किये जाने वाले हर प्रकार के पत्र-व्यवहार के लिए यथासंभव हिन्दी अधिक से अधिक प्रयुक्त की जानी चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3. (i) जहां केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों।विभागों।कार्यालयों में परस्पर पत्र-व्यवहार के लिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी का प्रयोग किया जाए तो उसका अंग्रेजी या हिन्दी अनुवाद भी, यथास्थिति, दिया जाना चाहिए। यह आवश्यकता ऐसे संबंधित मंत्रालय।विभाग।कार्यालय में लागू नहीं होगी जहां के कर्मचारियों (अर्थात् पत्र भेजने वाले और पत्र प्राप्त करने वाले दोनों ही मंत्रालय आदि के कर्मचारियों) ने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है अथवा भविष्य में प्राप्त कर लेंगे।

(ii) इस संबंध में उन कर्मचारियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाला समझा जायगा जिन्होंने हिन्दी के साथ मैट्रिकुलेशन या उसके समकक्ष कोई परीक्षा, या हिन्दी शिक्षण योजना की प्राज्ञ परीक्षा या हिन्दी की कोई विभागीय परीक्षा पास की हो। हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की उपलब्ध संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक मंत्रालय।विभाग यह निश्चय करेगा कि कौन-कौन-से कार्यालयों में ऐसे अनुवाद की व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं होगी। हिन्दी जानने वाले कर्मचारियों की उपलब्ध संख्या निर्धारित करने के लिए किसी कार्यालय में एक ही स्थान में समीपस्थ काम करने वाले कर्मचारियों को ध्यान में रखना होगा, न कि भिन्न-भिन्न स्थानों में बंटे हुए किसी संगठन के कर्मचारियों की कुल संख्या को। जिस मंत्रालय।विभाग।कार्यालय में सचिवालयीन काम करने वाले कर्मचारियों में से कम से कम 80 प्रतिशत को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान हो, वहां अनुवाद संबंधी वास्तविक आवश्यकताओं की जांच करने के लिए अनुवाद करने वाले कर्मचारियों की संख्या की समीक्षा की जा सकती है।

(iii) अधिनियम में यह व्यवस्था नहीं की गई है कि दूसरी भाषा में अनुवाद पत्र के साथ भेजा जाएगा अथवा प्राप्त करने वाले कार्यालय द्वारा किया जाएगा। भाषा का ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों की उपलब्ध संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रशासनिक दृष्टि से इसे निर्धारित करना होगा। उदाहरण के लिए, हिन्दी-भाषी राज्यों में स्थित कार्यालयों को भेजे जाने वाले हिन्दी के पत्रों का अंग्रेजी अनुवाद भेजने की आवश्यकता नहीं है। यदि आवश्यक हो तो प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की व्यवस्था की जा सकती है । इसी प्रकार करो वाले कार्यालयों में ~~हिं~~ अनुवादों अहिन्दी-भाषी राज्यों में स्थित कार्यालयों को भेजे जाने वाले हिन्दी के पत्रों के साथ उनका अंग्रेजी अनुवाद भेजना होगा, विशेष रूप से छोटे कार्यालयों को भेजे जाने वाले पत्रों के संबंध में यह आवश्यक होगा । ऐसे प्रबंध करते हुए, इस बात को सुनिश्चित करना होगा कि हिन्दी अथवा अंग्रेजी का प्रयोग करने वाले किसी कर्मचारी को स्वयं अन्य भाषा में अनुवाद न करना पड़े ।

(iv) साधारणत: एक मंत्रालय से दूसरे मंत्रालय को भेजे जाने वाले या किसी मंत्रालय द्वारा दिल्ली में स्थित अपने संबद्ध कार्यालय को भेजे जाने वाले पत्रों का अनुवाद भेजना आवश्यक नहीं होगा । किसी अन्य मंत्रालय। विभाग को कोई फाइल भेजते हुए, यदि अन्तिम नोट स्वत: पूर्ण रूप में भेजा जाए और उसकी एक अतिरिक्त प्रति साथ में लगा दी जाए तो प्राप्त करने वाले कार्यालय में अनुवाद का काम कम हो जाएगा । अधिकतर इस प्रकार का पत्राचार विधि, वित्त और गृह इन्हीं तीन मंत्रालयों के साथ किया जाता है, अत: यह आवश्यक होगा कि इन मंत्रालयों में अनुवाद की सुविधाएं [illegible] रूप से बढ़ा दी जाएं ताकि मामलों के निपटान में विलंब न हो ।

4. जहां तक मंत्रालय। विभाग। कार्यालय में आंतरिक रूप से फाइलों पर टिप्पण का संबंध है, हिन्दी अथवा अंग्रेजी के प्रयोग पर कोई प्रतिबन्ध लागू नहीं हो सकते । जिन स्तरों पर अनुवाद उपलब्ध करना चाहिए वे राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 8 के अधीन बनाये जाने वाले नियमों के अनुसार, यथासमय निर्दिष्ट किये जाएंगे । ये नियम बन जाने पर भारत सरकार के सभी मंत्रालयों। विभागों को भेज दिये जाएंगे । इस बीच निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :-

(i) कोई कर्मचारी टिप्पण या आलेखन के लिए हिन्दी अथवा अंग्रेजी दोनों में से किसी भी भाषा का प्रयोग कर सकता है और उससे स्वयं उनका अनुवाद नहीं मांगा जाये,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ii) जहां किसी टिप्पण या पत्र को सरल या छोटे होने के कारण किसी सहायक या अन्य कर्मचारी उसको समझा सकते हों, उन स्थितियों के अतिरिक्त, कर्मचारी को संबंधित टिप्पण या पत्र में प्रयुक्त भाषा का कार्य-साधक ज्ञान न होने पर अनुवाद या सारांश उपलब्ध कराना होगा ।

5. संशोधन अधिनियम की धारा 2 की उप धारा (3) में यह व्यवस्था की गयी है कि संकल्पों, सामान्य आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक अथवा अन्य रिपोर्टों, प्रेस विज्ञप्तियों, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले सरकारी पत्रों, संविदाओं, करारों, लाइसेंसों, परमिटों, नोटिसों और टेंडर के फार्मों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं का प्रयोग किया जायगा । संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक रिपोर्टें तथा संसद के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले पत्र, वर्तमान आदेशों के अधीन पहले से ही हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में जारी किये जा रहे हैं । प्रेस विज्ञप्तियों, संविदाओं, करारों, लाइसेंसों, परमिटों, नोटिसों और टेंडर के फार्मों के संबंध में यह आवश्यकता अभी कार्यान्वित की जानी है । अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्थित कार्यालय में इन उद्देश्यों के लिए हिन्दी अनुवाद प्रचलित करने में कुछ कठिनाई हो सकती है । अनुवाद के लिये प्रबन्ध किये जाने चाहिए और फार्मों को यथाशीघ्र अनुवाद करके छपाना चाहिए । इस बीच जरूरतन केवल अंग्रेजी ही का प्रयोग करना पड़ेगा ।

6. अधिनियम के उपबंधों के कार्यान्वयन के लिए अनुवाद के प्रबंधों की व्यवस्था करना या बढ़ाना आवश्यक होगा । हिन्दी के टाइपराइटर पर्याप्त संख्या में उपलब्ध कराना भी आवश्यक होगा । जब तक वास्तविक अनुभव के आधार पर ब्यौरे तैयार नहीं होते, मंत्रालय इन कार्यों के लिए होने वाले व्यय की पूर्ति के लिए एकमुश्त अनुदान के हेतु वित्त मंत्रालय को लिख सकते हैं । भारत सरकार के मंत्रालय अथवा विभागों के स्तर पर प्रत्येक संयुक्त सचिव के अधीन ऐसी सुविधाओं की व्यवस्था कराने के संबंध में विचार किया जा सकता है । जब तक ये प्रबन्ध किये जायें, आवश्यकता होने पर वर्तमान हिंदी के जानकार कर्मचारियों से अनुवाद कराया जा सकता है ।

(शेष पृष्ठ 16 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* राजधानी में -----------------

– केन्द्रीय सचिवालय हिंदी परिषद का दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन राजधानी में सम्पन्न हुआ । सम्मेलन में विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । सम्मेलन में यह बताया गया कि परिषद ने इस वर्ष 35 नई शाखाएं खोलीं । इन्हें मिलाकर अब कुल 261 शाखाएं देश के विभिन्न भागों में काम कर रही हैं । सम्मेलन में आगामी वर्ष के लिए पदाधिकारियों का चुनाव भी हुआ । प्रधान पद के लिए परिवार नियोजन मंत्रालय के सचिव श्री गोविन्द नारायण और महामंत्री पद के लिए श्री हरिबाबू कंसल चुने गए ।

– तमिल न जानने वालों को तमिल सिखाने के लिए तमिल संगम की ओर से चतुर्थ पाठ्यक्रम शुरू किया गया है । पाठ्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री विजय कुमार मल्होत्रा ने कहा : देश में एकता, अखंडता और सनातन सभ्यता को कायम रखने के लिए उत्तर वाले दक्षिण की भाषाओं को और दक्षिण वाले राष्ट्र-भाषा हिंदी को पढ़ें ।

– हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि तथा फिल्मगीत लेखक श्री सरस्वती कुमार दीपक का राजधानी के साहित्यकारों ने अभिनंदन किया । उनके पचासवें जन्म दिवस पर [illegible] एक सम्मान गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता श्री अक्षयकुमार जैन ने की ।

– दिल्ली प्रादेशिक हिंदी साहित्य परिषद की ओर से वेद व्यास जयंती के अवसर पर 13 जुलाई 1968 को डा० विजयेन्द्र स्नातक की अध्यक्षता में एक गोष्ठी आयोजित की गई जिसमें राजधानी के अनेक प्रसिद्ध साहित्यकार सम्मिलित हुए । गोष्ठी का विषय था 'राष्ट्रीय एकता और साहित्य' ।

नई दिल्ली नगरपालिका में हिन्दी :

उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा ने नगरपालिका अध्यक्ष श्रीचंद छाबड़ा के इस प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान कर दी है कि नगरपालिका के कामकाज की भाषा हिंदी होगी यद्यपि सभी कार्यों में अंग्रेज़ी का प्रयोग भी किया जा सकेगा । बाहर से आने वाले हिंदी और अंग्रेज़ी पत्रों के उत्तर उसी भाषा में दिए जाएंगे जिस भाषा में वे प्राप्त होंगे । अन्य भाषाओं के पत्रों के उत्तर हिंदी अथवा अंग्रेज़ी किसी भी भाषा में दिए जा सकते हैं । नोटिस और बिल इत्यादि हिंदी में भेजे जाएंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*प्रादेशिक अंचल में

विभिन्न राज्यों में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने की सुविधाएं

उत्तरप्रदेश, आसाम, बिहार, नागालैंड, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, केरल, मैसूर, मद्रास, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, मणिपुर, त्रिपुरा, पाण्डिचेरी, दादरा और नगरहवेली, गोआ, दमन और दीव तथा दिल्ली में अल्पसंख्यक भाषाओं सहित मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने की सुविधाएं उपलब्ध हैं। मद्रास में यह सुविधा संविधान की अष्टम अनुसूची में उल्लिखित 15 भाषाओं तक ही सीमित है। हरियाणा में शिक्षा के माध्यम के रूप में किसी अल्पसंख्यक भाषा का प्रयोग नहीं होता।

विभिन्न राज्यों में माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम

राज्य	शिक्षा का माध्यम
मध्यप्रदेश	बंगला, उर्दू, हिंदी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिंधी, तेलुगु और उर्दू।
उत्तरप्रदेश	हिंदी के अलावा, जोकि यहां शिक्षा का प्रमुख माध्यम है, कुछ स्कूलों में अंग्रेजी और उर्दू के माध्यम से भी शिक्षा दी जाती है।
आसाम	असमिया, बंगला, अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू। आदिम जातीय भाषाओं के माध्यम से केवल मिडिल स्कूल स्तर तक की शिक्षा दी जाती है।
बिहार	बंगला, हिंदी, उड़िया, संताली और उर्दू के माध्यम से शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध हैं।
नागालैंड	अंग्रेजी ही शिक्षा का माध्यम है।
पश्चिम बंगाल	बंगला, गुजराती, हिंदी, नेपाली, उड़िया, तेलुगु, तिब्बती और उर्दू।
केरल	कन्नड, मलयालम और तमिल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु और उर्दू ।
मद्रास	गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु और उर्दू ।
मैसूर	हिंदी, कन्नड़, मराठी, तमिल, तेलुगु और उर्दू ।
गुजरात	अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, मराठी, सिंधी और उर्दू ।
महाराष्ट्र	बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, सिंधी, मराठी, तेलुगु, तमिल और उर्दू ।
हरियाणा	हिंदी ही एकमात्र शिक्षा का माध्यम है ।
जम्मू और कश्मीर	विज्ञान और गणित विषयों में अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा लेने की सुविधाएं उपलब्ध हैं । अन्य विषयों के लिए उर्दू और हिंदी वैकल्पिक माध्यम हैं ।
पंजाब	हिंदी और पंजाबी ।
राजस्थान	हिंदी, सिंधी और उर्दू ।
अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह	हिंदी और उर्दू ।
मणिपुर	बंगला और हिंदी । मणिपुरी केवल आठवीं कक्षा तक ही शिक्षा का माध्यम है ।
त्रिपुरा	बंगला ही शिक्षा का एकमात्र माध्यम है ।
लक्कादीव, मिनिकाय और आमिनदीवी द्वीपसमूह	मलयालम और अंग्रेजी ।
पांडिचेरी	तमिल, तेलुगु, मलयालम, अंग्रेजी और फ्रेंच ।
दादरा और नगरहवेली	केवल गुजराती ।
गोआ, दमन और दीव	गुजराती, उर्दू, अंग्रेजी और मराठी ।
चंडीगढ़	पंजाबी और हिंदी ।
दिल्ली	बंगला, अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी, सिंधी, तमिल और उर्दू ।
हिमाचल प्रदेश	केवल हिंदी के माध्यम से ही शिक्षा लेने की सुविधा है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध

- पूर्वोत्तर रेलवे हिंदी समिति गोरखपुर के तत्वावधान में एक साहित्य गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें डिसइंटीग्रेटिंग इंगलिश लैंग्वेज नामक पुस्तक के लेखक श्री सच्चिदानंद शर्मा (एन0 एन0 कुकरेती) ने "अंग्रेजी भाषा-विघटन की ओर" विषय पर विद्वतापूर्ण विचार प्रस्तुत किए । श्री शर्मा ने बताया कि विश्व की भाषाओं का सर्वेक्षण करने पर विद्वान इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि अंग्रेजी भाषा का जो गौरवान्वित स्वरूप पिछले कुछ दशक पूर्व था उसमें अब निरंतर ह्रास हो रहा है । जैसे-जैसे अंग्रेजी उपनिवेश स्वतंत्र होते जाएंगे, अंग्रेजी भाषा का प्रचार-प्रसार सीमित होता जाएगा तथा विश्व की अन्यान्य भाषाएं स्वतंत्र भाषा के रूप में विकसित होंगी ।

- आगामी हिंदी दिवस अर्थात 14 सितंबर को हरिद्वार में हिंदी मंदिर के भवन का शिलान्यास किया जाएगा । इस मंदिर में महान लेखकों तथा कवियों के अलग-अलग कक्ष होंगे जिनमें उन लेखकों की कृतियां तथा उनसे संबंधित साहित्य रखा जाएगा । इससे छात्रों को लेखक-विशेष से संबंधित सारी सामग्री एक ही स्थान पर उपलब्ध हो सकेगी ।

- अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मंडल का पन्द्रहवां अधिवेशन गाजियाबाद में संपन्न हुआ । अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय संचार मंत्री डा0 राम सुभग सिंह ने कहा : ब्रज भाषा देश की अत्यंत सक्षम और व्यापक भाषा है । कश्मीर से केरल तक और गुजरात से मणिपुर तक देश का कोई भाग ऐसा नहीं है जिसकी बोली पर ब्रजभाषा और ब्रज संस्कृति का कुछ-न-कुछ प्रभाव न हो । देश की जनता को एक सूत्र में बांधने का जो काम ब्रजभाषा ने किया था वही काम अब हिंदी को करना है ।

- संत तुलसीदास के जीवन के संबंध में एक प्राचीन पांडुलिपि मिली है जिससे उनके जन्मादि के बारे में प्राचीन विवाद के समाप्त होने की संभावना है । यह पांडुलिपि कर्नल गंज (गोंडा) तुलसी समिति के अध्यक्ष श्री अवध नारायण सिंह को प्राप्त हुई है । पांडुलिपि में लिखा है कि गोस्वामी तुलसीदास के पूर्वज ग्राम बसडीहा, मझौली रियासत के अंतर्गत देवरिया जिले के रहने वाले थे । गांव में भयंकर सूखा पड़ने पर वे राजापुर आ गए थे जहां उन्हें राजपुरोहित बनाया गया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* विश्वविद्यालयों में

– हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि डा0 शिवमंगल सिंह सुमन विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के
उपकुलपति पद पर नियुक्त हुए हैं । यह पद स्वर्गीय आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी के निधन
के कारण रिक्त हुआ था । इससे पहले डा0 सुमन माधव कालेज उज्जैन के प्रिंसिपल थे ।

– मध्यप्रदेश सरकार ने रीवां में विश्वविद्यालय की स्थापना के आदेश जारी कर दिए
हैं । इस विश्वविद्यालय का नाम मुख्यमंत्री श्री गोविन्द नारायण सिंह के स्वर्गीय पिता
श्री अवधेश प्रताप सिंह के नाम पर होगा । यह राज्य का सातवां विश्वविद्यालय होगा ।

– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा एम0 फिल0 की डिग्री
देने के प्रस्ताव पर स्वीकृति दे दी है । आयोग इस कार्यक्रम पर अमल करने के लिए 59
लाख रुपये देने को तैयार है । एम0 फिल की डिग्री 14 महीने में प्राप्त की जा
सकती है । जो छात्र और अधिक अनुसंधान करने की स्थिति में नहीं हों या जो अनुसंधान
करने की तैयारी करना चाहते हों वे यह डिग्री प्राप्त कर सकते हैं ।

पृष्ठ 11 का शेषांश

द्विभाषिक प्रक्रिया की सफलता इस बात पर निर्भर होगी कि केन्द्रीय सरकार
के कर्मचारी हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान किस गति से प्राप्त करते हैं ।
क्योंकि वर्तमान कर्मचारियों में से अधिकांश को अंग्रेजी का ज्ञान पहले से ही है, आने
वाले कुछ वर्षों में ऐसे कर्मचारियों को हिंदी सिखाने के संबंध में जोर देना होगा जिन्हें
सन् 1960 के राष्ट्रपति के आदेश के अधीन निर्धारित परीक्षाएं पास करनी आवश्यक हैं ।
इस मंत्रालय की हिंदी शिक्षण योजना के अधीन चलायी जाने वाली कक्षाओं में
सम्मिलित होने के लिए ऐसे कर्मचारी भेजने के हेतु विस्तृत अनुदेश पहले से ही विद्यमान
हैं, और ऐसी आशा है कि उन अनुदेशों के अनुसार हिंदी शिक्षण के कार्यक्रम के
कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के हेतु काफ़ी उच्च स्तरीय रूप से ध्यान दिया जाएगा।

उपर्युक्त पैरा 3 और 5 में दिये गये अनुदेश, केन्द्रीय सरकार या उसके किसी
कार्यालय के स्वामित्व में संचालित या उसके द्वारा नियंत्रित निगमों या कम्पनियों पर
भी समान रूप से लागू होंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078083

* विदेशों में

लेडन विश्वविद्यालय कर्न इन्स्टीट्यूट (हालैंड) में संस्कृत के शिक्षण की व्यवस्था

यद्यपि हालैण्ड में संस्कृत की प्रथम पीठ की स्थापना 1865 में लेडन विश्वविद्यालय में ही हो गई थी, लेकिन 1925 में स्वर्गीय प्रोफेसर जे0 पीएच0 वोगल (1871-1958) के प्रोत्साहन से संस्कृत के अध्ययन के लिए विशिष्ट संस्थान की स्थापना की गई। प्रोफेसर वोगल के नाम से भारत के पुरातत्व-वेत्ताओं की पुरानी पीढ़ी भलीभांति परिचित है।

संस्कृत के अध्ययन के लिए बने इस विशिष्ट संस्थान का नाम प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री तथा संस्कृत के विद्वान हेन्ड्रिक कर्न के नाम पर रखा गया, जो संस्कृत-पीठ के 1865 से 1903 तक प्रथम प्रोफेसर रहे। इसके विकास में प्रारंभ से ही प्रो0 वोगल ने सर्वाधिक योगदान दिया, जिनकी भारतीय पुरातत्व व इतिहास में बड़ी दिलचस्पी थी। इसकी स्थापना निजी प्रयास के रूप में हुई थी। इसे गत महायुद्ध तक भारत सरकार, श्रीलंका सरकार, पूर्व नीदरलैण्ड्स, ईस्ट इंडीज, आदि कई देश, भारतीय रियासतें और कई व्यापारिक व औद्योगिक संस्थान सहायता प्रदान करते रहे। इस इंस्टीट्यूट का प्रमुख उद्देश्य उन विद्वानों को सभी प्रकार की अध्ययन-सुविधाएं प्रदान करना था, जो कुछ समय तक पुस्तकालय में बैठकर कार्य करना चाहते थे और भारतीय पुरातत्व की वार्षिक संदर्भ ग्रंथ-सूची का संपादन करना चाहते थे। इस ग्रंथसूची का प्रथम ग्रंथ 1927 में प्रकाशित हुआ। बाद में संस्था में फारसी, आर्मेनियन, हिंदी, जावानी, मलयाली और सुनदा के व्यावहारिक शिक्षण की व्यवस्था की गई।

इंस्टीट्यूट की लाइब्रेरी बड़ी महत्वपूर्ण तथा अंतर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त है, जहां संसार भर के विद्वान अध्ययन करने आते हैं। लाइब्रेरी में इस समय लगभग 19,000 ग्रंथ हैं। भारतीय कला, पुरातत्व, इतिहास आदि की पत्र-पत्रिकाएं यहां आती हैं। भारत, श्रीलंका, इण्डोनेशिया संबंधी पुरातत्व व शिल्प के बहुमूल्य संग्रह भी यहां की बहुमूल्य संपत्ति हैं। 1 जनवरी, 1961 से सब विभागों व पीठों को समन्वित करके नवीन कर्न इंस्टीट्यूट का रूप दिया गया है। अब यह संस्था निजी न रह कर लेडन विश्वविद्यालय की अधिकृत संस्था बन गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

0 नए प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक	विषय	पृष्ठ संख्या	मूल्य
	राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली-6			
~~इक्कीस पत्तियों का~~ गुलाब	~~अमृता प्रीतम~~	~~यात्रा संस्मरण~~	110	3-00
बंदूक और बीन	डा0 रांगेय राघव	उपन्यास	175	4-00
सरदार पटेल	सेठ गोविन्द दास	जीवनी	120	3-50
महादेवी के श्रेष्ठ गीत	सं0- गंगाप्रसाद पांडेय	कविता संकलन	153	7-50
उबाल	डा0 रांगेय राघव	उपन्यास	115	3-00
	हिंदी ग्रंथ रत्नाकर (प्रा0) लि0 पोस्ट बाक्स 3622, बंबई-4.			
झलकियां	निरंजननाथ आचार्य	संस्मरण	96	3-00
	क्षितिज प्रकाशन, 31-ए खत्तर गली, बम्बई-4			
सुब्रह्मण्य भारती	डा0 पी0 जयरामन	जीवनी	55	1-50
	मनोरमा प्रकाशन, टी-84 जंगपुरा लेन, नई दिल्ली-14			
बिहार का शेर	श्याम लाल मधुप	नाटक	96	2-00
बिस्मिल की कसक	,,	नाटक	80	2-00
क्रांति का नाहर	,,	नाटक	83	2-00

शोक समाचार

वेदमूर्ति पं0 श्री सातवलेकर का गत 31 जुलाई को पारडी में 101 वर्ष की अवस्था में देहांत हो गया । वे संस्कृत साहित्य विशेषत: वेदों के महान मर्मज्ञ थे। उन्होंने वेदों पर लगभग 400 पुस्तकें लिख कर वेदों के ज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाया । पद्मविभूषण श्री सातवलेकर के निधन से राष्ट्र ने एक बहुत बड़े वेद-मनीषी को खो दिया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के प्रकाशन

मानक ग्रंथ

1. अपना हृदय सबल बनाइए   ले० वी० ज़ेलेनिन   पृ० 142 मूल्य 5.00
2. सिखों का इतिहास   ले० हरीराम गुप्त   पृ० 304 मूल्य 5.00

कोश-साहित्य

1. व्यावहारिक हिंदी-अंग्रेज़ी शब्द-कोश   पृ० 324 मूल्य 4.50
2. शब्दार्थ मीमांसा – ले० रामचंद्र वर्मा   पृ० 326 मूल्य 11.50

भाषा-पत्रिका

अब तक भाषा त्रैमासिक के 24 अंक प्रकाशित हो चुके हैं।
मूल्य एक प्रति 2.00 रु० वार्षिक 7.50 रु०

भाषा के विशेषांक

1. शांति-रक्षा अंक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 148 मूल्य 4.50
2. द्विवेदी स्मृति विशेषांक : आर्ट पेपर पर, दो रंगों में : पृष्ठ संख्या 270 मूल्य 12.50
3. संकलन   पृष्ठ संख्या 580

निःशुल्क वितरण के लिए

1. समस्त भारतीय भाषाओं के लिए सामान्य राष्ट्रलिपि : परिवर्धित देवनागरी
2. मानक देवनागरी
3. Standard Devanagari Script

निदेशालय के सभी प्रकाशन अग्रिम धन भेजकर प्रबंधक, प्रकाशन शाखा, सिविल लाइंस, दिल्ली–6 और 31, थिएटर कम्युनिकेशन्स बिल्डिंग, कनॉ[illegible] नई दिल्ली से खरीदे जा सकते हैं।

प्रो० ए० चंद्रहासन, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा प्रकाशित। संपादक: परशुराम शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, मिन्टो रोड, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar